शुक्रनीति भाषा ॥

जिसमें

नीतिविषयक राजा राजमन्त्री और राजकुमारों
के मुख्य धर्मरीति प्रजापालनादि क्रम चार
अध्याय में वर्णित है ॥

जिसको

सुल्तांपुर प्रदेशांतर्गत नन्दापुरग्राम निवासि त्रिपाठि
पण्डित महेशदत्तजी ने छापेखाने नवलकिशोर लख-
नऊ की आज्ञानुसार किताबसंस्कृत मुन्शीकाली-
प्रसाद साहिब वकील से नागरी देशभाषा
इस ग्रन्थ में उल्थाकिया ॥

...लय अतीव ...नीति औरमर्यादापालनविधि जानने
...न्थोंके मतकों ... महात्माओं के अवलोकनार्थ
...और शुक्रनीति नाम दूसरीवार १५००
...प्रसाद की सम्मति से मुन्शी लखनऊ
...यन्त्रालय में उल्था कराके छापेखाने में छपी
...वाला राजा सर्वज्ञ और सुखी हो ॥

इश्तहार ॥

—o—

माहमार्च सन् १८८८ई० से मुमालिक मगरबी व शिमालीका बुकडिपो इलाहाबाद क्यूरेटर बुकडिपोसे मतबा मुंशीनवलकिशोर मुक़ाम लखनऊ मे आगयाहै इस बुकडिपो में मग़रबी व शिमाली एजूकेशनल बुकडिपो के सिवाय और भी हर एक विद्या की किताबें मौजूद हैं इन हरएक किताबों की खरीदारी की कुल शर्तें क़ीमत के सहित इस छापेखानेकी छपी हुई फ़ेहरिस्तमें दर्ज हैं जो दरख़्वास्त करनेपर हरएक चाहनेवालोंको विला क़ीमत मिल सक्ती है जिन साहबों को इन किताबों काख़रीद करना होवे इस छापेखाने से खरीद करें और फ़ेहरिस्त तलब करें ॥

भूमिका ॥

प्रकट हो कि इस ग्रन्थ के प्रथम अध्याय में नगर आदिकी प्रतिष्ठा और दूसरे अध्यायमें युवराज और उसके भृत्य आदि के लक्षण लाभ और खर्च और नौकरों आदि के आधिक की कल्पना और तीसरे अध्याय में सब लोगों का न्याय के साथ वर्त्ताव क-रना और चौथे अध्याय में सुहृद आदिके लक्षण और दण्ड कल्पना रत्न धातु गौ आदिका ज्ञान और मोल रखना प्रजा से भाग लेना कला विद्या और जातिभेद कथन और उसके धर्म्म की कल्पना ग्राम रक्षादि का कथन मूल्यादि का करना और उसका ज्ञान व्यवहार प्रदर्शन दुर्ग कल्पना सैन्य प्रकरण रथ क्रिया से उ-त्पन्न ज्ञान ऊंटकी परीक्षा मनुष्य की आयु का नाम यात्रा प्रकल्पन यंत्र का प्रपातन शस्त्र का लक्षण ये सब बातें इस ग्रन्थ में वर्णित हैं यह ग्रन्थ राजाओं के लिये अतीव उपकारक है बहुत से राजनीतियों के ग्रन्थोंके मतको देखके शुक्रजी ने इस ग्रन्थको बनाया और शुक्रनीति नाम रक्खा वही श्रीयुत मुंशी काली प्रसाद की सम्मति से मुन्शी नवलकिशोर जीने निज यन्त्रालय में उल्था कराके छपवाया इसका जानने वाला राजा सर्वज्ञ और सुखी होताहै शुभम् ॥

अनुक्रमणिका ॥

पूर्व्व कहे हुये शुक्रनीति में राजाओं के सम्पूर्ण कार्य्य और भूमिका सामान्य प्रमाण कहते हैं १ नगरी आदि की प्रतिष्ठा और गृह आदिके करने की रीति यह सब प्रथम अध्याय में कहेहैं अब आगे के अध्यायोंमें जो है वहकहते हैं २ युवराजकी प्रकृतिआदि का लक्षण और कृत्य लाभ और खर्चऔर सेवकोंकी मजदूरी की कल्पना ३ तीसरे अध्यायमें सम्पूर्ण संसार का न्याय के साथ वर्त्ताव और चौथे अध्यायमें मित्र आदिका लक्षण और दण्ड कल्पना ४ रत्न धातु गऊ आदिका ज्ञान और उनके मोलकी कल्पना और प्रजा से भाग लेना और कला विद्या प्रभेद ५ जातिभेद कथन और उनके धर्म्मकी कल्पना ग्राम रक्षा आदिका कथन और राजमन्दिर आदिकाबनाना ६ मूर्ति आदि का करना और ज्ञान और उसके व्यवहारका देखना और किला और सैन्य का रखना ७ रथ की क्रिया और गजका ज्ञान ऊंट की परीक्षा मनुष्य आदि के आयुका प्रमाण यात्रा प्रकल्पना ८ यन्त्र का लक्षण उसी तरह अग्निके चूर्णका साधन यन्त्र प्रपातन और शस्त्र लक्षण ९ छः गुणों का लक्षण सेना से कवायद लेना और कपट करने वालों के कपट जानना और उनके वेद और गुणकी संख्या १० ॥

शुक्रनीतिभाषा ॥

पहिला अध्याय ॥

सृष्टि स्थिति नाशके कारण जगत के आधारको प्रणाम और पूजनकर वन्दित पण्डित भार्गवसे पूछा १ पूर्वही देवताओं ने यथा न्याय जो कहाहै उसी नीति को सार भार्गवजी ने कहाहै और शत लक्ष श्लोक मित नीतिशास्त्र कहा है २ स्वायम्भू ब्रह्मा जी ने लोक के हितके अर्थ संग्रह किया उसी का सारांश लेकर वशिष्ठ आदि ऋषि और हम लोगों ने वृद्धिके अर्थ ३ अल्पायु राजाओं के अर्थ तर्क विस्तृत इस शास्त्रका संक्षेपकिया और अन्य शास्त्र कियाके एक देश के बोधक हैं ४ यह नीति शास्त्र सर्व्वोपजीवक लोक स्थिति करने वाला धर्म्म काम का मूल और मोक्ष का देने वाला है ५ इसी कारण राजा सदा नीति शास्त्र का यत्न पूर्व्वक अभ्यास करैं जिसके जानने से राजालोग शत्रुका जीतने वाला और लोक

का हितकारी होता है ६ हे राजन् सुनीति निपुणहो जिस तरह शब्दार्थकाज्ञान व्याकरण बिना नहीं उसी तरह बिना नीति का राजा उत्तम नहीं होता ७ प्राकृत पदार्थों का ज्ञान न्याय और तर्क शास्त्र बिना नहीं होता और बिधिक्रिया व्यवस्था मीमांसा बिना नहीं होता ८ सम्पूर्ण देह आदि नाशवान् हैं यहज्ञान वेदान्त बिना नहीं होता और [illegible] सब शास्त्र अपने २ अभिमत के बोधक शास्त्र हैं ६ उन शास्त्रों के मतानुयायी मनुष्यों करके वह शास्त्र ग्राह्य हैं और उन शास्त्रों से व्यवहार वालों की बुद्धि निपुणता नहीं होती १० जिस तरह शरीर वाले जीवकी वृद्धि अन्न बिना नहीं होती उसी तरह सम्पूर्ण लोक व्यवहार की स्थिति नीतिशास्त्र बिना नहीं होती ११ यह नीतिशास्त्र सर्वाभीष्टकर और सर्व सम्मत है यह नीतिशास्त्र राजा को आवश्यक है क्यों कि राजा सबका स्वामी है १२ नीति हीनके शत्रु ऐसे हैं जैसे अपथ्य करने वाले के रोग इनमें पहिला शत्रु शीघ्र और दूसरा काल पाके होता है १३ प्रजा का पालन राजा का परम धर्म्म है और दुष्टों का निग्रह सदा करणीय है और नीति बिना ये दोनों नहीं होते १४ अनीति राजाका संछिद्र और भयका देनेवाला शत्रुका बढ़ानेवाला और बल हासकर है १५ नीतिको छोड़ के स्वतंत्र हो रहता है वह दुःख पाता है और उसकी सेवा असि धारके चाटने के सदृश है १६ नीतिमान

राजा सुखसे आराध्यहै और अनीतिमान दुःखसे आराधना करने के योग्य होता है और जहां नीति और सैन्य दोनों होती हैं वहां चारों तरफ से लक्ष्मी आतीहै १७ जिस तरह सम्पूर्ण देश बिना कहे हित करनेवाला हो उसीतरह अपने हितके लिये राजा नीति को धारण करे १८ जिस राजा के देश, सैन्य मन्त्री आदि भिन्न २ हों वह अनीति राजा की निंदा होता है १९ राजा तप से तेज पाता और शिक्षक पालक प्रीति कराने वाला होता और राजा ब्राह्मण कर्म्म और तपस्या से पृथ्वी का पालक होता है २० वर्ण प्रीत चक्री नक्षत्र गति रूप स्वभावसे इष्ट अनिष्ट अधिक न्यून आचार से काल भेद है २१ आचारका प्रेरक राजा होता है यह काल का लक्षण है और जो कालही प्रमाण है तो कर्त्ता धर्म्म भागी कैसे हुआ २२ राजदण्ड भय से लोक अपने २ धर्म्म में तत्पर होता है और जो धर्म्म पर होता वह तेजस्वी होता है २३ स्वधर्म्म बिना सुख नहीं होता स्वधर्म्म परम तपहै जिसने स्वधर्म्म रूप तपको बढ़ाया है २४ उसके देवता किंकर होते हैं मनुष्यों की क्या गिनती है सुदण्ड करके धर्म्म निरत राजा महा भय देखा के धर्म्म करावै २५ राजा अभिषेक किया हो या बिना अभिषेक किया हो और राजत्व को प्राप्त हो तो धर्म्म पूर्वक राज्यकरे अन्यथा तेजहानि होतीहै २६ बुद्धि बल शूरता नीति पूर्वक प्रति दिन अखिल दण्ड

धर्म्म प्रजा पालन करै २७ नित्य बुद्धिमान् के अर्थ थोड़े भी वृद्धि को प्राप्त होतेहैं और शूरता नीतिबल धन से देढ़े भी बश में आजाते हैं २८ सात्विक तामस राजस तीनप्रकार के तप हैं जिसतरह का तप करता है वैसा राजा होता है २९ स्वधर्म्म रत प्रजा का पालक सम्पूर्ण यज्ञों का करने वाला राजा शत्रुगणका नेता होता है ३० दानी सहन शील विषयोंसे निस्पृह विरक्त सात्विक राजा अन्त अवस्थामें मोक्षको पाता है ३१ सात्विक से विपरीत तामस राजा नरकगामी होता निर्ल्लज्ज मदोन्मत्त सत्य वर्ज्जित घातक होता है ३२ राजस राजा दम्भी लोभी विषयी शठ होता मनमें और बचन में और कर्म्म से और कलहप्रिय होता है ३३ नीच प्रिय स्वतंत्र नीति हीन अस्वस्थ नृपाधम अन्त में पशु या स्थावर योनिको प्राप्त होता है ३४ सात्विक राजा देवांशको भोगता तामस राजा राक्षसांश को राजस राजा मनुष्यांश को भोगता है इस्से सत्त्व में मन देना चाहिये ३५ सत्त्व और तमगुण की समता से मनुष्य का जन्म होता है क्योंकि मनुष्य जिसका २ आश्रय करता है भाग्य से उसी के तुल्य होता है ३६ सुगति और दुर्गति में कर्म्मही कारण है और कर्म्म प्राक्तन भी हैं कोई क्षणमात्र भी बिना कर्म्म नहीं रहता ३७ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र म्लेच्छ इनमें जाति से भेद नहीं है गुण और कर्म्म से भेद है ३८ क्या ब्रह्मा से उत्पन्न सम्पूर्ण मनुष्य ब्राह्मण

होते हैं क्योंकि वर्गा और पितासे ब्रह्मतेज नहीं प्राप्त होता है ३९ ज्ञान, कर्म, उपासना से देवताराधनमें रत शान्त दान्त दयालु इन गुणों से ब्राह्मण होता है ४० लोक संरक्षण में रत शूर इन्द्रियजित पराक्रमी दुष्टों का दबानेवाला क्षत्रिय कहाता है ४१ खरीदने बेचने में चतुर नित्यही व्यापार से जीविका करनेवाला पशु रक्षा और खेती करनेवाला वैश्य कहाता है ४२ द्विजसेवा पूजनमें रत शूर शान्त जितेन्द्रिय हल काष्ठ तृणका उठानेवाला नीच शूद्र कहाताहै ४३ स्वधर्म्मा-चरण का त्यागी निर्लज्ज परपीड़क लोभी हिंसक अविवेकी म्लेच्छ कहाताहै ४४ पूर्व्व जन्मके कर्म्म के फल के भोग के योग्य जब बुद्धि होती है तो पाप अथवा पुण्य कर्म्म वह बुद्धि प्रवृत्त होती है अन्यथा नहीं ४५ जैसे कर्म्म फलकी उदय होती वैसेही बुद्धि उत्पन्न होती है और जैसी भवितव्यता होती है उसी तरह सहायक मिलते हैं ४६ पूर्व्व कर्म्म वश से सब होता है यही निश्चय है तो कार्य्य अकार्य्य के बो-धक सब उपदेश व्यर्थ हैं ४७ जन्य बुद्धिमान् चरित पौरुषको बड़ा मानतेहैं पौरुष करने में अशक्त लोग भाग्य को मानते हैं ४८ दैव और पुरुषकार में सब प्रतिष्ठित हैं पूर्व्व जन्म कृत और इससंसारका इकट्ठा किया सब दो तरह का है ४९ बलवान् सदा दुर्व्बल का प्रतिकारी होता है सबल और अबल का ज्ञान फल प्राप्ति से होताहै अन्यथा नहीं होता ५०फलकी

प्राप्ति प्रत्यक्ष हेतु से नहीं देख पड़ती वह पूर्व्व कर्म्म हेतु की अन्यथा नहीं यह निश्चय है ५१ जो थोड़ी क्रिया से बड़ा फल प्राप्त होता है वह भी पूर्व्व जन्म के कर्म्म से होता और कोई कहते हैं कि पूर्व्व कर्म्म और इस जन्म के कर्म्म से होता है ५२ कोई कहते हैं कि इस लोक की क्रिया से मनुष्यों का पौरुष सिद्ध होता है क्योंकि तेल सहित बत्ती से युत दीपकी रक्षा बायु से यत्न पूर्व्वक होती है ५३ अवश्य भावि भावका जो प्रतीकार न होता तो बुद्धि बल के सदृश दुष्टोंका क्षपण अर्थात् नाश उत्तम होता है ५४ इस्से प्रतिकूल और अनुकूल फलों करके ईषत मध्य अधिक तीन प्रकार से दैवकी चिन्तना करै ५५ रावण और भीष्म के वनभंग और गो गृहमें एक बानर या नर से प्रतिकूलता विदित होती है ५६ कालकी अनुकूलता श्री रामचन्द्र और अर्ज्जुन से स्पष्ट है और जो भाग्य अनुकूल होता है तो सब कर्त्तव्यता थोड़े श्रम से सफल होती है ५७ और जो भाग्य प्रतिकूल होता है तो बड़ी भी सत्क्रिया अनिष्ट फल देनेवाली होती है जैसे दान से बलि और हरिश्चन्द्र बांधे गये ५८ सत्क्रिया से इष्टफल मिलता और असत्क्रिया से अनिष्ट फल मिलता है शास्त्र से सत असत को जानके असत को छोड़ सत्कर्म्म करै ५९ काल और सत और असत्कर्म का कारण राजा है वह अपनी क्रूरता और उग्रदण्ड से प्रजा को अपने धर्म्म में स्थापित करै ६० स्वामी १

मन्त्री २ सुहृद ३ कोश ४ देश ५ दुर्ग ६ सैन्य ७ राज्यमें सात अंगहैं और सबसे प्यारा राजाहै ६१ अमात्य दृष्टि सुहृत कानकोश मुख सैन्यमन हाथ और चरण किला और देश ये राज्यकेअंगहैं ६२ ऐश्वर्य के देने वाले अंगोंकेगुण क्रमसे कहतेहैं कि जिन गुणों सेयुक्त राजा वृद्धिमान होतेहैं ६३ जिसतरह चन्द्रमासे समुद्र को आनन्द होताहै उसी तरह वृद्धसम्मत राजा राज्य की वृद्धिके लिये हेतु है ६४ जो राजा अच्छीतरह प्रेरक न हो तो जिसतरह बिना मलाहकी नाव नष्ट होती उसीतरह बिनाराजाके प्रजा नष्टहोजातीहै ६५ बिनाराजा के प्रजा अपने २ धर्म्ममेंनहींरहसक्ती और प्रजाके बिनापृथ्वीमें राजानहीं शोभादेता ६६ न्याय में प्रवृत्त राजा अपनेको और प्रजाको त्रिवर्गसे धारण करै अन्यथा निश्चय करके नाशको प्राप्तहोताहै ६७ धर्म्मराज यवनभोगी राजाधर्म्मसे पृथ्वीतलको प्राप्त हुये और अधर्म्मसे राजानहुष रसातलको प्राप्त हुये ६८ राजावेणु अधर्म्मसे नष्टहुये और राजापृथुधर्म्म से वृद्धिको प्राप्तहुये इसीसे धर्म्मको आगे करके राजा यत्नकरै ६९ जो धर्म्मपर राजा देवांश या राक्षसांश को अपना अंशकरै और धर्म्म लोपक हो वह प्रजा पीड़ाकर होताहै ७० इन्द्र वायु यम सूर्य्य अग्नि वरुण चन्द्र कुबेर इनके शाश्वत अंशसे ७१ और जंगम स्थावरके अंश और अपने तपसे राजा उत्पन्नहोताहै भाग भागी रक्षामें दक्षजैसे इन्द्र उसीतरह राजाहोता

है ७२ जिसतरह गन्धका प्रेरक वायु है उसीतरह सत् असत्कर्म्मका प्रेरकधर्म्म प्रवर्त्तक राजाहै जिसतरह प्रकाशक और तमनाशक रविहै ७३ दुष्टकर्म्मियों को यमकीतरह राजा दण्डदे जिसतरह अग्नि पवित्रहै उसीतरह राजापवित्रहै और रक्षाकेलिये सबका भागले ७४ वरुण जलसे सबको पुष्टकरते और राजा अपनेधनसे पुष्टकरता और चन्द्रमा किरणोंसे सबको पुष्टकरते और राजा अपनेगुणकर्म्मसे सब प्रजाको पुष्टकरता है ७५ जिसतरह निधियोंकी रक्षामें कुबेर प्रवृत्तरहते हैं उसीतरह कोशकी रक्षा में राजा प्रवृत्त रहै और चन्द्रांशबिना अन्य सब गुणों से राजा शोभित नहींहोता ७६ पिता माता गुरु भाई बन्धु कुबेर यम सदाराजा इन सातोंके गुणोंसे युक्तहो ७७ राजा प्रजाके गुणसिखलानेमें सदापिता की तरहरहे और अपराधोंके क्षमाकरनेमें पुष्टताको चाहनेवाली माताकी भांतिहो ७८ जिसतरह शिष्यकाहित उपदेश कर्त्ता सुविद्याका पढानेवाला राजाहो और शास्त्रके सदृश पिता के धनसे जैसे भाई भागलेता है उसीतरह राजा प्रजासेभागले ७९ आत्मा स्त्री धन गुह्यवार्त्ताका रक्षक बन्धु मित्रकीतरह धनदेनेसे कुबेर और दण्डदेने से यमके सदृशहो ८० बढनेवाले राजामेंयेगुणबसतेहैं इनसात गुणोंको कभी न छोड़े ८१ जो समर्थहोके अपराधोंकी क्षमानहीं करतावही दण्डकरने के भी योग्य होताहै क्षमारहित राजा सम्पूर्ण सद्गुणोंसे

युक्त भी नहीं शोभित होता ८२ अपने दुर्गुणोंको छोड़
के अतिवादको सहै और दानमान सत्कार से प्रजा को
सदा प्रसन्नरक्खै ८३ दान्तशूर शास्त्र अस्त्रमें निपुण शत्रु
नाशक अस्वतन्त्र बुद्धिमान् ज्ञान विज्ञान संयुक्त ८४
नीचहीन दीर्घदर्शी वृद्धसेवी सुनीतियुत गुणोंसे यु
क्त ऐसा राजा देवतांश कहलाताहै ८५ इससे विपरीत
रक्षांश भी नरकपात्र होताहै और नृपांशके संपूर्ण उस
के सहायक भी होतेहैं ८६ राजा तत्कृत को मानता
तुष्ट होता और उनके आचरणसे आनन्दित होताहै दैव
बलसे अन्यथा नहीं होता ८७ मनुष्यकृत कर्म्मफलको
अवश्य भोगताहै प्रतिकार बिना नहीं होता और प्र
तिकार करनेसे ८८ जिसतरह दवा कियाहुआ रोग
भोग करता होताहै उसीतरह कृतकर्म्म अवश्य भोगना
पड़ताहै दुःखहेतुके जाननेसे उसके होनेमें कौन यत्न
करता है ८९ सत्फल में सबका चित्त लगता है और
दुष्फलमें किसी का चित्त नहीं लगता सत् असत् के
बोधक शास्त्रको देखकेकर्म्मकरै ९० नीतिकामलविल
यहै वह विनयशास्त्र निश्चयहोताहै विनयसे इन्द्रियों
को जीतता विनययुक्त शास्त्रको पाताहै ९१ राजा प्रथ
म आप विनययुक्त हो तत्पश्चात् पुत्रजनौं भृत्यको तद
नन्तर प्रजाको नम्रतासे युक्तकरै ९२ राजा केवल परोप
देश कुशल नहो ऐसा होनेसे सगुणभी राजा राज्याधि
कारसे च्युत होजाहै ९३ जिसप्रकार इन्द्र बिना इन्द्राणी
विधवा नहीं होती उसीतरह दुर्गुणभी प्रजा बिना राजा

के कभी नहींहोती ९४ राज्य भ्रष्ट राजाही होता है मंत्री बंधु पुत्रआदिराज्य भ्रष्टनहीं होते ९५ सदाप्रधान आदिमें अनुरक्त प्रजापालनमें तत्पर नम्रस्वभाव राजा बड़ी लक्ष्मीकोपाताहै ९६ गहन विषयवनमें धावतेसब दुर्द्धरइन्द्रिय रूपहाथीको ज्ञानांकुश से बशमेंकरै ९७ विषयरूप मांसके लोभ से मन इन्द्रियों की प्रेरणा करता है उनको यत्नसे रोंक के जितेन्द्रिय होता है ९८ जो राजा एकमनके रोकनेमें समर्त्थहोताहै वह सागर पर्य्यन्त पृथ्वीका जीतनेवाला कैसेहोसक्ताहै ९९ क्रियावसान विरस अपहारी विषयोंसेआसिक्त हृदय राजा हाथीकी तरह बन्धनको पाताहै १००शब्द स्पर्शरूप रस गन्ध इनमें एक२ विनाश के लियेहैं १०१ पवित्र दर्भांकुराहार दूरभ्रमणमें समर्त्थ मृगलुब्धक गायेगीत के मोहसे मृगबधको ढूंढता है १०२ पर्व्वता कार महलमें वृक्षका तोड़नेवाला हाथी हस्तनीके स्पर्शके मोहसे बन्धनको प्राप्तहोताहै १०३ कोमलदीप की शिखाके देखनेसे चंचलनेत्र मोहपूर्व्वक शीघ्रतासे पतित पतंग मृत्युको प्राप्तहोताहै १०४ अगाध जलमें स अन्दर रहनेवाला मत्स्य मृत्युकोलिये मांस सहित लोहको खाताहै १०५ छेदन करनेमें समर्त्थ और उड़नेमें सपक्ष भ्रमर गन्धके लोभसे कमलमें बन्धनको प्राप्त होताहै १०६ विषसदृश विषय एकएक नाशकरतीहैं और जो पांचों मिलतीहैं तो क्यों ननाशकरैं १०७ जुआ स्त्री मदिरा ये तीनों अनर्थके करनेवालेहैं अयु-

के युक्ति युक्त हो अनपुन बुद्धिप्रद हैं १०८ राजानल और युधिष्ठिर जुआमें नाशको प्राप्तहुये कपट सहित जुआ उसके जाननेवालों को धनके लियेहै १०९ स्त्रियोंका नामभी आनन्ददहै मनको विकार युक्तकरता है और उनके विलाससे उल्लसितमोह स्त्रियोंके दर्शन में क्याकहैं ११० एकान्तके कार्य में निपुण कोमल और गद्गद भाषिणी कुलान्त लोचना नारी किसको वशनहीं करती १११ स्त्री मुनियोंके मनकोभी अवश्य वश्यकरती है जितेन्द्रिय और अजितात्माओं की क्या बातहै ११२ परस्त्री की इच्छा करतेहुये इन्द्रदण्डकी नहुषरावण आदि बहुतसे नाशको प्राप्तहुये ११३ जो तत्पर न रहो उसको स्त्रीसदा सुखदेतीहै गृहकेकार्यमें सहायिनीस्त्रीकोछोड़ औरकोईनहींहै ११४ बहुतमदिरापीनेवालेकी बुद्धि लोपहोतीहै और थोड़ापीनेमें प्रतिभा वृद्धिवैशद्यधैर्य चित्तवि निश्चय होताहै ११५ थोड़ापीनेसे मदिरा उत्तमहै बहुतपीनेसे विनाशहोताहै अधिक मदिरा काम क्रोध मद्यतमको यथोचितहोतेहैं ११६ जयार्थीराजा प्रजापालन में कामऔर शत्रुके दबानेमें क्रोध और सेनाके संधारणमें लोभकोयोजनाकरै ११७ परस्त्री संगममें काम और अन्यधनमें लोभ और स्वप्रजाके दण्डदेनेमें क्रोधको राजा वारणकरै ११८ परस्त्री संगमसे मनुष्य कुटुम्बी नहीं होता और प्रजाके दण्डसे शूरनहींहोता और अन्यके धन से धनीनहीं होताहै ११९ अरसिता राजा और अतप

स्त्री ब्राह्मण अदाता धनीको देवता मारते और नीचे गिरादेते हैं १२० स्वामित्व दातृत्व धनिकत्व ये तपके फलहैं और याचना दास्यत्व दरिद्रता पापकेफलहैं१२१ बहुतशास्त्रोंको देखके यथोचित आत्माको नियमकर के परलोक और इसलोकके सुखकेलिये स्वप्रवृत्ताको रै१२२ दुष्टनिग्रहण दान प्रजापालन राजसूय आदिका यजन न्यायसे कोशका इकट्ठाकरना १२३ भूपोंसेकर लेना शत्रुका मर्दन भूमिका उपार्ज्जनये ८ प्रकार के राजवृत्तहैं १२४ जिसराजाने बलको नहींबढ़ाया और राजोंसे जिसनेकर नहींलिया और जिसने प्रजाकोनहीं बढ़ायाहै वह षंढ तिलराजाहै १२५ जिससेप्रजा उद्वेग करै और जिसके कर्म्मकी प्रजानिन्दाकरै और धनी और गुणी जिसकात्यागकरैं वह नृपाधमहै १२६ नट गायक वेश्या मल्लहीजड़ा छोटीजातिमें जोबहुत शक्त होता वहराजा शत्रु मुखमें स्थितरहताहै १२७ जोराजा बुद्धिमान् से द्वेषकरता है और वंचकोंके साथ आनन्दित होता और अपने दुर्गुण को नहींजानता वह राजा अपना नाशकरताहै १२८ जो राजा दूसरेके अपराधको क्षमानकरै और क्रूरदण्डमेंवनरहै और अपने दुर्गुणके सुननेमें लोकको पीड़ादे१२९कभी२राजा जिससे लोक सुख और भिन्नहो और गूढ़चारोंके द्वारा सुनाके यहजाने कि कौन निन्दाकरताहै १३० उसके जाननेवाले मन्त्रीआदि किसभावसे भयित करते और मुझमें कैसीप्रीति रखतेहैं और कौन अप्रीति करते

है २३१ में गुण या अगुणसे प्रजा अप्रसन्न है इस तरह हलकारोंसे राजा सदा अपने अगुणको जाने २३२ हे राजन् लोक आपकी निन्दा करते हैं यह चारों से सुनके सुकीर्त्ति के लिये त्याग करै और प्रजाका अपमान न करै २३३ आत्म दुर्गुण लोपक अपनी दुरात्मा से कोप करताहै उत्तम भी सीताको लोकापवाद से रामचन्द्र जीने त्यागकिया २३४ समर्थ रजक को थोड़ा भी दण्ड न दे और ज्ञान विज्ञान सम्पन्न और राजदत्ताभय को भी कभी दण्ड न दे २३५ राजा को बड़ा भी दूषण हो तो भी कोई नहीं कहता क्योंकि विष्णु आदि देवता स्तुति प्रिय होते हैं २३६ और मनुष्यकी क्या गणना है इसी से निन्दा से क्रोध होता है राजा सुभाग्यको शुभ दण्ड दे सुसभी और प्रीति करानेवालाहो २३७ यौवन जीवित चित्तछाया लक्ष्मी स्वामिता ये छः चंचल हैं इससे धर्म्म रत होना चाहिये २३८ इनसे अन्यगुणोंसे सर्वश प्रजा प्रीतियुक्ताहोती हैं इनमें से एकभी दुष्कीर्ति को करता है और सब मिले हुये दुष्कीर्ति को क्यों न करैं २४० शिकार जुआ मद्यपान यह राजा को निन्दित है इनसे पाण्डु नैषध वृष्णि वंशमें विपत्ति देखी है २४१ काम क्रोध मोह लोभ मान मद इस षट्वर्ग को त्याग करै इन के त्याग से राजा सुखी होता है २४२ दण्डक्य राजा काम से और जनमेजय क्रोध से लोभ से राजर्षि ऐल और मोहसे वातापी असुर २४३ मान से रावण मदसे

दम्भोद्भव नृप शत्रु षट्वर्ग के आश्रित होके ये छः मृत्यु को प्राप्त हुये १४४ शत्रु षट्वर्गका त्यागकरके परशुराम और राजा अम्बरीषने बहुत दिनतक पृथ्वी का भोग किया १४५ सज्जनों करके आदर से सेवित धर्म्म अर्थ को बढ़ाता हुआ इन्द्रियों का दमन कर गुरु सेवा करै १४६ शास्त्र के लिये गुरु संयोग और विनय वृद्धि के लिये शास्त्र और विद्या से नम्र राजा सज्जनों का सम्मत होताहै १४७ ऐसा राजा असद्वृत्तों से प्रेरित अकार्य में नहीं प्रवृत्त होता श्रुतिस्मृति लोक मनसे उत्तम कार्य का निश्चय करलेना है १४८ पंडित धर्म्म कर्म्म संज्ञक कार्य की व्यवस्था करताहै और परिडत राजा आदान प्रतिदान की कला को अच्छी भांति जानता है १४९ जितेन्द्रिय और नीतिज्ञ राजा की लक्ष्मी प्रफुल्लित होती और कीर्ति आकाश तक पहुंचती है १५० आन्वीक्षिकी त्रयी वार्त्ता दण्डनीति इन चार विद्याओं को सदा राजा अभ्यास करै १५१ आन्वीक्षिकी में तर्क और वेदान्त आदि प्रतिष्ठित हैं और त्रयी विद्या में धर्म्म अधर्म्म काम अकाम प्रति-ष्ठित हैं १५२ वार्त्ता में अर्थानर्थ और दण्डनीति अनीति हैं वर्ण और सम्पूर्ण आश्रम सम्पूर्ण अपनी विद्यामें प्रतिष्ठित हों १५३ अंग चारों वेद मीमांसा न्याय धर्म्म शास्त्र पुराण यह सब त्रयी कहलाते हैं १५४ व्याज लेना खेती वाणिज्य गोरक्षा वार्त्तासेहैं वार्त्ता सम्पन्न साधु वृत्तिभयको नहींप्राप्त होताहै १५५

इमदराड कहलाता इसीसे भूपतिदराड कहाताहै उसको नीतिदराड नीतिकहाती और नयनसे नीति कहीजाती है १५६ आन्वीक्षिकी विद्या आत्मविज्ञानसे हर्ष शोक को दूरकरतीहै त्रयीविद्यामें यथा विधिस्थित लोक परलोक दोनोंको प्राप्तहोताहै १५७ सम्पूर्ण जीवधा-रियोंका अहिंसा परमधर्म्महै इससेराजा अहिंसापूर्व्व-क दीनजनोंकी रक्षाकरै १५८ अपने सुखको इच्छाक रताहुआ दीनजनको पीड़ान दे दीनपीड़ितहोके अपनी मृत्युसे पार्थिवको मारताहै १५९ सुजनोंके संग सज्जन को सुखी और धर्म्मात्मा करता है सुजनोंसे सेव्यमान राजा बहुत शोभित होताहै १६० चन्द्रमा का किरण प्रफुल्लित कमलयुत सर जैसे सुजनकी चेष्टा आनन्द देतीहै उसीतरह वे चित्त को आनन्दित करतेहैं १६१ ग्रीष्मके सूर्य्यकी भांति सन्तप्त उद्वेग करानेवाला अ-नाश्रय निर्जल देशकी भांति उग्र दुर्ज्जनके संग का त्यागकरै १६२ जिसके प्रवास से अग्नि निकलती हो उसके धूमसे धूम्रवर्णहै मुख जिसका ऐसेका संगदुर्ज्जन संगसे उत्तमहै १६३ जिसतरह पूजनीय सुजनोंके लिये अंजलिबांधी जातीहै उसीतरह अपने हितका चाहने वाला दुर्ज्जनोंको बहुत हाथजोड़े १६४ सुजन नित्य मनोहर वचनोंसे जगतको प्रसन्नकरतेहैं दुर्ज्जन क्रूर वाक कुबेरके सदृशभी होतो प्राणियों को उद्विग्न करताहै १६५ जैसे हृदयमें विद्ध मनुष्य सदा तप्त होताहै उसीतरह पीड़ित भी बुद्धिमान् मनुष्य खोटे वचनको

नहींकहता १६६ सज्जन और मनुष्यसदाजनप्रिय और
कीतरह मीठे वचन को बोले १६७ जैसे विपश्चितके
वचकास्वीकारकरै उसतरह सदैवही हंस कोकिल मुर्गे
लाके वचनका ग्रहण न करै १६८ जो मनुष्य सदाप्रिय
बोलताहै और सुजनोंका प्रिय चाहताहै वह श्रीमान्
वन्द्य चरित नररूप धरे देवताहै १६९ दया, मयत्री, दान
मीठे वचन इनके समान वशीकरण तीनों लोकमें
और नहींहै १७० वैदिक सद्भावसे पतात्मा देवपूजक
हो और देवताके तुल्य गुरुजन और अपने सदृश सु
हृदोंको जानना १७१ गुरुजनोंको प्रणामसे और सुजनों
को गौरवसे और सुकृत कर्म अपने ऐश्वर्य के लिये
देवोंको सन्मुखकरै १७२ सद्भावसे मित्र और बान्धवों
को और स्त्री और सेवक प्रेम मानसे और चतुरतासे
इतर जनोंको वशमें लेआवै १७३ बलवान् बुद्धिमान्
शूर यथायोग्य पराक्रमी भूपति वित्त पूर्ण पृथ्वीका
भोगकरता और राजा होताहै १७४ पराक्रम बल बुद्धि
शूरता इन श्रेष्ठगुणों से हीन और अन्य गुणोंसे युक्त
होतो राजा और धनीहो १७५ शीघ्रतासे थोडे जीवों
का भी राजानहीं होता और राज्यका नाशहोताहै
और महाधनसे छोटाराजा बड़ा विदित होताहै १७६
इन्हीं गुणों से अव्याहतास और तेजस्वी होताहै अन्य
साधारण राजाभू प्रसाधन मे समर्थ नहीं होते १७७
देव दैत्य विनाशिका यह भूमि सब धनकी खानिहै
भूमिकेअर्थ सबभूमि पति अपनाश करतेहैं१७८ जिस

धनसे जीवितकी रक्षाहोतीहै वहधन उपभोगके लिये है और जिसने भूमिकी रक्षा न की उसके धनजीवितसे क्याहै १७९ संचितधन यथेष्ट व्ययकेलिये नहीं होता सदा प्राप्तिबिना कुबेरका भी धन नष्टहोताहै १८० इन गुणोंसे राजा पूज्यहोताहै राजकुलका राजानहींहोता जिसतरह बल शौर्य पराक्रमसे राजा पूज्यहोताहै उस तरह कुलवारके नहीं पूजितहोता १८१ जिस राजाके राज्यते प्रजा पीडन प्रति वर्ष एकलाख रुपया मिलै १८२ वहराजा जबतक तीनलाख न हो सामन्तकहाता है उसके ऊपर दशलाखतक होतो माण्डलिक कहाताहै १८३ उसके ऊपरबीसलाख तक राजा कहाता है और पचास लक्ष तक रुपयाहोनेसे महाराजहोता है१८४ और एक करोड वर्ष को आमदनी होने से स्वराट और सम्राट कहाता है और दश करोडकी आमदनी होतो विराट कहाताहै १८५ उसके बाद पचास करोड़की आमदनी वर्षदिनमें होतो सार्व्वभौम कहाता और सप्तद्वीपा पृथ्वी उसके वशमें होती है १८६ सामन्तमें स्वभागभृत्य प्रजाके नृपको ब्रह्माने स्वामीकारूप सदापालनके लिये कियाहै १८७ सामन्तादि सब पृथ्वीमें जिन भृत्योंको अधिकार दिया जाय वहभी सामन्त संज्ञा को पाके क्रमसे राज भागहर होतेहैं १८८ और सामन्तादि पद भ्रष्ट और अपने सदृश वेतन पानेवालेहैं वह महाराजोंसे छोटे होतेहैं १८९ सौग्रामका स्वामीभी सामन्त कहाताहै और सौ

ग्राम में राजा जिसको अधिकार दे वह अनुसामन्त कहाता है १९० और दशगांवमें राजा जिसको अधिकार दे वह नायक कहाता है दश हजार ग्राम का स्वामी दिशीश या भागभाक् अथवा स्वराट् कहाता है १९१ कोस भरकाहजार रुपयेकीआमदनीका ग्राम कहाता है और ग्रामार्द्ध पल्ली और पल्ली का आधा कुम्भ कहाता है १९२ प्रजापतिका कोस पांच हजार हाथ का होता है और मनुजी का कोस चारहजार हाथ का होता है १९३ ब्रह्माके कोस का क्षेत्र ढाई करोड़ हाथ का होता और पचीस सौ निवर्त्त न से क्षेत्र होता है १९४ बीच की अंगुली के बीच के पर्व्वकी दीर्घता अंगुल होता और आठ यवोदर के सदृश दीर्घ और पांच यवोदर के सदृश मुटाई होती है १९५ चौबीस अंगुल का प्रजापति का एक हाथ होता है वही भूमि मानमें श्रेष्ठहै अन्य अधम है १९६ चारहाथका लघुदण्ड और पांच हाथका मोटादण्ड होता है उसका मान पांच यवका होता है वहीमनु-का मानहै १९७ सात सौ अड़सठ यवसे प्रजापति का दण्ड होता है और छ: सौ यवोदर से मनुजीका दण्ड कहा है १९८ पचीस दण्डोंसे दोनोंका निवर्त्त नहोता है तीन हजार अंगुल और तीन हजार अथवा पांच हजार यवसे १९९ अथवा सवासै हाथ से मनुजी का निवर्त्त न होता है अथवा उन्नीस हजार दोसौयवो-दर से होता है २०० चौबीस सौ अंगुलों से निवर्त्त न

होता और प्रजापतिका निवर्त्तन सदा सौ हाथ का
होता है २०१ दोनों के निवर्त्तन में सवा छःसौ दण्ड
होतेहैं और सदादोनोंका विनिवर्त्तन पच्चीस होता-
है २०२और पचहत्तर हजार अंगुलों से मनुका परि-
वर्त्तन होता है और साठ हजार अंगुल से प्रजापति
का मान होता है २०३ और तीन हजार सवासौहाथ
का मनुका परिवर्त्तन होता और पचीस हाथ का
प्रजापतिका २०४ और पौने चार लक्ष यवसे मनुका
परिवर्त्तन और चार लाख अस्सी यवसे प्रजापतिका
परिवर्त्तन २०५ मनुके मानसे बत्तीस निवर्त्तन हैं और
चार हजार हाथ के आठसौ दण्ड होतेहैं २०६ परि-
वर्त्तन में पच्चीस दण्ड का भुज होता है और दश
हजार हाथसे उसका क्षेत्र कहाता है २०७ चार भुज
का सम कहाता और कष्ठभू परिवर्त्तन प्रजापति के
मान से राजा पृथ्वीका भागले २०८ विपत्ति काल में
राजा मनुजीके मान से करै और लोभ से अधिक ले
तो प्रजा सहित राजा नष्ट होता है २०९ राजा दो अं-
गुलभी पृथ्वी दूसरेको न दे जब तक गाहक जीजे तब
तक उसकी वृत्ति के लिये दे २१० गुणी राजा देवता
के अर्थ सदा पृथ्वी का दान दे और कुटुम्बी कोदेख
के बागीचा और गृहके लिये पृथ्वी दे २११ नानावृक्ष
लता युक्त पशु पक्षि गणावृत जहां पानी औ धान्य
बहुत हो जहां तृण काष्ठ का सुखहो २१२ सिन्धुतक
नौका के जाने के अनुकूल पर्वत के निकट सुरम्य

पृथ्वी में राजा राजधानी बनावै २१३ गोल या अर्द्ध-चन्द्र चौकोन सुशोभन कोट खन्दक युक्त जिसमें ग्राम आदि आसकें २१४ मध्यमें सभा कूप वापी तड़ागादि से युत चारों दिशा में चार दरवाजे सुमार्ग आराम की पंक्ति २१५ पुष्ट देवालय मठ पान्थ शाला से विरा-जित ऐसी राजधानी बनाके प्रजा सहित सुगुप्त राजा बसै २१६ और राजगृह सभा मध्य गऊ घोड़े अश्व शाला से युक्त और प्रशस्त बापी कूप आदि और जल यन्त्रोंसे युक्तहो २१७ चारोंभुजा समहों दक्षिणो-च्च और उत्तर नत शाला बिना और एक गृह भुज और विषम भुज न हो २१८ अवसर पा ना एक भुज नहीं होती चतुर्भुज शालाबिना शुभहै और खन्दक बन्दूक ढाल तलवार धारियों से विराजित हो २१९ चारों दिशा में डेवढ़ी के तीन दरवाजों में दिन रात प्रति दरवाजों पै शस्त्रास्त्रधारी रक्षा करैं २२० चार पांच अथवा छः पहरा देनेवालों से सब गृह युत हों २२१ वस्त्र धोने स्नान पूजन भोजन पाक के लिये पूर्व दिशा में गृह बनावै २२२ और निद्राविहारपान रोदन घरट धान्य और दासी दासके अर्थ २२३ उ-त्सर्ग के लिये दक्षिण में क्रमसे इन गृहों को बनावें गऊ मृग ऊंट गज आदि के लिये पश्चिम तरफ गृह बनावै २२४ रथ घोड़े शस्त्र अस्त्र मल्ल और सिपाही वस्त्र द्रव्य विद्याभ्यासके अर्थ २२५ उत्तरओर सुगुप्त सुन्दर गृह बनावै अथवा राजा इन गृहोंको यथासुखं

बनावे २२६ न्याय सभा और सिस्तरी खाना गृह से उत्तर बनावे और भीतके विस्तार से पंचमांश अधिक ऊँचाई करे २२७ और कोष अर्थात खजेके विस्तार के षष्ठांश के सदृश स्थूल भीत बनावे एक भूमि की यह मान है औ दुमंजिला के मकानमें भी यही मान करे २२८ स्तम्भ और भित्तिमें प्रतिकोष करे तिखना पंचखना सतखना गृह बनावें २२९ गृह को आठ भाग करके बीच के दो अंशमें द्वार करके दो दो चारों दिशामें करै तो धन पुत्रकी वृद्धि हो २३० उसी भाग में द्वार करै अन्यथा न करै और अलग कोष जिस तरह सुखहो वातायन बनावे २३१ अन्य गृहके द्वारसे विद्ध गृहद्वार न करै और वृक्षकोणस्तम्भ मार्ग पीठ कूपसे वेधित न करै २३२ देवगृह और राजगृहके मार्ग में वेधन हो घरोंकापाया चतुर्थांश ऊंचाकरै २३३ और कोई कहते हैं कि प्रासाद और मण्डप का अ ष्टांशकरै पश्चिमके वातायनसे विद्ध वातायन नहींकरै २३४ विस्तार की अष्टांश के मल के सदृश ऊंची छदि बनावे जिसके ऊपर गिरा हुआ जल उससे नीचे गिरे २३५ हीन निम्न छदि न करै जैसा कोट की विस्तार हो वैसी बनावे और उस कोठकी उंचाई के सदृश सलवा प्राकार सम मूलक हो २३६ ऊँचाईका अर्द्ध विस्तार मलको तृतीयांश के सदृश करै उसी तरह ऊंचा करै जिससे चोर न नांघ सकै २३७ महल से रक्षित तोप बन्दूक सहित और बहुतसे बुर्ज औ

र्वासों से शोभित हो २३८ प्रति प्राकार खहीन अ-र्थात् परकोट और पर्व्वत समीप न हो तत्पश्चात परिखा खातसे द्विगुणा करै २३९ उस राज सभा के थोड़ी दूरपै अगाध जलसे शोभित हो युद्धकी सामग्री और बीरोंसे रहित हो २४० क़िले का रहना राजा को शुभ नहीं केवल बन्धन के लियेहै राजा सुगुप्त और सुमनोरम सभा करै २४१ तीन पांच सात खाने सुविस्तृत उत्तर दक्षिण दीर्घा पूर्व्व पश्चिम द्विगुणा राज सभा हो २४२ तिखना इकखना अथवा दुखना या तिखना इच्छा पूर्व्वक करै ज़िससे ऊपर के गृह सुखपूर्व्वक बनसकें २४३ और चारोंतरफ बातायनसे शोभित हो और बग़ल के कोठे से बीचके कोठे का विस्तार द्विगुणा हो २४४ और मध्य कोष्टके विस्तार से पंचमांशाधिक उंचाई करै २४५ कोठे की भूमि अथवा छदि वहां बनावै और बगलकेकोष्ट द्विभूमिक और बीचका कोष्ट एक भूमिका हो २४६ बगल के खनेके कोठेसे युक्त आनेके चार मार्गों से शोभित फुहारे और सुस्वर यन्त्रोंसे युतहो २४७ पंखा घड़ी आदर्श और प्रति रूपक यन्त्रोंसे प्रतिष्ठित हो २४८ अकार्य्य दर्शन में मन्त्रार्थ ऐसी राज़ सभा करै उसी तरह अमात्य लेख्य अदालतवालों का भी गृहहो २४९ इन मन्त्रियों के स्थान राज़गृहसे सौहाथ भूमि छोड़ के बनावै और इनके अर्थ जुदे २ हों २५० दो सौ हाथ उत्तर पूर्व्व सेना संवेशात राजगृहसे दूर प्रजा के

गृहहों २५१ वनी उच्च जातिके अनुक्रमसे सदा चारों दिशामें बुद्धिमान् राजा वसावै २५२ प्रजा अधिकारि गण सेनाधिप पैदर सवार २५३ घुड़शाल पीलखाना गजपालशाला तोपखाना रिसाला२५४ गोलावाले मिल क्रम से राजपुर में इन सबके गृह हों २५५ तत्पश्चात् कुपन और सु जलाशय सराय बनावै और सजातीय गृहके समूह पंक्तिसे हों २५६ पुर और ग्राम में फाटक उत्तर या पूर्व मुखहो और सब जातिके दुकानेहों तो बाजारमें फाटक करै २५७ और राज मार्गके बगलमें क्रमसे सराय आदि को बनावै इसप्रकार राजा नगर गांव बसावै २५८ राजा के गृह से चारों तरफ राज मार्ग करै और उत्तम राज मार्ग तीस हाथ का होता है२५९बीस हाथका मार्ग मध्यम और पन्द्रह हाथका अधम मार्ग होताहै उसीतरह बाज़ार पुर ग्राममें मार्ग करै २६० तीन हाथ की पद्या पांच हाथ की वीथि मार्ग दश हाथका इस प्रकार ग्राम और पुरमें रास्ता बनावै २६१ पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर ग्रामके मध्यसे मार्गको करै राजा पुरको देखके बहुत मार्गकरै २६२ राजधानी में तीन अथवा पांच हाथ का राजा मार्ग न बनावै और राजधानी से चौबीस कोश पै वन में उत्तम राज मार्ग बनावै २६३ राजधानीसे बारह कोस पै मध्यम मार्ग और छः कोशपै अधम मार्गकरै और गांव गांवमें दश हाथका मार्ग बनावै २६४ कछुवेकी पीठके सदृश पुल सहित गांव वाले मार्ग बनावै और

सड़कके किनारेपै जलके निकलनेकेलिये नालीबना-वै २६५ सम्पूर्ण गृह राज मार्ग्ग मुख हों और गृह के पीछे बीथी और मलके निकलने का स्थान हो २६६ दोनों पांतिमें जो गृहहों उनके मार्गको प्रति वर्ष चूने और हर्व्वो से बनावै २६७ मजदूर या बन्धुओं से उस मार्गको राजा बनवावै और दो गांवके बीचमें धर्म्म-शाला बनवावै २६८ ग्राम का स्वामी प्रति दिन उस धर्मशालाको साफकरावै और उसकी रक्षाकरै और शालामें आयेहुये को शालापति पूछा करै २६९ उससे पूछे कि कहां से आते हो कहां जाओगे सत्य कहो इकलहो या अन्य कोई शस्त्र या बाहन भी है २७० कौन जाति कुल और नाम क्या है बहुत दिनोंसे कहां रहतेहो उसका शस्त्र सायंकाल में लेके और सम्पूर्ण वृत्त पूछके लिखे २७१ सावधान मन होके सोते हुये पान्थोको सिखलादे शालामें जो ठहरेहों उनको गिन के शाला का दरवाजा बन्द करै २७२ रात्रिमें पहरा-वालों से उनकी रक्षा करै प्रातः काल उनको जगावै शस्त्र देकर उनको गिनै द्वार खोलके उनको निकाल दे २७३ और अपनी हद्द तक गांव के लोग उनकी सहायताकरैं और राजा राजधानी में रहकर दिनकी कृत्य करै २७४ रात्रिके चौथे पहरके दोमुहूर्त्तमें राजा उठके यह विचारकरै कि कितनी जमाहै और कि-तना खर्चहै २७५ और कोशके द्रव्यमेंसे कितना खर्च हुआ व्यवहारके लिये जो द्रव्यथा उसमेंसे क्या खर्च

हुआ २७६ देखने और लिखने से जानले कि पहिले क्या खर्च हुआ और अब कितना होगा उतनाही खज़ानेसे मँगावै २७७ तत्पश्चात पुरीषोत्सर्ग करके मुहूर्त भरमें स्नानकरके संध्या पुराण दानसे दो मुहूर्त बितावै २७८ सन्ध्या पुराण दानसे दो मुहूर्त बिताके गज अश्व यान कसरतसे प्रातःकाल दो मुहूर्त व्यतीत करै २७९ पारितोषिक दान धान्य वस्त्र स्वर्ण रत्न सेना को आज्ञा के लिखने से मुहूर्त भर बितावै २८० और चारमुहूर्त तक जमा खर्चको देखके तत्पश्चात मित्रों सहित स्वस्थ चित्त हो राजा भोजन करै २८१ नवीन और पुरानी वस्तुके प्रकट करने में एक मुहूर्त बिताके चार घड़ी दीवानी और फौजदारीका काम करै २८२ दो घड़ी शिकार खेलके एक घड़ी व्यूहका अभ्यास करै तत्पश्चात एक घड़ी सन्ध्या करै २८३ पुनस्सायंकाल में एक घड़ी भोजन करै और दो घड़ी हरकारे से बात करै तत्पश्चात सोलह घड़ी शयन करै २८४ इसप्रकार बिहार करतेहुये राजा सुखी रहताहै तीस मुहूर्त करके दिन रातका विभाग करै २८५ स्त्री मदिराके सेवनसे वृथा कालको न बितावै जिस कालमें जो कर्मउचितहो उसीसमय वह कर्मकरै २८६ समय पै वृष्टि हो तो पुष्ट करती है अन्यथा विनाश करतीहै कार्यके स्थानोंको पहरावालोंसेबारबार २८७ नय नीति नति वित सिद्ध वर शस्त्रोंसे चार पांच छः से सदा रक्षा करै २८८ राज्यकी खबर लिखनेवालोंसे

वहांके दिन की कृत्य सुनै और प्रति दिन पहरा देने वालोंको बदलाकरै२८९ पहरा देनेवाले टिकनेवालों को रक्षा करै गृहस्थों की मजदूरी से पोषित उन्हीं लोगों से राजा सम्पूर्ण वृत्त को सुनै २९० जो ग्राम से निकलै और जो ग्राममेंजाय उनकी यत्नपूर्वक परीक्षा करके निशान देकर जानेदे २९१ प्रख्यात वृत्त शील को बिना बिचार किये जाने देवै और प्रति मार्ग में आवे पहर पर सदा घूमा करै २९२ और पहरा देने वालों करके चोर और जारकी निवृत्ति करे इस प्र-कार राजा प्रजाका शासनकरे २९३ दास भृत्य भार्या पुत्र शिष्यको कभी हमारे देशके रहनेवाले कठोर बच न कहैं २९४ तोल आसा वजन नापाकि गाद सजाति धातु घृत २९५ मधु दुग्ध चर्वी पीठा इसमें कोई अन्य चीजका मेल न करै यह आज्ञादे २९६ उत्कोचक लेना स्वामि कार्य्य विलोभन दुर्वृत्तकारी चोर जार राजा का द्वेषी शत्रु २९७ उसीतरह अन्य अपकारियों की गुप्तताबा रक्षा न करे और माता पिता और पूज्य प-ण्डित २९८ इन सद्वृत्तशालीका कभी अपमान और उपहास न करै और स्त्री पुरुष और स्वामि सेवक में कोई भेद न करावै २९९ उसी तरह भाई गुरु शिष्य पिता पुत्रमें भेद न करै और बावली कुआं बागीचा सीमा धर्मशाला सुरालय ३०० इनके मार्गको कभी न बिगाड़े दीन और अन्धों को पीड़ा न दे जुआ मद्य पान शिकार शस्त्र धारणा ३०१ गौ गज अश्व ऊंट भैंस

नर स्थावर वस्तु चांदी सोना रत्न मादक वस्तु विष३०२ क्रय विक्रय मद्य सन्धान बेचनेका पत्र दान पत्र ऋण निर्णय पत्र ३०३ वैद्यक इन सबको राजा की आज्ञा विना न करे महापापप्रापक निधिकाग्रहण३०४नवीन सभाके नियमका निर्णय जाति दूषण अस्वामिना-र्षिक धन संग्रह मन्त्र भेदन३०५ और राजा केदुर्गुण का लोप कभी न करे और स्वधर्म हानि असत्यपर स्त्री गमन ३०६ झूठी गवाही झूठा लिखना चोरी से किसी वस्तुका लेना पहेसे अधिक करलेना चोरी साहस ३०७ मन से भी स्वामी का द्रोह न करे और भृत्यकी मज़दूरी में जोर या छलसे न बढ़ावे ३०८और सदा किसी को न दबावे परिमाण और उन्मान राज-मुहर के द्वारा करे ३०९ सम्पूर्ण प्रजा के लोग गुणके साधन में तत्पर हों और अपराधीको पकड़के फ़ौज-दारी में सौंपदें ३१० और छोड़े हुये बैल आदिको कोई न बांधे२जो हमारी आज्ञा सुनके जोकोईअन्यथा करेंगे ३११ उन पापियों को बड़े दण्ड से हम शिक्षा करेंगे इसप्रकार डौंडी पिटवा के प्रजा को समझादे ३१२ और अपने हुक्म को लिख के राजा चौराहेपर लटकावे और दुष्ट और शत्रुओं में राजा सदा उद्यत दण्डहो ३१३ राजा प्रजाका पालन नीति पूर्वक करे और राहियों के सुख के लिये राजामार्ग की रक्षा करे ३१४ और जो राहियों के दुःख दायियों कोरा-जामारे औरतीनअंश से राजा सेना रक्खे औरअर्द्धांश

से दान करे ३१५ प्रजा और राज्याधिकारी अर्द्धांश सेदान करें और अर्द्धांश से भोग करें और अर्द्धांश खजाने में रक्खें ३१६ और राजा को उचित है कि लाभके छठेभागसे खर्चकरे यह विधि सामन्त आदिमें भी होनाचाहिये न्यूनका व्यय न करे ३१७ राज्य, यश कीर्त्ति, धनशुणार्जितने प्राप्तहों उनकी रक्षा करे और अन्य राज्य आदिको इकट्ठाकरे ३१८ राज्य आदिकी रक्षा और इकट्ठाकरनेमें राजा प्रयत्नकरे और शूरता पाण्डित्य वक्तृत्व दातृत्व को कभी न छोड़े ३१९ बल पराक्रम नित्य उत्थान राज संग्राम और स्वामिकार्य्य में ३२० प्राण भयको छोड़के शङ्का रहितहो युद्ध करे वह शूरहै और पक्षकोछोड़के बालकके सुभाषित को ३२१ ग्रहणकरे और धर्म्म तत्वकी व्यवस्था करे वह पण्डित है प्रत्यक्ष भी राजाके दुर्गुणों को शङ्का रहित हो कहै ३२२ वही वक्ता है जो गुणके तुल्य कभी स्तुति न करे और जिसके कोई स्त्री पुत्र धन आदि अदेय न हो ३२३ और पात्र में अपने को भी दे वह दाता है अशङ्कित हो कार्य्य को विलक्षण करे वह बल कहाता है ३२४ जिससे अन्य राजा सेवक से मालूम हों वह पराक्रम कहाता है और युद्धके अनुकूल व्यापार उत्थान कहाताहै ३२५ विषदोष भयसे वानर कुक्कुट हंसके द्वारा अन्न का शोधन करे विष देखके हंस गिरते भ्रमर कूजते मयूर नाचते हैं ३२६ विषको देखके मत्त हो कुक्कुट शब्द करता क्रौंच और कपि

वमन करते न्योला रोमांच करता मैना वमन करती है ३२७ इस प्रकार जानके राजा भोजन की परीक्षा करे राजा नित्यही षटरसका भोजन करे दो तीन रस मिलाके न खाय ३२८ थोड़ा बहुत कटु मधुर क्षार न खाय जो कार्य्यविकारी कहैं उन सब को दीवानके द्वारा सुनै ३२९ और राजा प्रजा और स्त्री नट गायक मागधइन्द्रजालिकोंको साथलेकर बागीचेमें जाय३३० गजअश्व यान का सदा प्रातः सायङ्काल अभ्यास करे व्यूह और सेना वालों की शिक्षा करे और आप सीखै ३३१ और व्याघ्र आदि बन चर और मयूर आदि पक्षियोंसे क्रीडाकरे और दुष्ट जीवोंको मारता हुआ शिकार करे ३३२ जिससे शूरता बढ़ती है इससे सदा निशाना चलावे उस्से धृता और शस्त्र अस्त्र के चलाने में शीघ्रता होतीहै ३३३ शिकार में इतने गुण हैं परन्तु उस्मे हिंसा बड़ा दोषहै प्रजा और अधिकारियों का इङ्गित और चेष्टित ३३४ दीवान और शत्रु सैनिक सभा वाले वान्धव अन्तःपुर में स्त्रियोंका मत ३३५ गूढ़ रात्रिमें हरकारों से सुने और सावधान मन हो सिद्ध शस्त्रास्त्र सब वृत्तान्त लिखे ३३६ जो राजा असत्य वादी गूढ़ चार की शिक्षा नहीं करता वह राजा प्रजाके प्राण धनका हरनेवाला म्लेच्छ कहाता है ३३७ ब्रह्मचारी तपस्वी संन्यासी नीच सिद्ध स्वरूप को प्रत्यक्ष या छलसे गुप्त हरकारेके द्वारा शोधन करे ३३८ उनके शोधन बिना तत्त्वको न जानने पावे

अशोधक नृपसे असत्यवादी नहीं डरते ३३९ अधिकारी प्रजा से गूढचार की रक्षा करे और राज्य में राजा एक मालिक रक्खे बहुत मालिक न करे ३४० और राजा राज्य को बिना मालिक कभी न रक्खे राज कुलमें बहुत पुरुषहों ३४१ उनमें से सब से ज्येष्ठ राजाहो और अन्यसब कार्य्य साधक हों जिस्से वृद्धि हो वही श्रेष्ठहै अन्य बांधवहैं ३४२ सबसे ज्येष्ठ बधिर कुष्ठीगुंगा अन्ध नपुंसकहो तो वह राजगद्दी के योग्य नहीं उसका भाई अथवा पुत्र राज्य करे ३४३ राजाके छोटे भाई का पुत्र सबसे ज्येष्ठ हो तो वही राज्य का भागी हो राज्य भागियों का एक मति होना राजा को कल्याण कारक होताहै ३४४ भागियों की जुदाई राज्य और कुलके नाश के लियेहै इसीसे राजा सदा अपने भोग के सदृश भागियों को करे ३४५ राज्य विभागसे राजाका कल्याण नहीं होता बटने से छोटे राज्य को अन्य राजा लेलेता है ३४६ राज्य के चौथे भागके देनेसे राजा सम्पूर्ण राज्य रक्खे और चारों ओर या देश २ में मालिक रक्खे ३४७ गऊ गजघोड़े ऊंट खजाना का भागियों को अधिकारी करै और माता अथवा माता के सदृश जो हो उसको रसोईका कार्य्य सौंपै ३४८ सेनाका अधिकार बान्धव अथवा शालेको दे गुरु और मित्रको अपने दोष का देखने वाला करै ३४९ वस्त्र आभूषण पात्रको देखने में स्त्रियोंकोरक्खै और आप सबकोदेखै और चिह्नकरै ३५०

मकान के भीतर रात में और दिन में विशेषित निर्ज्जन बनमें मंत्रियों के साथ भाविकृत्य की सलाह करे ३५१ और सभा में मित्र भाई पुत्र बान्धव और सेनापति और सभाके लोगोंसे सदा राजकृत्य विचारै ३५२ सभा के पश्चिमी आधे भागमें राजासन रक्खे और राजासन के दाहिने बायें सभाके लोग बैठें ३५३ और पुत्र पौत्र भाई भानजे राजा के पीछे बैठें और कन्या पुत्र इस भाग से बायें तरफ बैठें ३५४ चचा स्वकुल श्रेष्ठ सभ्य सेनाधिप राजाके आगे अन्य आसन पै पूर्व्व और बैठें ३५५ और नानाके कुलके श्रेष्ठ मंत्री बान्धव श्वसुर साला बाईं तरफ सन्मुखबैठें ३५६ दामाद और बहनोई दाहिने बायें बगलमें बैठें और अपने सदृश मित्र समीप या आधे आसन पै बैठें ३५७ कन्या पुत्र और भानजे के पास दत्तक आदि पुत्र बैठें भानजे और कन्या पुत्र पुत्रआदिके स्थानमें बैठें ३५८ जैसे पिता उसी तरह आचार्य्य समया श्रेष्ठ आसन पै बैठें और मंत्री के पीछे दोनों बगल में सब लेखक बैठें ३५९ सम्पूर्ण सेवकगण सबके पीछे खड़ेहों और दोनों बगल में भीतर जाने और नीतिके बताने वाले चोबदारहों ३६० और सबसे विशेष चिह्नयुत सुभूषण सुकवच मुकुट दिये अपने आसन पै बैठे ३६१ सिद्ध अस्त्र नग्न शस्त्र हो सावधान मन हो सबसे अधिक दाताहो और जो कोई यह शब्द कहै कि तुम शूर और धार्म्मिकहो३६२ तो उसको न सुनै और श्रावक

और बंचक जो हैं राग वा लोभ अथवा राजाके भय सेकहैं तो बधिर की भांति मंत्रीलोग न सुनैं ३६३ नत को अनुमत जान के राजा अपने कार्य्यकी सिद्धि के लिये अलगर उनका मत साधन सहित लिखाके३६४ अपने मतसे बिचारै और बहुतों की सलाह के सदृश करै और गज अश्व रथ पशु भृत्य दास ३६५ राज्य सामग्री सैनिक को कार्य्यके अयोग्य जानकेप्रतिदिन यत्नसे रक्षा करै और पुरानोंका त्याग करै३६६ और दश हजार कोश की वार्त्ताको एक दिनमें ले और बिद्या पढानेवालों को द्रव्य देके बिद्या पढ़ावै ३६७ और जिसकी बिद्या समाप्त होगई हो गई हो उसको कार्य्यमें लगावे और बिद्याकल में उत्तम देखके वर्ष दिन में उनकी पूजन करै ३६८ और बिद्याकल की जिस्से वृद्धि हो राजा वैसा करै पीछे आगे प्राप्त क्रूर वेष नत नीति बिशारद ३६९ सिद्ध अस्त्र शस्त्र शास्त्र ऐसे भटोंको निकट नियुक्त करै और हाथी पर चढ़ के प्रजा को रंजन करता हुआ पुरमें फिरै ३७० राज-यानारूढ़ यानक्या राजा के तुल्य होता है नहीं और क्या राजा यानके तुल्य होताहै नहीं यह कवियों ने याहन कहा है ३७१ इस्से राजा अपने बान्धव मित्र जो समतामें अपने तुल्यहों ऐसी प्रकृतियों के साथ राजा बाहर जाय नीच के साथ कभी न जाय ३७२ मिथ्या सत्य सदाचारसे नीच और साधु होताहै नीच साधुओंसे अधिक कोमलता दिखातेहैं ३७३ आप पुर

देशको धर्म दिनमें राजा आप देखके किसीको अधि कारियों के द्वारा रक्खै किसीको बिगाड़दे ३७४ उन के प्रजा जीवों के साथ व्यवहार की चिन्तना करै राजा भृत्यका पक्ष न करै प्रजाका पक्षकरै ३७५ और जो प्रजा जिसकी गवाहीदे तो राजा उस अधिकारी का त्याग करै और एक बार अन्यायगामी अन्यायी देखले ३७६ रूपक्षको एकान्तमें शिक्षाकरै और अप- राधी का त्याग करै और अन्याय वर्त्ती का राजा सर्व्वस्वहरै ३७७ जित देशमें धर्म्माधिकारी रक्खैऔर निर्जितकी मजदूरी उसके चरित्रके माफिकदे ३७८ राजा प्रीति मती अनुरक्ता सुरूपा सुवक्षा प्रियवादिनी सुभूषणा सुसंयुक्ता स्त्री का सेवन करै ३७९ जो राजा दो प्रहर सोता है वह बड़ा सुख पाता है और अपने स्थानको न छोड़े और नीतिसे शत्रु गणा को जीतता है ३८० दन्त केश नख नृपस्थान भ्रष्ट नहीं शोभित होते और महा विपत्ति में राजा सदा गिरि दुर्ग में बास करै ३८१ उसीके आश्रयसे विवाह दान यज्ञार्थ जोड़ा और अर्थांश बिना चोर वृत्तिसे अपने राज्य को राजाले ३८२ दस्यु राजा असज्जनोंका अखिल धनले और इकट्ठान बसै और किसीका विश्वास न करै ३८३ सदैव सावधान होरहै प्राण नाशकी चिन्ता न करै क्रूर कर्म्मा सदा उद्युक्त निर्दय और कर्म्म करै ३८४ पर स्त्री और कुल कन्या इनवासे विमुख पुत्रवत भृत्योंका पालनकरै कि समय पै शत्रु न होजा-

यँ ३७५ प्रयत्नका कोई दोषनहीं वैसाही भाग्यहै और उसकर्म्मको विफल देखके तपस्याकरके स्वर्गको जाय ३७६ इस अध्यायमें संक्षेपसे राज कृत्य कहाहै अधिक मिश्रमें कहेंगे राज कार्य्य निरूपक प्रथम अध्याय कहा ३७७॥

इतिप्रथमाध्यायः समाप्तः॥
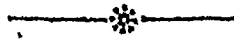
शुक्रनीति भाषा ॥

दूसरा अध्याय ॥

यद्यपि छोटाभी काम होता एक इकले पुरुष से दुःखसे करने के योग्यहै और बडेराज्यकी क्याकहै १ सम्पूर्ण विद्यामें कुशल सुमन्त्रका जाननेवाला मंत्रियों विना अर्थकी चिन्तना कभी नहीं करता २ सभ्य अधिकारी प्रकृति सभासदके सदामतमें स्थित राजा प्राज्ञ होता है स्वमतमें स्थित कभी बुद्धिमान नहीं होता ३ स्वतंत्र राजा अनर्थकारी होताहै और प्रधान फूटके दूसरे देशके राजासे मिलताहै ४ बुद्धिमानों के वचन अनुभव अनुमानसे यह जानाजाता है किसम्पूर्ण पुरुषों में भिन्न २ बुद्धि विभव होता है ५ प्रत्यक्ष,साद्रुप्य,साहस, छल बलसे लौकिक व्यवहार में विचित्र्ताहै और गुरुता लघुता से उन्नत होताहै ६ यह सब जाननेको एक पुरुष समर्थ नहीं होता इसीसे राजा राज वृद्धिके लिये सहायता करनेको अन्यकोरक्खै७ कुल गुण शीलमें वृद्ध शूरभक्त प्रिय बोलनेवाले हितके उपदेशक क्लेश सह धर्मरत ८ कुमार्ग गामी राजाका उद्धार करनेवाला शुचि निरभिमान काम

क्रोध लोभहीन निरालस ऐसे मनुष्य को राजा सहायक करै ९ कुसहाय से स्वधर्म्म और राज्यसे राजा च्युत होताहै कुसहाय और कुकर्म्म से दैत्य नष्टहुये१० शूर और बली दुर्य्योधन आदि राजा नष्टहुये इस्से राजा निरभिमान और सुसहायहो ११ युवराज और अमात्यगण राजाकी भुजाहैं और वेही दोनों क्रमसे दक्षिण बाम नेत्र हैं १२ और दोनों विनाराजा बाहु कर्ण अक्षि हीन होता है महानाशके भयसे युवराज और अमात्य को अवश्य करै १३ मुद्राबिना अखिल राज कृत्य करने को योग्यहै और धर्म्मपत्नीसे उत्पन्न और सपुत्रको राजा युवराज करै १४ अपनेसे छोटा पितृव्य अनुज बड़ेभाई का पुत्र पुत्री कृत पुत्रदत्त इन को राजा युवराज करै १५ इन सबके अभावमें कन्या पुत्र या बहिनके पुत्रको युवराज करै और अपने हित के लिये इनका अपमान न करै १६ स्वधर्म्म रत शूर भक्त नीतिमान बालक राजपुत्रों की सदारक्षा करै१७ अर्थके लोभी वे उसको रक्षमाण छिद्र प्राप्तहोतेहैं१८ राजपुत्र सिंहके पुत्रकी तरह रक्षा करने वाले को मारताहै मदान्ध राजपुत्र निरंकुश हाथी की भांति होताहै १९ राजोंके पुत्र अपने पिताको मारतेहैं भाई की क्या गणनाहै सर्वबालक स्वामी होना चाहताहै और युवाकी क्या कहैं २० राजा अच्छे भृत्योंके द्वारा छलसे राजपुत्र के चित्तकी बात जानके स्वीय मनुष्यों कीअत्यन्त निकटता से राजपुत्रों की रक्षाकरै २१

नीति शास्त्र कुशल धनुर्विद्या विशारद क्लेश सह वचन कठोरतानुभव २२ शौर्य्ययुद्धरत सर्व्व कला वि द्यावित सुविनीत राजा अपने पुत्रों को मंत्री आदिसे करावै २३ सुन्दर वस्त्र आदिसे भूषित कर सुन्दरखेल आदिसे खेला उत्तम आसन से प्रसन्न कर अच्छे भो- जन से पालन करै २४ युवराज पदके योग्य करके यु- वराजपदमें अभिषेक करै जिस कुलमें अविनीत कुमा- र होताहै वह कुल शीघ्र नष्ट होताहै २५ कुमार्गगामी राजपुत्र त्यागके योग्य नहींहै क्योंकि वह दुःखपाके शत्रुओं से मिलके पिताको मार डालताहै २६ व्यसन में लगे हुये राजपुत्र को व्यसनाश्रय से क्लेशदे जिस तरह मदान्ध गजको सुख बन्धनसे बशमें करतेहैं २७ कुचाल भाग वालों को यत्न पर्व्वक व्याघ्र शत्रु कुल से यत्नपूर्व्वक राज्यको वृद्धि कोलिये मारे २८ अगर ऐसा न करै तो राजा और प्रजाका नाशहोताहै और अपने उत्तम गुणोंसे नित्य राजाको प्रसन्नकरै २९ अ- न्यथा वह अपने भाग और जीवनसे भ्रष्ट होतेहैं अपनी माणिराज्यसे विहीन होके अन्यका दिया हुआ नहीं पाता ३० सनसे भी दत्तक आदि पुत्रको न माने धनी जानिके दत्तक होनेकी इच्छा करते हैं ३१ स्वकुल में उत्पन्न कन्याका पुत्र दत्तक आदि पुत्रोंसेश्रेष्ठहै क्योंकि कन्या अपने अंगसे उत्पन्नहै इस कारण पुत्र के तुल्य है ३२ पिण्डदानमें पुत्र और दौहित्रमें कुछ विशेष नहींहै और राजा पृथ्वी और प्रजाकी रक्षाके लिये

क्रोध लोभहीन निरालस ऐसे मनुष्य को राजा सहायक करै ९ कुसहाय से स्वधर्म्म और राज्यसे राजा च्युत होताहै कुसहाय और कुकर्म्म से दैत्य नष्टहुये१० शूर और बली दुर्य्योधन आदि राजा नष्टहुये इससे राजा निरभिमान और सुसहायहो ११ युवराज और अमात्यगण राजाकी भुजाहैं और वेही दोनों क्रमसे दक्षिण बाम नेत्र हैं १२ और दोनों विनाराजा बाहु कर्ण अक्षि हीन होता है महानाशकि भयसे युवराज और अमात्य को अवश्य करै १३ मुद्राबिना अखिल राज कृत्य करने को योग्यहै और धर्म्मपत्नीसे उत्पन्न और सपुत्रको राजा युवराज करै १४ अपनेसे छोटा पितृव्य अनुज बड़ेभाई का पुत्र पुत्री कृत पुत्रदत्त इन को राजा युवराज करै १५ इन सबके अभावमें कन्या पुत्र या बहिनके पुत्रको युवराज करै और अपने हित के लिये इनका अपमान न करै १६ स्वधर्म्म रत और भक्त नीतिमान बालक राजपुत्रों की सदारक्षा करै१७ अर्थके लोभी वे उसको रक्षमाण छिद्र प्राप्तहोतेहैं१८ राजपुत्र सिंहके पुत्रकी तरह रक्षा करने वाले को मारताहै मदान्ध राजपुत्र निरंकुश हाथी की भांति होताहै १९ राजोंके पुत्र अपने पिताको मारतेहैं भाई की क्या गणनाहै सर्व्वपालक स्वामी होना चाहताहै और युवाकी क्या कहैं २० राजा अच्छे भृत्योंके द्वारा छलसे राजपुत्र के चित्तकी बात जानके स्वीय मनुष्यों कीअत्यन्त निकटता से राजपुत्रों की रक्षाकरै २१

नीति शास्त्र कुशल धनुर्विद्या विशारद क्लेश सह
वचन कठोरतानुभव २२ शौर्य्ययुद्धरत सर्व्व कला वि
द्यावित सुविनीत राजा अपने पुत्रों को मंत्री आदिसे
करावै २३ सुन्दर वस्त्र आदिसे भूषित कर सुन्दरखेल
आदिसे खेला उत्तम आसन से प्रसन्न कर अच्छे भो-
जन से पालन करै २४ युवराज पदके योग्य करके यु-
वराजपदमें अभिषेक करै जिस कुलमें अविनीत कुमा-
र होताहै वह कुल शीघ्र नष्ट होताहै २५ कुमार्गगामी
राजपुत्र त्यागके योग्य नहींहै क्योंकि वह दुःखपाके
शत्रुओं से मिलके पिताको मार डालताहै २६ व्यसन
में लगे हुये राजपुत्र को व्यसनाश्रय से क्लेशदे जिस
तरह मदान्ध गजको सुखबन्धनसे वशमें करतेहैं २७
कुचाल भाग वालों को यत्न पर्व्वक व्याघ्र शत्रु छल
से यत्नपूर्व्वक राज्यकी वृद्धि के लिये मारै २८ अगर
ऐसा न करै तो राजा और प्रजाका नाशहोताहै और
अपने उत्तम गुणोंसे नित्य राजाको प्रसन्नकरै २९ अ-
न्यथा वह अपने भाग और जीवनसे भ्रष्ट होतेहैं अपनी
पिण्डयसे विहीन होके अन्यका दिया हुआ नहीं
पाता ३० मनसे भी दत्तक आदि पुत्रको न मानै धनी
मानिके दत्तक होनेकी इच्छा करते हैं ३१ स्वकुल में
उत्पन्न कन्याका पुत्र दत्तक आदि पुत्रोंसेश्रेष्ठहै क्योंकि
कन्या अपने अंगसे उत्पन्नहै इस कारण पुत्र के तुल्य
है ३२ पिण्डदानमें पुत्र और दौहित्रविषे कुछ विशेष
नहींहै और राजा पृथ्वी और प्रजाकी रक्षाके लिये

दत्तक करै ३३ राजा प्रजा पालनार्थ और धनी को छोड़ और कोई परोत्पन्न में पुत्रत्व न करके सर्व्वस्व देदे ३४ संसारमें यह आश्चर्य्य नहीं वह मदान्धहोके सबलेले इससे सब न दे और आदरकरै क्योंकि ऐसा न हो कि युवराजहोके विकारको न प्राप्तहो ३५ अपनी सम्पत्तिको माता पिता गुरु भाई बहिन राजबल्लभको न दे ३६ देशमें महाजनों का न अनादर करै न पीड़ा दे बड़ी वृद्धिको पाके भी पिताकी आज्ञासे बर्त्तै ३७ पुत्रको पिताकीआज्ञा परम भूषणहै पिताकी आज्ञा से परशुरामजी ने माताको मारा और श्रीरामचंद्रजी पिताकी आज्ञासे बनकोगये ३८ पिताहीकी आज्ञासे परशुरामजीमाताको और श्रीरामचन्द्रजीने राज्यको पाया जो शापऔर अनुग्रहमें समर्थहो उसकीआज्ञा-बड़ीहै३९ सहोदर भाइयोंमें अपनी बड़ाई न प्रकटकरै भागके योग्य भाइयोंके अनादरसे दुर्य्योधन नाशको प्राप्तहुआ ४० उत्तम पदको पाकेभी पिताकी आज्ञाके टालनेसे उसपदसे दासकीभांति राजपुत्र नष्टहोतेहैं ४१ जैसे राजा ययाति और विश्वामित्र ऋषि के पुत्र कायबचनसे सदा पिताकी सेवामें रत रहे ४२ जिस कर्म्मसे पिता प्रसन्नहो वही कर्म्म पुत्रकरै ऐसा काम न करै जिससे पिता थोड़ा भी अप्रसन्नहो ४३ जिससे पिता प्रीतिकरै उसीकी प्रीति पुत्रभी करै और पिता जिससे द्वेषकरै उससे पुत्रभी द्वेषकरै ४४ पिताके अस-म्मत और विरुद्ध कभी न करै चार और सूचक के

हो से जो पिता अन्यथा हो ४५ तो मंत्रियों की सलाह से एकान्त में पिताको समझावै अन्यथा सचकोंको अधिक दण्ड दे ४६ अहल्कारों के कपट और मनको सदा राजा देखतारहे और प्रातः काल पिता माता गुरुको नमस्कार करके ४७ प्रति दिन राजा से पुत्र अपने काम को कहे इस प्रकार गृहके अविरोध से राज पुत्र गृह में वास करै ४८ विद्या कर्म्म शील से आनन्द से प्रजा को सुख देताहुआ त्यागी सत्त्व सम्पन्न हो सब को अपने वशमें करै ४९ शुक्लपक्ष के चन्द्रमा की भांति शनैः २ राजपुत्र बढ़े इस प्रकार वर्त्तता हुआ राजपुत्र अकण्टक राज्य करता है ५० सहायवान् अमात्यों सहित बहुत दिन तक पृथ्वी का राज्य करताहै यह संक्षेप से युवराजकाहित कार्य्य कहाहै ५१ मृदु गुरु असाधा वर्णा शब्दादि के साथ अब संक्षेप से अमात्यों काकाम और लक्षण कहते हैं ५२ परीक्षकों के द्वारा जिस प्रकार सुवर्ण की परीक्षा करके कर्म्म सहवास गुण शील कुलआदिसे परीक्षाकरै ५३ भृत्य की परीक्षा करके विश्वास करै केवल कुल और जाति की परीक्षा न करै ५४ जिस तरह कर्म्म शील गुण पूज्यहै उस तरह जाति कुल नहीं पूज्य है जाति और कुलसे श्रेष्ठता नहींहोती ५५ विवाह और भोजनमें कुल जातिका विवेक होता है सत्यवादी गुण सम्पन्न कुटुम्बी धनी भृत्यहो ५६ अच्छे कुल का सुशील सुकर्म्मा निरालस हो जिसतरह अपना कार्य्य कर

उससे अधिक स्वामीका कार्य्य करै ५७ चौगुना यत्न काय वचन मनसे मजदूरी से तुष्ट कोमल वाक् कार्य्य दक्ष शुचि दृढ हो ५८ परोपकार में दक्ष अपकार से पराङ्मुख स्वामीका अपराधी पुत्र और पिता भीहो उसको भी कहदे ५९ अन्यायगामी राजाहो तो अत्तद्रूपहो उसको समझावै उसकी किसी बात को न टारै और उसकीन्यूनताका प्रकाश न करै ६० सत्कार्य्य करने में विलम्ब न करै और बुरे कार्य्यको देर में करै उसके पुत्र मित्र छिद्र न देखैं ६१ उसीकी तरह की बुद्धि उसके स्त्री पुत्रादि बन्धु में भी होवे न प्रशंसा करै न स्पर्द्धा करै न अभ्यसयाकरै न निन्दा करै ६२ और वह अन्य के अधिकार की इच्छा न करै निस्पृह हो हर समय आनन्दित रहै और उसके दिये हुये वस्त्र भूषण को उसी राजा के सन्मुख धारण करै ६३ अपने मासिक के सदृश खर्च करै इन्द्रियजित दयालु शूर हो और जो राजाके अकार्य्य को एकान्तमें कहै वह सेवकोंमें श्रेष्ठहै ६४ इनसे विपरीत गुणवाले भृत्य निन्दित हैं और जो भृत्य थोड़ी तनख्वाहपाता हो और जिसको बड़ा दण्डदिया हो ६५ शठ कादर लुब्ध सामने प्रिय बोलने वाला मदान्ध विषयी आर्त्त कर्ज्जशील ६६ नास्तिक दम्भी सत्य वचन भी है पर निन्दक है अपमानित और जो कड़े वचन से मर्म्मस्थल में ताड़ित हो ६७ लबाड़ अविचारी धर्म्म हीन ये सुसेवक नहीं हैं यह संक्षेप से

अच्छे और बुरे सेवकों के लक्षण कहेहैं ६८ अब सं-
क्षेपसे पुरोहित आदिका लक्षण कहते हैं पुरोहित
प्रतिनिधिऔर प्रधान, सचिव है ६९ मंत्री, धर्म्मव्य-
वस्थापक, पण्डित, सुमंत्र, अमात्य, दूत ये दशराजा
की प्रजाहैं ७० पूर्व्व दशांशअधिक दूतान्त आठ प्र,
कृतियों से युक्त सदा राजाकहाता है ७१ सुमंत्र, प-
ण्डित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, प्राड्विवाक, प्रति
निधि ७२ ये राजाके आठ मासिक के सदृश प्रकृति
हैं चित्तकी बात का जानने वाला दूतराजा का अनुग
कहाताहै ७३ सम्पूर्णराज्यमें सबसे श्रेष्ठ पुरोहित है
उसके पीछेप्रतिनिधि उसके पीछे प्रधान श्रेष्ठ है ७४
प्रधान से पीछेसचिव सचिव के पीछे मंत्री मंत्री के
पीछे प्राड्विवाक उस के पीछे पण्डित ७५ उसके
पीछेसुमंत्र उसकेपीछे अमात्य तदनन्तर दूत ये यथा-
क्रम पूर्व्व श्रेष्ठ हैं ७६ मंत्रानुष्ठान सम्पन्न त्रयी वेत्ता
कर्म्म तत्पर जितेन्द्रिय जित क्रोधलोभ मोह विवर्जित
७७ षडङ्ग वित धनुर्व्विद्या औ वेद विद्या का जानने
वाला जिस के कोपके भय से राजा भी धर्म्म नीति
रतहो ७८ नीति शास्त्र अस्त्र व्यूह आदि में चतुरपुरो-
हित होता है वही पुरोहित शापानुग्रह में समर्थ
आचार्य्य कहाता है ७९ बिना प्रकृतिसमंत्र से मेरे
राज्यका नाश होगा जहां ऐसा निरोध राजाका हो
वह सुमंत्री है ८० जिनसे राजा न डरै उनसे राज्यकी
वृद्धि क्या होगी जैसे वस्त्र भूषण से स्त्री भूषणीय है

उसी तरह वह भी ८१ राज्य प्रजा बल कोश सुनृपत्व को जिसके मन्त्र से न बढ़े उस के मन्त्री होने से क्या प्रयोजनहै८२कार्य्याकार्य का जाननेवाला प्रतिनिधि कहाताहै सर्व्वदर्शी प्रधान और सेनाका जाननेवाला सचिव कहाताहै ८३ नीतिमें चतुरमंत्री और धर्म्म काजाननेवाला पण्डित कहाताहै लोकशास्त्र नीतिका जानने वाला प्राड्विवाक कहाता है ८४ देश कालका विज्ञाता अमात्य कहाता है और लाभ व्ययका जाननेवाला सुमन्त्र कहाता है ८५ चित्त की बात आकार चेष्टा का जाननेवाला स्मृतिमान देश कालवित षट्गुणका जाननेवाला वृष्ठुनिर्भय दूतकहाताहै ८६ अहित कार्य्य जो शीघ्र करनेके योग्यहै और हितभी उसके न करने का अख्तियार हो वह राजाका प्रतिनिधि है ८७ सिखलावै करावै करै सत्यहो या असत्य जो कार्य्य मात्रहो ८८ सबके राज कार्य्यमें प्रधान विचार करै गज अश्व रथ पैदर ८९ मज़बूत ऊंट बैल बाजेकी आवाज का संकेत व्यूहके अभ्यास के करनेवालों का९०शस्त्र अस्त्रको धारणकरके राजचिह्नको धारण कर पूर्व पश्चिम के जानेवाले मध्यम उत्तम कर्म्या परिचार गणोंकी परीक्षा ९१ अस्त्रपाती नवीन या पुराना घोड़ा कौन कार्य्यके योग्यहै कौन नहीं ९२ और कितने शस्त्र गोला बारूद कितने कामके योग्यहैं और कितनी सामग्री संग्रामके योग्य है यह विचार करै ९३ इन कामों को अच्छी तरह सचिव

राजासे कहे साम दाम भेद दण्ड किसको कब करना चाहिये ९४ इनके करने से बहुत या मध्यम थोड़ा कैसा फल होताहै यह सब बिचारके मन्त्री राजासे निवेदन करै ९५ गवाहों के द्वारा लिखे भोगसे अपने उत्पन्न कियेहुये सम्प्राप्त व्यवहार छली मनुष्यों को विचार के ९६ या दिव्य संसाधन अथवा किसमें कौन साधन है उसको युक्ति प्रत्यक्षानुमान उपमान लोक शास्त्रसे ९७ सभामें स्थितहो बहु सम्मतसे सिद्ध करके सभ्य और प्राड्विवाक सहित राजाको सम-झावें ९८ कौन धर्म्म वर्त्तमान है और प्राचीन धर्म्म कौन धर्म्म लोक संश्रित हैं और शास्त्रमें कौन धर्म्म कहेहैं और इस समयके विरुद्ध कौन धर्म्महैं ९९ और लोक शास्त्रके बिरुद्ध कौन धर्म्महैं इन सब धर्म्मोंको पण्डित विचार के परलोक और इस लोक के सुख देनेवाले धर्म्मोंको राजाको समझावै १०० इतना द्रव्य और इतना तृण इसवर्षमें जमाहै और इतना स्थावर जंगम खर्चहुआ है १०१ इतना बाकी है यह सुमन्त्र राजासे कहे ग्रामपुर वन कितने हैं १०२ इसवर्ष में कितनी पृथ्वी जोतीगई और उससे कितनाभाग मि-ला है उसभागमें बाकीक्या और बिना जुती ज़मीन कितनी है १०३ इस वर्ष में करका द्रव्य और दण्ड आदि का जुर्मानह और बिना जुती हुई ज़मीन से उत्पन्नतिनी पसारी वग़ैरह और वन से उत्पन्न यह सब कितनेहैं १०४ कितना माल खानिसे मिला और

निधि से क्या मिला और कितना माल बिना स्वामिक है कितना माल नष्ट हुआ है और चोर कितना ले गये १०५ और कितना द्रव्य रक्खा है यह सब अमात्य राजा से निवेदन करे ये दश प्रकारके प्रधानों के लक्षण संक्षेपसेकहेहैं १०६ उसके दिखाने वालों से उनके लिखेसे जाने और परस्पर कार्य्योंमें उनकी राजा बदली करे १०७ कभी अधिकारीको अधिक बल न करे इनके समबल रक्खे १०८ एक अधिकारमें सदातीन चतुरमनुष्योंको नियुक्तकरे और उन तीनोंमें एक को मुख्यकरे १०९ दो देखनेवाले जो उसकेसाथ रक्खेथे वर्षदिनमें उसकी बदलीकरे अथवा तीन या पांच या सात अथवा दशवर्ष में बदली करे ११० इनके कार्य्यकी कुशलता देखके बदलीकरे राजा जिस किसीको सदा अधिकार न दे१११ अधिकारके योग्य देखके अधिकार दे बहुत दिनतक अधिकार के मदको पीके कौन मोह को नहीं प्राप्तहोता ११२ इससे कार्य्यके योग्य देखके अन्यकार्य्यमें नियुक्तकरे और उसके कार्य्यमें कामकेयोग्य देखके उसके अनुगको नियुक्तकरे ११३ उसके अभावमें दूसरे योग्यको उसअधिकारपै रक्खे औरजउसकेसदृशउसका पुत्र होतो उस अधिकार पै उसीको नियत करे ११४ जिस २ प्रकारसे जो बडे २ अधिकारमेंहो क्रमसे अंत में उसको आठ प्रधानोंमें नियतकरे ११५ अधिकारीके अधिकार बलको देखके बहुतसे देखनेवाले नियतकरे

या एक अधिकारी को उसका दर्शक करै ११६ और अन्यकर्म सचिवहैं उनको गज अश्व रथ पैदर पशु ऊंट मृग पक्षी ११७ सुवर्ण रत्न चांदी वस्त्र वित्त धान्यागार पाक गृहके पृथक् २ अधिप करै ११८ बाग इमारत संभार देव गृहपति दानपति पृथक् २ बना वे ११६ फौजदार ग्रामस्वामी भागहार चौथा लेखक करै १२० पांचवां महसूल लेनेवाला छठा द्वारपाल इन छः मनुष्यों को ग्राम ग्राम और पुर पुर में नियत करै १२१ तपस्वी दान शील श्रुतिस्मृति विशारद पौराणिक शास्त्रविद ज्योतिषी मान्त्रिक १२२ आयुर्वेद विद अर्थात वैद्य कर्मकाण्डी तान्त्रिक और अन्य जोश्रेष्ठ गुणी बुद्धिमान जितेन्द्रिय हैं १२३ इन सबको सेवकलोग दान मान से पूजन करैं अगर ऐसा न करैं तो राज्य हानि को प्राप्तहोता और राजा अपकीर्त्ति को पाता है १२४ बहुतों करके साध्य कार्य्योंका उन कामोंकेयोग्य अधिपोंको जानके उस कार्य्यमें नियुक्त करै १२५ अक्षर असंत्र नहीं होता और बिना औषध मूल नहीं होता और अयोग्य पुरुष नहीं होता योजक दुर्लभहै१२६ गजोंका भद्रादि जातिभेद वैद्यक शिक्षा व्याधि कोसना तालु जिह्वा नखोंके गुण १२७ आरोहण गति गज रक्षा ऐसेही बडेहाथी हृदय हारको भी जानै १२८ घोडोंके हृदयको जानै जाति वर्णभँवरी सेगुण गति शिक्षा दवाई सत्वसार रोगको जानै १२९ हिताहित पोसना मान यान दन्त वय को जानै सूर

व्यूहवित प्राज्ञऐसे मनुष्यको अश्वाधिपति करै१३०इन गुणोंसे युक्त सारथी जोधुरी पुढा जानै और रथकी पुष्टता गति भ्रमण फिरना जानै १३१ शास्त्र अस्त्र के चलने में लक्ष्य संधान नामकहो और रथ की गति से घोड़ों के संयोग की रक्षाको जानै १३२ उसी तरहशूर व्यूहविशारद घोड़ेकी गति का जानने वाला प्राज्ञशास्त्रास्त्र युद्धके जाननेवालेको सवारोंमेंरक्खै१३३ चक्रिता रेचिता वल्गीतक धौरित आप्लुत तुरमद कुटिलसर्पणा परिवर्त्त न १३४ अस्कन्दित इन ग्यारह गतियों को जो जाने यथाबल यथाक्रतु घोड़ेकी शिक्षाकरै वह शिक्षकहै१३५ घोड़ोंकी सेवामें कुशल पल्याणादिनियोगवित दृढाङ्ग शूर ऐसे मनुष्य राजा बाजि सेवक करै१३६नीति शास्त्र अस्त्र कवायद नीति विद्याविशारद बालक न होके जवानहो शूर इंद्रियजित दृढाङ्ग १३७ स्वधर्मरत नित्यस्वामि भक्त रिपुका द्वेषी शूद्रयाक्षत्रिय वैश्य म्लेच्छ अथवा वर्ण सङ्कर१३८जयका चाहने वाला राजा इन को सेनापति और सैनिक करै और पाँच या छः पैदरके बीचमें एक अफ़सर बनावै१३९ वह पत्तिपाल कहाता और तीस मनुष्यों का पालक गौल्मिक कहाता है शत का पालक शतानीक या अनु शतिक पावर कहाता है १४० सेनानी और शरिश्तहदारप्रति शत मनुष्यों में करै और हजार और दश हजार में अधिकारी करै१४१ और सेना वालोंमें सायङ्काल और प्रातः काल जो कवायद और खुद

भीयुद्ध भूमिके युद्धको जाने वह शतानीक है१४२ उसी तरह शतानीक का साधक अनुशतिक कहाता है जो युद्धके सभार कार्य योग्य सैनिक को जाने १४३ और वही सेनानी पहरादेने वालों का काम बतावै और पहरुओंके कामको देखे वह पत्तिप है १४५ जो पहरुओंकी गोल को जानै वह गुल्मप है कितने सैनिक हैं और किनको मासिक पाना चाहिये १४४ कितने पुराने नौकर हैं और कहां गये हैं यह जो जानै वह लेखक है और बीस हाथी अथवा बीस घोड़ों का स्वामी नायक है १४६ पहिले जिनके नाम कहे गयेहैं अपने अपने चिह्न से चिह्नित इनको नियुक्त करै अज भेड़ बैल महिष मृगोंके जो अधिप १४७ इन की वृद्धि और पुष्टता में चतुर उन के ब्याहसे पीड़ित इसीतरह गज और ऊंट के सेवकों को करै१४८ और युद्ध प्रवृत्ति में कुशल तीतर आदिका पोषक शुक आदिका पाठक बाज आदिका पात बोधक १४९ उन जीवों के मन के जानने में चतुर जाति प्रभाव जाति समता से मौल्य का जानने वाला १५० और रत्न सोना चांदी रुपयोंका मालिक इन्द्रियजित धनी व्यवहार में चतुर १५१ धनको प्राप्त से अधिक जाने और अति कृपण हो तो उसको खजानेका मालिक करै और देश और जाति भेद से मोटे महीन के बलाबल से १५२ रेशमी वस्त्र के मान और मौल्य और शास्त्रके जानने वालेको वस्त्रका स्वामी करैऔर

डेरा पोशाक वेषमरूप की क्रिया को जाने १५३ प्रमाण से सीप का रंगवाना जानता हो और शय्या और डेरा आदि के बनानेमें चतुरहो १५४ वही वस्त्र आदि और बिछात आदि का स्वामी करै और जाति तोलना मौल्यसार भोग परिग्रह को १५५ और धान्यका साफकरना जोजानताहो उसको धान्यकास्वामी करै और खाये या वेखाये पाक और रस भेद का जानने वाला १५७ भूमि जल आदिसे यथा काल वृक्षोंको दुरुस्त करै और वृक्षोंका दवाना जानताहो वह आरामाधिपहै १५८ अटारी परिखा किला खाई प्रतिमा यन्त्र पुल बांधना बावली कुआ तालाब १५९ छोटा तालाब कुण्ड जलसे ऊपर जानेकी क्रिया शिल्प विद्याका जानने वाला जिससे सुंदरता होती है १६० उसको जानताहो वहीगृह आदिका स्वामी करणीय है राज कार्य्योपयोगी पदार्थोंके सिद्धान्त को जानता हो १६१ समय पै उनपदार्थों को इकट्ठा करै वह सम्भाराधिप है स्वधर्माचरण दक्ष देवताराधन तत्पर १६२ निस्पृह ऐसे मनुष्यों को देवतुष्टि पतिकरै याचकको विमुख औरसंग्रहको न करै १६३ दानीनिर्लोभ यथार्थ निरालस दयालु मृदु वाक दानपात्रका जाननेवाला नम्र १६४ नित्य इन गुणोंसे युक्त दानाध्यक्ष कहाता है व्यवहार विद प्राज्ञ वृत्त शील गुणान्वित १६५ शत्रु और मित्र में सम धर्मज्ञ सत्य वादी निरालस जितक्रोध कामलोभ प्रियम्वद १६६ऐसे

रह मनुष्योंको सबजाति में सभासद करै और सर्व जीवोंमें जो तुल्य हो निस्पृह अतिथिपूजक १६७ दानी ऐसे मनुष्य को यज्ञका स्वामी बनावै और परोपकार निरत पराये मर्मका अप्रकाशक १६८ निर्मत्सर गुणग्राही उसविद्याका जानने वाला ऐसे मनुष्यको परीक्षक करै जिससे प्रजा नष्ट न हो ऐसा दण्ड दे १६९ न बहुत कड़ा न बहुत कोमल हो ऐसे मनुष्यको फौजदारी का स्वामी करै और लूटने वाले और चोरों और अधिकारियों से १७० प्रजा के रक्षण में माता पिता की भांति रक्षा ग्रामपति होता है और यत्न पूर्वक वृक्षों का पोषणकर फल पुष्पको ले १७१ जिस तरह माला-कार करता है उसी तरह भाग हारकरै और गिनती करने में चतुर देश भाषा के भेदका जानने वाला हो १७२ विनासन्देह खुलासा जो लिखै वह लेखक अर्थात लिखने वाला और शस्त्र अस्त्र में कुशल दृढाङ्गनिरालस १७३ यथा योग्यको बुलावे और द्वारपाल होता है और जिसतरह बेचने वालेके मूलका नाश नहीं होता १७४ उसी तरह संग्रह ले वह मौल्किक कहाता है जप उपवास नियम कर्म ध्यान में रत १७५ इन्द्रियजित क्षमावान निस्पृह तपस्वी कहाता है जो याचकोंको अर्चनकरे यहां तक कि स्त्री पुत्र को भी देदे १७६ और जो कुछ पावै वह न ले वह दान शील है और अभ्यास करने वाले के पढ़ने पढ़ाने में समर्थ १७७ श्रुति स्मृति पुराणोंमें रतवह श्रोत्रिय कहाते हैं

और काव्यशास्त्रमें निपुण सङ्गीतज्ञ सुस्वर १७८ और सर्ग आदि पांच को जानने वाला वह पौराणिक कहाता है मीमांसा तर्क वेदान्त शब्द शासन तत्पर १७९ तर्कवान समझाने में समर्त्थ शास्त्रविद कहाता है और संहिता होरा गणित को जाने १८० त्रिकालज्ञ हो वह ज्योतिर्व्विद है और बीज के अनुरूप से जोमन्त्र के गुण दोष को जाने १८१ मन्त्रानुष्ठानसम्पन्न सिद्ध दैवत वह मान्त्रिक है व्याधि कानिदानऔर औषधि और व्याधि का तत्त्व निश्चय १८२ और साध्य असाध्य जानके औषधि करै वह वैद्य है श्रुति स्मृति के मन्त्रानुष्ठान से देवता पूजन करने १८३ में हित स्नेह मान के यत्न करै वह तान्त्रिक है और नपुंसकसत्यवादी सुन्दर भूषण युक्त प्रिय बोलनेवाला १८४ सुकुल सुरूपको राजा राजमहल में रक्खै और दूसरे को मालिक न जाने स्वामि भक्त धर्म्म निष्ठ दृढाङ्ग १८५ बालक न हो मध्य अवस्था का हो सेवा में चतुरसम्पूर्ण छोटे बड़े काम करने में उद्यत १८६ आज्ञाकारी ऐसेमनुष्यको राजापरिचारक करै और राजा के समीप रहने वाले का नतिस्थान बोधक १८७ दण्ड और वेत्रको लिये ऐसे मनुष्य को उपासक करै और वीणासे निकले हुये सातस्वर और स्थान विभाग से १८८ उत्पन्नकरै संयोग विभाग अनुराग को जाने और सुस्वर और ताल सहित गावै १८९ वह नृत्यसहित गायकोंका मालिक होता है

और उसी तरह बाज़ारकी स्त्री निर्लज्जा भावसं-युत१९० श्रृङ्गार रस तंत्रज्ञा सुन्दराङ्गी मनोरमा नवीन ऊंचे कठोर कुचवाली मुस्कराती १९१ और जितने उनके अधिक हों वहभी उसी तरह चित्त के मोहने वाले हों ये सुसेवक हों तो राजा अपने हित के लिये रक्खे १९२ भाट उत्तम कवि और वेश दण्डधर चोव-दार राजकलांवत जो सदा उपकारक हों १९३ और दुर्गुण के कहने और अच्छा नाचने और किला ब-नाने बाग और कृत्रिम वन के बनाने वाले भांड १९४ गोलाके बनानेवाले गोलन्दाज़ बन्दूक के बनाने वाले छोटा यंत्र बारूत बाण गोला तलवार के करने वाले १९५ अनेकयंत्र शस्त्र अस्त्र धन्वा तरकश के बनाने वाले सोना रत्न आभूषण घर रथ बनानेवाले १९६ प-त्थर का बनाने वाला लोहकार मुलम्मेवाला कुम्हार तांबे का बनानेवाला बढ़ई सड़क बनाने वाला १९७ नाई धोबी वसफोड़ मेहतर हरकारे दर्ज़ी राज चि-ह्नधारी १९८ भेरी नगारा डङ्का शङ्ख बेत के शब्द से कवायद बनाने वाला१९९ मल्लाह खनने वालाव्याव किरात भार उठाने वाला शिकली जल और धान्य अन्नका लेचलने वाला २०० बाज़ार वाले गणिका बाजे वाले औरतार कपड़ा बुनने वाले पक्षी से जीविका करने वाले चित्रकार चर्मकार २०१ गृह के साफ़ करने वाले पानी मान्य वस्त्र शोधक शय्या वितान त्रिकोना के करनेवाले शासक २०२ सर्वान्वित द्रव्य

धप केकरने वाले और तम्बोली ये छोटे बड़े कामके करने वाले कार्य्यके माफ़िक योग्य हैं २०३ सत्य और परोपकार अतीव पुण्यतम हैं और राजा निरन्तर सेवक को आज्ञा युक्त करै २०४ जैसे सब पापों से हिंसा बड़ी है उसी तरह झूंठ बोलनाभी है इन दोनोंसे बड़ा पाप खराब भृत्योंका रखना है २०५ जब जो करने को उचित हो वह कहनेको प्रबोध न करै और थोड़ा कहे और बहुतकरै वह सद्भृत्य सुपूजित है २०६ पहर रात्रिरहे उठके गृह के कामों का बिचार करके उत्स-र्ग कर देवता का स्मरण कर स्नान करै २०७ डेढ़ मुहूर्त में प्रातःकृत्य को समाप्त करके सभामें जाके कार्य्य अकार्य्य का बिचारकरै २०८ बिना आज्ञाके द्वारपाल भीतर न जानेदे आज्ञा या कार्य्यको जानके भीतरजानेदे २०९ सभाके मध्यमें आयेहुयों को देखके दण्डधर राजासे कहै प्रणामकरेपीछे यथा स्थान बैठा-वे २१० तत्पश्चात राजगृहमें जाके राजाकी आज्ञा पाके निकटजाके यथान्याय राजा को दूसराविष्णु रूपजानके निकट जाय २११ राज सभामें प्रवेश कर चित्तके जाननेवाले के साथ स्वामी के मुखाब्जन में दृष्टि करकेअन्यत्र न ताकै २१२ जलती हुई अग्नि और क्रोध किये सर्पकी भांति शिक्षित मनुष्यप्राण धनेश्वर राजा को मानै २१३ हम कुछ नहीं हैं यह बिचारता हुआ यत्नपूर्व्वक राजाके निकट रहै और उसके पक्षको समर्थ और जो राजा कहैउसकोअच्छा

कहै २१४ और राजा की आज्ञासे परिनिश्चितअर्थ को कहै और सुख प्रबन्धवार्त्ता और वादियों के विचार में जो उचित हो वह कहै २१५ जानता हुआ भी शीघ्र स्वामी को उत्तर न दे सदा साधारण वेष रहके राजा के बुलाने पै हाथ जोड़ के कहै २१६ नमस्कार कर राजा के वचन को सुनके वस्त्र से मुंहढक के राजा की आज्ञामान अपना कार्य्य कहै २१७ नमस्कार कर आसन पै उसकी आज्ञासे सम्मुख बैठै और जोरसे हँसना खांसी थूकनानिन्दा २१८ जम्हाई देह तोड़ना अंगुली फोड़नात्यागै और राजा के दिये हुये स्थान पै आनन्द से बैठना २१९ प्रवीण बुद्धिमान अभिमानको त्यागै और आपत्काल और विपत्काल में और कार्य्य के समय के बीतने २२० और पूंछने पर भी हित कहै और शुभ बात कहै प्रिय यथार्थ सत्य धर्मार्थक बात कहै २२१ सामान्य वार्त्ता से राजा कोहित को जतावै और राजाकी कीर्त्ति और नीति फलको कहै २२२ और राजा से कहै कि आप दाता धार्मिक शूर नीतिमान हो तुम्हारे चित्त में अनीति कभी नहीं आती २२३ और जो जो राजा अनीति से नष्ट हुये हैं उनका राजा के सम्मुखकीर्त्तन करै सबराजों से अधिक और सबसे विशेष भी नकरै २२४ और देश काल का जानने वाला पराये के अर्थ को देश कालमें साधे जिससे पराये का अर्थ नष्ट न हो उसी तरह सदा कहै २२५ और कार्य्य के

ब्याजसे कभी प्रजाको न बुलावे जैसे सुखात्तसहोता से उसी तरह क्षुधा से पीड़ित हो मंत्री रहे २२६ और पण्डित अनत्थ सम्पन्न वृत्ति को न करै जिस कार्य्य में जो नियुक्त हो उसी कार्य्य में वह तत्पर हो २२७ अन्यके अधिकार के लेने की इच्छा न करै और न किसी की ईर्षा करै और न किसीकी न्यूनता करै अगर न्यूनता होती हो तो उसको न होने दे २२८ परोपकारसे और कोई मित्रकर नहींहे तुम्हारे कार्य कोकरैंगे ऐसाकहके बिलम्ब न करै २२६ करनेमें समर्थ हो तो देर न लगावै स्वामीका गुह्य कर्म्म और मन्त्र कोकभी प्रकाशित न करे २३० विद्वेष और विनाशको कभी न चिन्तना करै राजा परम शत्रु है इससे इच्छा पूर्वक न फिरे २३१ स्त्री याचक पापी वैरी निकाले हुयेके साथ सहवास एक सङ्ग काम करना और साथ को त्यागकरै २३२ और राजा के वेष भाषाके सदृश अनुकरण न करै औ बुद्धिमान मनुष्य धनी भी हो तो राजाके गुणों की स्पर्द्धा न करै २३३ अच्छे कामोंका जानने वाला राजाकी प्रीति और क्रोधको जानै और चित्तकी बात आकार चेष्टासे राजा के अभिप्राय को जानै २३४ और राजा के दियेहुये वस्त्र भूषण और चिह्नको सदा धारण करै और अपने कार्य्यको कभी वेशी राजासे सदा कहै २३५ राजा के लिये राजकृत वार्त्ताको सुनै और कहै और चार सूचकदोषसे राजा अन्यथा कहै तो २३६ मौन होके सुने और सत्यको

को भांति न जानै और राजा आपत्तिमें हो तो उसका त्याग न करै २३७ आदर पूर्वक जिसका अन्न एक बार खाय उसका हित सदा चाहै इससे स्वामी को सदा मानना चाहिये २३८ समय पै बड़ी सेवा से अप्रधान प्रधान होता है और सेवाके छोड़ने से प्रधान भी अप्रधान होजाता है २३९ सदा सेवा में रत सेवक राजाको प्रिय होता है अपने अपने कार्य्यको सुमन हो अधिकारी करैं २४० जल्दीसे किसी कामको न करै और राजाके कहने से नीचकाम को भी करै उसकार्य्यकारक के अभाव में सदा इसी तरह करना चाहिये २४१ समयपर जो नीच कामभी उचितहोतो उत्तम के करनेकोयोग्यहै जिससे राजा प्रसन्नहो उसको अनुचित न समझे २४२ अपने अधिकार की बड़ाई राजा को न देखावै और अहल्कार आपसमें ईर्षा न करके भेद को न प्राप्त हों २४३ राजा करके अधिकारपै नियुक्त अधिकारी अपने अधिकार की रक्षा के लिये अधिकारी और राजा सदूत्तहोरहैं २४४ जहां ऐसा होता है वहां बड़ी लक्ष्मी आके प्राप्तहोती है और अन्याधिकार के वृत्तान्त को सुना भी हो तो न कहै २४५ राजा अन्य के मुखसे दूसरे के वृत्तान्तको कभीन सुनै और अधिकारी हित अनहितको राजासे न कहै२४६ गुप्त वैरीका दासरूप होके जो राजा रहता है और जो राजा सचिवों के मुखसे हित अनहित को नहीं सुनता २४७ वह चोररूपहो प्रजाका धनहारक है और

जो मन्त्री राजपुत्रों से सुन्दर व्यवहार पूंछ के २४८
उनके साथ विरोध करतेहैं वे गुप्तचोरहैं और बालक
भी राजपुत्र हो तो मन्त्री उनकाभी अनादरनकरैं २४९
सदा मीठे वचनसे यत्न पूर्व्वक राजपुत्रों को समझावैं
और उनके कुचालको कभी राजा से न कहैं २५० स्त्री
पुत्रका मोह बलवान् है उसकी निन्दा उत्तम नहींहोती
और राजा का अवश्यतर कार्य्य जो प्राणका संशय
हो २५१ राजासे कहै कि आप आज्ञादें तो मैं इसको
निश्चय पूरा करूंगा इस प्रकार राजासे कहके भा-
क्ति पूर्व्वक शीघ्र उसके करने में यत्न करैं २५२ राजा
को बड़े काम केलिये सेवक प्राण देदे भृत्य कुटुम्ब के
पोषण के लिये ऐसा करै अन्यथा न करै २५३ सम्पू-
र्ण भृत्य धन हर होते हैं राजा प्राण हर है और युद्ध आ-
दि बड़े बड़े कामों में राजा भृत्य के प्राण लेता है २५४
अन्यथा सेवक राजधनको नहीं लेसक्ता अन्यथा धनले
तो राजा सेवक दोनों स्वनाशक होते हैं २५५ सम्पूर्ण
अहल्कार पहिले राजा उसकेपीछे युवराज कोमानैं और
छोटे अहल्कार नवों मन्त्रियोंको और अन्य छोटे२ अ-
हल्कार अन्य अधिकारियोंको मानैं २५६ दश हजारी
मन्त्री और उससे न्यूनसहस्र पति राजाके साथ कभी
न खेलै क्रीड़ा से विरोध होताहै २५७ और राजा की
स्त्री कन्या भी होतो उस का अनादर न करै और राजा
के सम्बन्धी और सुहृद यथा योग्य पूजनीय हैं २५८
और अहल्कार राजा का बुलाया हुआ शत बड़े

कामों को छोड़के शीघ्र जाय और राजा का गुप्त
कार्य्य अपने मित्र से भी कभी न कहै २५९ मज़दूरी
बिना राज द्रव्य की चाहना न करै राजा की आज्ञा
बिना कुछकाम न करै मासिक का २६० और मन्त्री
द्रव्य के लोभसे किसीके कार्य्यको न काटै वह कभी
अपनी स्त्री पुत्र धन प्राण से राजा की रक्षा करता
है २६१ घूस किसी से न ले और राजाको और तरह
न समझावै क्योंकि अन्यथा दण्ड देनेवाले और प्रबल
दण्ड नृप को २६२ राज्यकी रक्षा के लिये एकान्तमें
राजाको समझावै राजा का और लोकका हित अ-
हित जिससे हो वैसाकरै २६३ नवीनकर शुल्कआदि
जिससे लोकको उद्वेगहो गुण नीति बल द्वेषी कुलीन
भी हो अधार्म्मिक है २६४ राज्य बिनाशक राजा भी
हो तो उसका त्यागकरै और उसके पद में राज्य कुल
के गुण युक्त किसी दूसरे को पुरोहित २६५ प्रधानों
की सम्मति से राज्य की रक्षा के लिये अस्त्र धारण
कर राजा से दूर जहां अस्त्रपात न हो वह वहां सदा
रहै २६६ शस्त्रधारी राजा से दश हाथ पै और नृप
प्रिय मन्त्री और लेखक रहैं २६७ सेनापति बिना
शस्त्रधारी सभा में जायँ और सबसेबहुत श्रेष्ठ पुरोहित
और सबसे श्रेष्ठ सेनापति है २६८ राजाके मित्र और
सम्बन्धी समान हैं और मन्त्री उत्तमहैं अधिकारीगण
मध्यम और दर्शक लेखक अधमहैं २६९ सबसेअधम
भृत्य और इसीतरह परिचारगण महाअधम हैं और

परिचारगणसे न्यून नीच साधकहैं २७० आगेसे गमन उत्थान अर्थन आसनपै बैठाना कुशलप्रश्न सुस्मित दर्शन कोक्रमसे२७१राजा पुरोहितआदि और अन्य अधि-कारिगणों को निरालससभास्थ अपना स्नेह दिखावै २७२विद्यावानोंमें शरत्कालके चन्द्रमाके समान और शत्रुमें गर्म्मीके सूर्य्यके समान प्रजाओंमें वसन्तके सूर्य्य के समान तीन प्रकार राजा को होना चाहिये २७३ जो ब्राह्मण भिन्न में राजा कोमल होता है उस को नीच जीत लेते हैं जैसे हस्थिवान को हाथी जीत लेते हैं २७४ और भृत्य आदि करके जो परिहास और क्रीडन नहीं कर्त्तव्य है ये दोनों अपमान का स्थान और राजा को भय देनेवाले होते हैं २७५ वे राजा से समय पाके अपना २ स्वार्थ कहें स्वकार्य में शत्रु वक्तृत्व से सब स्वार्थ पर होते हैं २७६ जो विकल्प करता अथवा राजा का अपमान करता और राजा के वचन को टाल देता राजाके खाने की वस्तु खाय वह अपने अधिकार पर नहीं रहता २७७ राजा के मंत्री को तोड़दे और उसकी बुराइयों को कहै राजा का ऐसावेषबनाके राजाको धोखादे २७८ और राजा की स्त्रियों का सङ्गकरै और राजा क्रोध करै तो हँसै निर्लज्जहोके बकै सभा २ में राजा निरादरकरै २७९ राजा की आज्ञा को टाल दे और अकर्म्म में भय न करै ये दोष परिहास असम क्रीडन उत्पन्न राजा में होतेहैं २८० सेवक विनानृपके लिखने के कहीं कोई

काम न करै और छोटा कामहो या बड़ा बिनालिखे
राजा न प्रसिद्ध करै २८१ भूल जाना पुरुष का धर्म्म
है इससे लिखना मुख्य है और जो बिना लिखे काम
करै वह बिना लिखे आज्ञा दे २८२ राज कार्य्य में
राजा और भृत्य दो चोरहैं राजाके चिह्नसे लिखना
राजा है राजा राजा नहीं है २८३ मुहर सहित राजा
का लेख सबसे उत्तमोत्तमहै राजा का लिखा उत्तमहै
और मन्त्री आदिका लेख मध्यमहै २८४ पुरबासियों
का लेख अधमहै ये सब साधन योग्य हैं और जिन २
कार्य्य में राजा जिसको अधिकारी नियत करै २८५
अनुक्रमसे अमात्य युवराजादि दिन मास वर्ष ऋतु वर्ष
का वृत्तान्त २८६ जिस कार्य्य के लिये जो लेख हो
उसको भलीभांति राजा को समझा और राज मुहर
से युक्त चिह्न अपने पास रक्खे २८७ बहुत काल के
बीतनेपै विस्मरण और भ्रान्ति मनुष्यों को होती है
अनुभूत बातोंके स्मरण के लिये प्रथम से लिखना
बनाया है २८८ यत्नसे बचन करके वर्णस्वर विचि-
ह्नित अक्षरों से वृत्त आय अर्थात् लाभ खर्च लेख्य
है ये दो प्रकारके हैं २८९ व्यवहार क्रिया के दो या
बहुत से भेदहैं स्वार्थानुरूप साध्यार्थ उत्तर क्रिया
सहित २९० जो पत्र निश्चय करके लिखाजाय वह
जयपत्र कहाताहै सेनापति सेवक देशपाल आदि को
२९१ जो कार्य्यको आज्ञा दे वह आज्ञापत्रहै ऋत्विक
पुरोहित आचार्य्य और अन्य पूजितों को २९२ जो

कार्य्य निवेदन करैं वह प्रज्ञापन पत्रहै और सबकोई हमारी आज्ञा से निश्चय करके सुनो २९३ अपने हाथमें प्राप्त कालके सदृश इस शासन पत्रको समझो और जिस राजाके लिखने से देश आदिको दे २९४ सेवा शौर्य्यादि से तुष्ट राजादे वह प्रसाद लिखित है भोगके लिये या करके लिये जो पत्र वह उपायन पत्रहै २९५ कोई पत्र पुरुषावधिक या कालावधिक जो भाईआदि चाहैं तो परस्पर अपनी रुचिके सदृश २९६ विभाग पत्रकरैं उसको भागलेख्य कहैहैं और गृह और भूमि देके जो पत्र लिखते हैं वह प्रकाशक पत्रहै२९७ जो काटने के योग्य और कटानेके योग्य न हो वह दान लेख्यहै गृह और क्षेत्र आदि को बेंच तुल्यमोलके प्रमाणसे युक्त २९८ जोपत्र लिखा जाता है वह क्रय लेख्यहै और जङ्गम और स्थावर धन को गिरों रखके जो लेख लिखा जाता हैं वह खरीदपत्र है २९९ ग्राम व देश जो सत्य लेख परस्पर कहते हैं राजा विरोध और धर्म्मार्थ लिखें वह संवित्तपत्र है ३०० व्याज रुपया लेके गवाहों के साथ जो पत्र लिखैं अथवा लिखावैं वह ऋण पत्र कहाता है ३०१ अपराध के दूर होने और बुधोंके प्रायश्चित्त होनेपै गवाहों सहित जोपत्र दियाजाय वह शुद्धिपत्र कहाता है ३०२ अपने २ धनके अंशको मिलाके जो व्यवहार करते हैं और उसमें जो पत्र लिखा जाता है वह सामयिक पत्रहै ३०३ सभ्य अधिकारी प्रकृति सभा-

सद थे सब मिलके जो पत्र आपसमें लिखे दें वह स-म्मति पत्रहै ३०४ अपने वृत्त के जानने के लिये जो परस्पर लिखते हैं श्रीपर्व्व आदि में मङ्गलपद पूर्व्वो-त्तर पक्ष सहित ३०५ जिसमें सन्देह न हो अर्त्थ खु-लासा हो और पद और अक्षर स्पष्ट हों अन्य निवे-धक अपने या परायेके पिता आदिके नामसेयुक्त ३०६ एक दो बहुवचन से यथा योग्य स्तुति से युक्त वर्ष मास पक्ष नाम जाति आदिसे चिह्नित ३०७ कार्य्य का बोध करानेवाला सम्बन्ध सहित नति आशीर्व्वाद पूर्व्वक स्वामि सेवक सेव्यार्त्थ क्षेमपत्र कहाता है ३०८ इन गुणोंसे युक्त पीड़ा कारक सूचक और किसीके बोधन के लिये होवै वह अर्जी पत्र कहाता है ३०९ संक्षेप से स्वभाव वृत्तका कहना लक्षणसे युक्त और संक्षेप से लाभ खर्च का बोधक कहैं हैं ३१० व्याप्य व्यापक भेदसे मोल माल आदिसेपृथक् २ विशेष संज्ञा सहित यथार्त्थ बहुभेद युक्त ३११ वर्ष वर्ष मास मास और दिन दिन में सुवर्ण पशु धान्य आदि जिस के आधीनहो वह आय संज्ञकहै ३१२ और जो धन परा धीनकियाहो वहव्यय संज्ञकहै और नीचे पुराना गड़ा हुआ धन भी आय संज्ञकहै ३१३ खर्च दो प्रकारकाहै एक भोग किया या दिया हुआ निश्चितान्य स्वा-मिक और जिसका कोई मालिक हो ३१४ और अ-पने निश्चयसे जो संचय कियाहो इस तरह संचित धन तीन प्रकारकाहै और जिस धनका अन्य स्वामी

निश्चित हुआहै वहभी तीन प्रकारहै ३१५ औपनि-
ध्य १ याचितक २ औत्तमर्णिक ३ यह तीन प्रकारके
संचित धनहैं विश्वास सहित जो अच्छे लोग रखतेहैं
वह औपनिध्य कहाता है ३१६ जिस धन से अन्य
के अलङ्कार आदि ले उस को याचितक धन
कहते हैं और व्याज सहित जिस को धन दे वह
औत्तमर्णिक धन कहाताहै ३१७ और जिसका स्वामी
ज्ञात न हो ऐसा निधिसार्थ आदि में मिले वह साह
जिक अपना धनहै ३१८ महीना अथवा बर्ष दिनमें जो
निश्चय करके धन उत्पन्न हो यह साहजिक आय
भाइयों का भाग स्ववृत्तिसे है ३१९ जो दाय वही परि-
ग्रहहै और प्रकृष्ट स्वभावजहै और पूजन आदि प्राप्ति
मौल्याधिक कुसीदहै३२० पारितोषिक सेवा प्राप्तवीजि
ताद्यजो धन इसमें अपना स्वत्व रहता है इससे अन्यत
साहजिक कहलाताहै ३२१ पूर्व्व बर्ष की बाकी और
वर्तमानसालकी बाकी इसतरह स्वाधीन और सञ्चि-
त दोप्रकार का धन है ३२२ और दोप्रकारके धनसे
राजान्तर भेदसे साहजिक धन अधिकहै और भूमि
भागसे उत्पन्न पार्थिवआय कहाताहै ३२३ सदैव कृ-
त्रिम जल से देश ग्राम पुर करके अलगर बहुत मध्य
अल्प फलसे भागमें भेदहोताहै ३२४ शुल्क दण्ड खानि
कर भाटक भेंट इनको लेख विशारद कर संज्ञा कहते
हैं ३२५ जिस निमित्त जो जमाहो तन्नाम पूर्व्वकखर्च
होताहै इसप्रकारव्याप्य व्यापक संयुतव्ययकहा ३२६

वह भी पुनरावर्त्तक और स्वत्व निवर्त्तक दो प्रकार का है उसमें भी उपनिधीकृत और विनिमयात्मक ३२७ ब्याज बिन ब्याज अधमर्ण आहृत और भूमिमें रक्खीहुई उपनिधी कृत अन्यत्र स्थित उपनिधि ३२८ लिये हुये मोल आदिसे प्राप्त विनिमयी कृत कहाताहै और ब्याज बिन ब्याज दियाहुआ आधमर्णिक कहाताहै ३२९ सब्याज कर्ज्ज दत्त और बिना ब्याजदिया हुआ उधार और स्वत्व निवर्त्तक ऐहिक पारलौकिक यह दोप्रकारके हैं ३३० और प्रतिदान पारितोष्य वेतन यहि लौकिक भोग्य चार तरहका पारलौकिक है और इसके अनन्त भेद हैं ३३१ बाकी में पुनरावर्त्तक व्ययको नित्य योजना करे मोल करके जो दिया जाय वह प्रतिदान कहाता है ३३२ सेवा भूरतासे सन्तुष्ट होके जो दे वह पारितोषिक कहाताहै और मज़दूरी के बदले जो दियाजाय वह वेतनहै ३३३ धान्य वस्त्र गृह बाग गऊ गज अर्थ विद्या राज्यके मिलनेके अर्थ और धन प्राप्तिके लिये ३३४ और रक्षा के लिये जो खर्चकिया जाय यह सब उपभोग्य कहाता है सोना चांदी रत्न अशर्फी शाला अर्थात् गृह ३३५ रथ अश्व गो गज ऊंट बकरा भेंडी भेंडाका पृथक् २ गृह बाजा शस्त्र अस्त्र वस्त्र धान्य और अन्य सामग्री ३३६ मन्त्री शिल्पी नाट्य वैद्य मृग पाक्षियोंकी रहनेकी जगहशाला और उसके लिये खर्च व्यय कहाता है ३३७ जप होम पूजन दानसे चार

प्रकारका पारलौकिक है और पुनर्यात्त और निवृत्त ये विशेष आय व्यय हैं ३३८ आवर्त्तक और निवर्त्ती व्यय आय पृथक् २ दो प्रकारके हैं आवर्त्तक को छोड़के और अन्य अन्य आय व्ययको लेखक लिखे ३३९ मोल और कर्ज्ज को छोड़ अन्य नहीं फिरता द्रव्य लिखके उसको दे और लेके आप लिखे ३४० आय व्ययका लिखने वाला न घटै न बढ़ै और हेतु प्रमाण सम्बन्ध कार्य्याङ्ग व्याप्य व्यापकसे ३४१ आय अवसर भिन्नहै और व्यय पृथक् २ मान संख्या उन्मान परिमाण में ३४२ कहीं संख्या कहीं मान उन्मान परिमाण और उसके जाननेवालों के व्यवहार के लिये कहींसब एकही जगह होतेहैं ३४३ अंगुल आदि मान उन्मान तराजू पात्रमान परिमाण और एकदो आदि संख्या ३४४ जहां जैसा व्यवहार हो वहां वैसी कल्पना करै और चांदी सोना तांबा आदिके व्यवहा-रार्थ मुद्रित ३४५ और व्यवहारके लिये कौड़ीआदि रत्नान्त द्रव्य कहातेहैं और पशुआदि तृणान्त धन सं-ज्ञकहैं ३४६ व्यवहार में लगायाहुआसोना अमूल्यता को प्राप्त होता है और कारण के योगसे पृथ्वीमें पदार्थ होता है ३४७ जिस व्ययसे जो कार्य्य सिद्धहो वह उसका मूल्यहै कठिन या सुलभ से गुण अथवा अगुण से उसका मूल्य रक्खै ३४८ जिस पदार्थ की जैसी चाहनाहो उसी तरह उसका कम अधिक मोल हुआहै मणि और धातुका कहींहीन मूल्य न कल्प-

ना करै २४९ इनके मोलकी हानि राजाके दोष से होती है दीघ चतुर्भाग भूत पत्र में लिखके बलिको लिखे २५० यथामात्र अभ्यन्तर्गता अहंगा पादगामिनी व्याजक द्याद्य के लेखमें यह पद संज्ञिता करै २५१ इनसबमें अभ्यन्तर्गता ग्रंथहै व्यंग्रगा वासन व्यंप्रमाता दस उसी तरह अहंगा और पादगा हैं २५२ अपनेमें स्वभेद औरसदृश पदमें सदृश आरम्भ पूर्णता और सदृश ये दोनों सदा पदयाहैं २५३ राजा अपना बिचार और अपने चिह्नके लेखको देख विचारके लिखनेके सदृश दस्तखत करै २५४ मंत्री प्राड्विवाक पण्डित दूत इनका लेख स्वाविरुद्धहै ये पहिले लिखें २५५ यह लिखना दुरुस्तहै ऐसा पहिले अमात्य लिखै अच्छी तरह बिचार किया ऐसा दस्तखत सुमंत्रकरै २५६ सत्य और यथार्थहै ऐसा प्रधान लिखै यह अङ्गीकार करने के योग्य है ऐसा नायक लिखै २५७ यह अंगी कर्तव्यहै ऐसा युवराज दस्तखत करै यहलेख स्वाभिमत है पुरोहित ऐसा लिखै २५८ अपनी २ मुहरका चिह्न लेख के अन्तमें करैं तदपश्चात राजा अंगीकार किया यह लिख के अपनी मुहर करै २५९ और बहुत से कामों में राजा लगाहो अच्छी तरह देखनेमें समर्थ न हो तो युवराज आदिसे उस लेखको दिखावे २६० अध्यक्ष मंत्री युवराज आदि सहित लिखैं और राजा अच्छी तरह देखने में समर्थ न हो तो देखा यह लिखे २६१ नाम आपाम आयको आदि से पश्चात व्ययको लिखै

और व्ययको दाहिनी ओर लिखै३६२बाम ऊर्ध्वभाग क्रमसे दोनों पत्र व्यापक व्याप्यहैं आधाराधेय रूप अथवा कालार्त्थ हैं यह गणितहै ३६३ क्रमसे नीचे बाईं तरफ व्यापक को लिखै और व्याप्य के मूल्य मानादि उसकी पंक्तिमें रक्खै ३६४ ऊर्ध्वगका गणित क्रमसे नीचे की पंक्तिमें होता है जहां व्यापक व्याप्य व्यापकत्त्वमें संस्थितहो३६५ व्यापक बहु वृत्तिक और व्याप्य न्यूनवृत्तिक है व्याप्य अवयव और व्यापक अवयवी है ३६६ सजाति का लिखन समुदायसे करै यथा प्राप्त लिखन आद्यको समुदाय से न लिखै ३६७ व्यापक अथवा पदार्त्थ जहां स्थलहो तहां व्याप्य आय व्यय को काल से सर्व्वदा करैं ३६८ यह स्थान टिप्पणिकाहै उस्से अन्य सङ्घटिप्पण है वहां विशेष संज्ञक व्यापक है ३६९ कितना जमा है कितना खर्च और कितना द्रव्यशेष कितनाविशिष्ट संज्ञकहै इनका सम्बिज्ञान होताहै ३७० जैसे जो प्राप्तहो प्रथम उस्को लिखै पीछे से उसका हिसाब लिखैस्थान और द्रव्य टिप्पण से अधिक संज्ञकहै३७१ बाकी जमा खर्च का विज्ञान क्रमसे लेखसे होताहै और स्थान जमा खर्च का विज्ञान व्यापक स्थान से होता है ३७२ पदार्त्थ के स्थान होते और पदार्थ स्थान के होते व्याप्य लिपि आदि ये मनुष्योंके लेखमें यथेष्टहैं ३७३ निश्चितान्य स्वामिक जो अन्य का हो और जो विशिष्ट संज्ञक और पुनरावर्त्त क ३७४ और पर-

लोकांत खर्च वही अंतका व्यापक है इच्छासे गणित कर उसका प्रमाण फलहोताहै ३७५ प्रमाणके भागसे जो लब्धहो वही मनुष्योंका इच्छा फल होताहै और संक्षेप से लेख लेख्य कहाता और सबका स्मृति साधनहै ३७६ गुञ्जा मासा कर्ष पदार्द्ध प्रस्थ इनमें एक से दूसरा दशगुना अधिकहै और पांच प्रस्थका एक आढ़क होताहै ३७७ आठ आढ़कका अर्म्मण और बीस अर्म्मणका खारी यहदेश २ में भिन्नहै३७८पचीं-गुला वटपात्र और चार अंगुलका विस्तृत प्रस्थ पाद परिमाणमेंहै ३७९ जिसतरह ऊपरका अंक लिखा जाय उसीतरह बाईं क्रमसे स्वदश गुणित परार्द्धान्त कहे हैं ३८०कालकीदुर्गमताके कारणसंख्याकरनेके योग्य नहीं ब्रह्माके द्विपरार्द्धके मनुष्यों ने ब्रह्मा और देवताकी आयु कहीहै ३८१ एकदश शतसहस्र अयुत नियुतप्रयुत कोटि अर्ब्बुद अब्ज खर्ब्ब ३८२ निखर्ब्ब पद्मशङ्ख अब्धि मध्य अन्त परार्द्ध यह कालज्ञान चान्द्र सौर सावन के भेदसे तीनप्रकार का है ३८३ मजदूरी के देने में सौरमान और ब्याजमें चान्द्रमान औररो-जमर्राकी मजदूरी देने और अवधिमें सावन मास ग्राह्यहै ३८४ कार्यमान कालमान कार्य्यकाल यह तीन प्रकारका है मजदूरी में जैसी बोली कहीहो कहै३८५ यह बोझा वहां पहुंचा दो इतनी मजदूरी देंगे यह कार्य्यमान है ३८६ वर्ष वर्ष महीने महीने दिन दिनमें इतनी मजदूरी तुमको देंगे यह कालका है ३८७इतने

कालमें यह काम तुमने किया इसको इतनी मजदूरी देंगे यह कार्य्य कालमिता है ३८८ मजदूरीका लोप न करै और मजदूरी का विलम्ब करै अवश्य पोषण के योग्य करै वह मध्याभृति है ३८९ इनमें परिपोष्य भृति सबसे श्रेष्ठहै यह समाज्ञाच्छादनार्त्थका है जिससे एकका पोषण हो वह हीन संज्ञिका है ३९० जैसे २ मालिक गुणवान् हो उसी तरह सेवक मजदूरी करता है इसीतरह राजा अपने हित के लिये करै ३९१ अवश्य पोष्य वर्ग का भरण भृतक से होता है इस कारण उसके योग्य मजदूरी नियत करै ३९२ जो भृत्य हीन भृतक हो उनको अपने आप शत्रुबनाना है वे परायेके साधक छिद्र कोश प्रजाके हरनेवाले हैं ३९३ अन्नाच्छादन मात्र करके जो शूद्रकीमजदूरी करताहै उसका भागी उसका पोषक होताहै ३९४और ब्राह्मण जिस धन को हरलेताहै वह परलोकद है शूद्र का दिया हुआ भी धन केवल नरक के लियेहै ३९५ मन्द मध्य शीघ्र तीनप्रकार के सेवकहैं और समामध्या श्रेष्ठा तीन तरहकी क्रमसे उनकी मजदूरीहै ३९६सेवक को गृह कार्य्य के लिये दिनमें एक पहर की छुट्टीदे रातमें तीन पहर को और दिनकी मजदूरी में दो घराटे की छुट्टीदे ३९७ राजा सेवकों के उत्सवके दिनछोड़के मिहनत करावै और अति आवश्यक कार्य्य होतो उत्सवके दिनभी कार्य्यकरावै परन्तु श्राद्ध के दिन कार्य्य न करावै ३९८ और सेवक बीमार होतो तीन

महीने तक एकचौथाई कम तनख्वाह दे और पांच वर्षका नौकरहो कम व बेश कर के मासिक दे ३९९ और बहुत बीमार होतो छः महीनेतकका मासिकदे इसके पीछे कुछ न देऔर एकसप्ताह तक जो बीमार होतो कुछ मासिक न काटै ४०० और जो सेवक बार२ बीमार होतो उसकी जगह दूसरेको रक्खे औरसेवक बड़ा गुणी बीमार होतो आधी नौकरी दे ४०१ बर्ष दिनमें सेवाबिनाभी राजा एक पक्षकी छुट्टीदे और जो चवालीस बर्षतक सेवाकरै ४०२ तिससे सेवाबिना राजा उसको मजूरी काआधादे और जब तक वह जीवै तब तक योग्यहो तो उसकाआधादे ४०३अथवा सुशीला स्त्री या कन्याको अपने कल्याण के लिये मासिक काअष्टमांश पारितोषिक भृत्यको दे ४०४ अथवा कार्य्यका अष्टमांश देया कार्य्य अधिककिया हो और स्वामि कार्य्यमें नष्टहुआ होतो उसके पुत्रको उसकी नौकरी दे४०५और जो बालक में उससेअधिक गुणहो उसीतरह उसकी मजदूरी मुकर्रर करै छठाअंश या आठवां अंश प्राचीन भृत्यकोदे ४०६ उसके पुत्र को आधीतनख्वाह दे दोतीन वर्षके पीछे पूरामासिक दे और कटु वाक्यो प्रबल दण्ड से राजा सात्विक दे ४०७ राजा अपमान और शत्रुता से शिक्षाकरै और उसीतरह मजूरी से पोषण कर मानसे बढावै ४०८ कोमल वचन शान्ति कराने पै जो सेवक राजाका त्याग नहींकरता ऐसे यथागुण अपनेभृत्योंको राजा

प्रसन्नरक्खे ४०९ किसीको शाकदेकर किसीको फल किसीको शुद्ध दृष्टिसे किसीको हास्यसे किसीको कोमल वचनसे प्रसन्नकरै ४१० सुन्दर भोजन सुन्दर वस्त्र ताम्बूल धन और कुशल प्रश्न और अधिकार के देनेसे किसीको प्रसन्न करै ४११ किसीको वाहन किसीको योग्याभरण छत्र आतपत्र चमर दीपिका के देनेसे किसीको प्रसन्न रक्खे ४१२ समानमस्कारमान समीप गमन सत्कार ज्ञान आदर शम से ४१३ प्रेम समीप बासअपने आधे आसन के देने सम्पूर्णासन के दान स्तुति उपकार कीर्त्तन ४१४ जिसकार्य्यमें जो मुकर्र हो उनके कार्य्यके अङ्कसे अङ्कितवह चिह्न लोह तांबा पीतल चांदी से बनावे ४१५ सुवर्ण रत्नका यथायोग्य स्वलांछन से और दूरसे जानने के लिये वस्त्र और मुकुट ४१६ बाजा और वाहन के भेदसेभृत्यों का अलग २ करै और अपना विशेष चिह्न राजा किसीको न दे ४१७ पुरोहित आदि सब दश ब्राह्मण हैं उनके अभाव में क्षत्रिय योज्यहैऔरक्षत्रियकेअभाव में वैश्यकी योजना करै ४१८ राजा गुणवान् शूद्रको कभी न युक्त करै क्षत्रिय भागग्राही और साहसाधिप है ४१९ ग्रामका रक्षक ब्राह्मण औ हिसाब लिखने वाला कायस्थ महसूल लेनेवाला वैश्य और द्वारपाल शूद्र को करै ४२० क्षत्रिय को सेनापति करै और क्षत्रिय के अभाव में ब्राह्मण को सेनापति बनावै और कादर वैश्य और शूद्रको कभी सेनापति न करै ४२१

सब जाति में जो शूर हो वहीसेनापतियोग्य है यवन अर्थात मुसल्मान को सेनापति न करै ४२२ जिसवर्ण का राजा होता है वह वर्ण सुखको प्राप्त होताहै वह उपकार को न मानै न सेवन से प्रसन्न होता है ४२३ कथान्तर में न स्मरण करै शङ्का करै लखै जिसका क्रोध न जाय ऐसे राजाको सेवक त्यागकरै ४२४ युवराजआदिका लक्षण और कृत्य संक्षेप सेकहा ४२५॥

इतिश्रीशुक्रनीतौयुवराजादिद्वितीयोऽध्यायः २॥

शुक्रनीति भाषा॥

तीसरा अध्याय॥

अथसबमें साधारण नीति शास्त्र कहतेहैं सबप्रवृत्ति सब भूतोंको सुखके लिये होती है १ बिना धर्म्म सुख नहींहोता इस कारण धर्म्म तत्पर होय त्रिवर्गअर्थात धर्म्मार्थ काम शून्य आरम्भनहीं इससे इनके अविरोध से इनका सेवन करै २ प्रति पद धर्म्महीमें चले वह अध्यस रोम नख दाढी रखके निर्म्मल चरणारलकेगृह ऐसे शौचहैं ३ स्नान शील सुगन्धयुत सुवेष नम्र उज्ज्वल सदा रत्न सिद्धमन्त्र महौषधी को धारण किये ४ आतपत्र अर्थात छतुरी जूता सहित चार नेत्र हों दिन में फिरतेहैं और रात्रिमें नाशक कार्य्य में दण्डले मौली सहायवान होताहै ५ वेगयुक्तहो अन्य कार्य्य न करै और बलसे वेगको नरोकै इतर दूरगहो भक्तिपूर्व्वक कल्याण मित्र की सेवा करै ६ हिंसा चोरी अन्यथा काम चुगली कठोर बचन झूठ पदमें व्यर्थद्रोह चिंता अन्यके नेत्रका फेरना ७ दशप्रकारके पाप कर्मोंको काय वाक् मनसे त्याग करै शक्ति से अवृत्तिव्याधित शोकार्त्त का अनुवर्त्तन करै ८ कीटसे चेंटी तक सब जीवोंको अपनेही समान जानै अपकार करनेवाले शत्रु में भी उपकार करै९सम्पत्ति और विपत्ति में भी

एक मन हो कारण से क्रोध करै फल से नहीं काल
में हितमित कहै जो अविसम्वादी और कोमल हो १०
पहिले कहने वाला सुमुख सुशील करुणा से कोमल
एक सुखी सर्वत्र नहीं विप्रवासित न शङ्कित ११ किसी
को अपना शत्रु न अपनेको किसी का शत्रु प्रकाशित
करै और अपमान और प्रभु की निस्स्नेहता का
प्रकाश न करै १२ जन के आशय को देखके जो
जिसतरह प्रसन्न होता हो परारांधन पण्डित उसके
साथ वैसाही करै १३ न इन्द्रियों को बहुत पीड़ादे न
उनका बहुत पोषण करै प्रमाथी इन्द्रिय जबरदस्ती
मनको हरतीहैं १४ मृग हाथी पतङ्ग भ्रमर मछली ये
पांच शब्दस्पर्श रूपरस गन्धसे मारे जाते हैं १५ इनमें
के स्त्री का स्पर्श मुनिके मनको भी हरता है इससे
अप्रमत्तहो यथोचित विषयोंका सेवन करै १६ माता
बहिन कन्याकेभी साथ एकान्त में वास न करै यथा
सम्बन्ध उसको बलाके आभाषण आप्रवास न करै १७
अपनी हो या परकीया हो शुभगी भर्थानि इसतरह
कहै स्त्री अन्य पुरुष के साथ वास और स्पष्टभाषण
न करै १८ भर्त्ता पिता राजा पुत्र श्वशुर बान्धवोंका
छोड़ सामान्की स्वतन्त्रता दूसरे गृह में वास स्त्री न
करै १९ स्त्रियोंको गृहकृत्यबिना सामान्की स्वत-
न्त्रता न दे चण्ड खंड दुःशील अकाम परदेशी २०
दरिद्र रोगी अन्य स्त्री रत ऐसे पति को देखके स्त्री
विरक्ताहो अथवा अन्यको पतिमनावै २१ इन दुर्गुणों

को छोड़के यत्न पूर्वक स्त्रियोंकी रक्षा करै और वस्त्र अन्न भक्षण प्रेम कोमल वचन से शक्तिके सदृश दे २२ अपनी अति नैकट्यसे स्त्री और पुत्रकी रक्षाकरै चैत्य पूज्यध्वजा स्वच्छाया में भस्म अमङ्गलहै २३ शर्करा लोष्ठ वलि स्नान भूकाआक्रमण न करै नदीको बाहु से न तरै बड़ी अग्निके पास न जाय २४ सन्दिग्धनाव और वृक्ष पर दुष्ट यानकी तरह न चढ़ै नाकको बार बार न खिकोड़ै और अनायास पृथ्वीको न लिखै २५ दोनों हाथ मिला के शिर न खुजलावै और अङ्गों से निष्फलकी चेष्टा न करै शीतरहित मुंह न बिगाड़ै २६ देह वचन चित्तकी चेष्टाको श्रमकष्ट से निवृत्त करै ऊपर जङ्घा उठाके देरतक न ठहरै और रातको वृक्षपर न चढ़ै २७ उसीतरह चबूतरा अङ्गण चौराहा सुरालय शून्यगृह शून्य जङ्गल श्मशानको दिनमें न जाय २८ सर्वथा सूर्यको न देखै और शिर पर बोझा न उठावै और विस्तृत छोटी जलती अशुद्ध अप्रिय वस्तुओं को न देखै २९ सन्ध्या में भोजन स्त्रीशयन अध्ययन चिन्तन मद्य विक्रय सन्धानदानदेना लेना न करै ३० बुद्धिमान को सब चेष्टामें लोकही आचार्य्य है इससे परीक्षक लोकके सदृश करै ३१ राजा देश कुल ज्ञाति सद्धर्म को दूषित न करै समर्थ भी लौकिकाचार को मनसे भी न नांघे ३२ अयोग्यक्रियाहो याकहाहो बल और हेतुसे उद्धार न करै औरप्रत्यक्षदुःख शाके कहने वाले विरले मनुष्यहैं ३३ लोक और शास्त्रसे जानके

त्याज्यका त्याग करै नय सङ्काश अनय को मनसे भी
न विचारै ३४ मैं सहस्रापराधी हूं एक अच्छे काम
से क्याहोगा अघको मानके थोड़ा भी विचार न करै
बूंदसे घड़ा पूराहोता है ३५ इस समय मेरे रात दिन
कैसे बीततेहैं यह जानके दुःखी न हो नित्यही सन्नि-
हितस्मृति हो ३६ तर्क समास हेतु आदिके लिये अपनी
इच्छा को छोड़के स्तुति अर्थवाद को छोड़के यत्न-
पूर्वक सारका ग्रहण करै ३७ धर्म तत्त्व गहन है इससे
उसकी सेवा करके श्रुतिस्मृति पुराणके कर्म करै ३८
अधर्मनिरत चोर आततायी भी हों तिस परभी राजा
शत्रु सुत गुरुको न छिपावै ३९ अग्नि विष देनेवाला
शस्त्रोन्मत्त धनहारी खेत स्त्री का हरनेवाला ये छः
आततायीहैं ४० स्त्री बालक रोग दास पशु धनविद्या-
भ्यास इनका क्षणमात्र भी अनादर न करै बुद्धिमान्
इनकी सेवा करै ४१ जहां राजा धनी श्रोत्रिय वैद्य
और देशाचार विरुद्ध हो तहां एक दिनभी बास न क-
रै ४२ नपुंसक स्त्री बालक क्रोधी मूर्ख साहसी जहांये
अधिकारी हों वहां एक दिनभी बास न करै ४३ जहां
राजा अविवेकी और सभावाले पाक्षिक हों सन्मार्ग
के त्यागी पण्डित हों गवाही झूंठ बोलनेवाले हों ४४
और दुरात्मा स्त्री नीच जनों की जहां प्रबलता हो
वहां धनमान की इच्छा न करै वहां बसनाही जीवन
है ४५ लड़कपन में माता पालन न करै और पितासा-
गुन सिखावै और राजा धनको हरै वहां क्या पीड़ा

सिद्धि कहीं नहीं होती वह सर्वथा नष्ट होता है ७० क्रिया फलको बिनाजाने जो यत्नकरै वह साहसी है उसकाम और फलमें वह मनुष्य दुःखभागी होता है ७१ और चिरकारी बहुत दिनमें छोटाकामकरता है वह थोड़ाफल होनेसे शोच करता इसकारण दीर्घ-दर्शीहो ७२ कभी जल्दीका किया कर्म्म सुफल होताहै और कभी बिचारपूर्व्वक कियाहुआकर्म्म निष्फल होजाता है ७३ तिस पर भी अनर्थकारी कर्म्म जल्दी में न करै कदाचित करै तो इष्ट साधन में अकार्य्य होता है ७४ अनिष्ट सत्कार्य्य अकार्य्य का प्रेरक नहींहै अगर ऐसा होता तो भृत्यभ्राता पुत्र पत्नी को न करै ७५ बिना शंकाका कार्य्य मित्र करते हैं इस्से मित्र प्राप्तिके लिये यत्न करै मनुष्यों को मित्र प्राप्ति श्रेष्ठ है ७६ पुत्र भाई स्त्री अमात्य अधिकारी येविश्वस्त भी हों तो अत्यन्त विश्वास न करै ७७ धन स्त्री राज्यका लोभ सबसे अधिकहै इसकारण अनुभूत प्रामाणिक प्रतिष्ठित मनुष्य का विश्वास करै ७८ अपनी तरह विश्वास करके एकान्तमेंउस कार्य्यकोविचारैउसके वाक्यकोतर्कसे अनर्थ औरविपरीत न विचारै ७९ चौसठवें अंशकी हानिकरै तहां तक क्षमा करै स्वधर्म्म नीति बल उससे मैत्री करै ८० दान मान सत्कार से सुपूज्यों का सदा पूजन करै और उग्रदण्ड और कटुभाषी न हो ८१ भार्य्या और पुत्रभी कटु वाक्य और बड़े दण्डसे उद्वेग पातेहैं कुछ देने और

कोमल वचनसे पशुभी वश्य होतेहैं ८२ विद्या मूरता धनकुल बलसे प्रमत्त और आलसाली न हो ८३ विद्या से मत्त अपने लघु शिष्योंके वचनको न माने और अभिप्रेत अनर्थको धर्म जानै ८४ मूरतासे मत्त कथा- यद की चतुरता छोड़के शीघ्रता से युद्ध करके प्राणों को छोड़ता है ८५ लक्ष्मीसे मत्त पुरुष दुष्कीर्त्ति को नहीं जानता जैसे बकरा स्वमूत्रके गन्धको सूंघके अपने मूत्रसे मुखको सींचताहै ८६ उसी तरह परिवारसे मत्त श्रेष्ठ और छोटों का अनादर करताहै और अकार्य्य में भले प्रकार मति करताहै ८७ बलसे मत्त शीघ्र युद्ध में मन लगाता है बल से अपूर्व आदिको भी बाधा देता है ८८ और मानसे मत्त जगत को तृणवत्‌मानताहै अयोग्य भी हो तो सबसे उच्च आसन चाहताहै ८९ दुर्जनके ये मदहैं और सज्जनों के ये दमहैं विद्याका फल ज्ञान और लक्ष्मीका फल विनयहै ९० बलका फलयज्ञदान और छलका रक्षाहै और शत्रुओं को दबावै और कर ले यह शौर्य्य फलहै ९१ शम दम कोमलता यह परिवारका फलहै और मानका फल सबमें समता रक्खे ९२ सुविद्या मंत्र औषध स्त्रीरत्नको दुष्कुलसे मान छोड़के ग्रहणकरै ९३ प्रनष्टकात्यागकरै और प्राप्त का ग्रहण करै और स्त्री और बालक का न स्याकरै न ताड़न करै ९४ विद्याभ्यास और गृह्य कृत्य इन दोनों को क्रमसे युक्त करै और पर द्रव्य थोड़ाभीहो तो बिनादिये न ले ९५ किसी के पाप को

न कहै और स्त्री को दूषित न करै झूंठ गवाही न दे और दी हुई गवाही को झूंठ न करै ९६ प्राण नाश होने और उत्तम कार्य्य साधन और कन्या दानकरने और चोरआदि से धन बचाने के समय में झूंठबोलना दोष नहीं ९७ पाले हुयेको मारने वाले को जानकेभी न जनावै स्त्री पुरुषमाता पिता भाई भाई स्वामि सेवक ९८ बहिन बहिन मित्र मित्र गुरु शिष्यइनमें भेद न करै जो एक भाषा बोलतेहों तो उनके मध्य में होके न जाय ९९ सुहृदभाई बन्धु को अपनी तरह जानै और जो कोई अपने गृह में छोटाभी आवै तोउसकी यथायोग्य पूजाकरै १०० उसके कुशल प्रश्नकोपूंछके शक्ति पूर्व्वक दान और जलसे आदर करके सपुत्रहो तो गृहमें कन्याको न टिकावै और वह सपुत्राहो तो टिकावै १०१ बहिन सौभाग्य में ही भर्त्ता सहितअनाथ हो तो उन दोनों का पालन करै सर्प अग्नि दुष्टराजा दामाद भानजा १०२ रोग शत्रु उपचार से इनकोछोटा समझ के अनादर न करै क्रूरता तीक्षणता दुस्स्वभाव स्वामित्त्व पुत्रिका के भयसे क्रम पूर्व्वक पहिलेकहेहुये चीजोंको अनादर न करै १०३ वंशकी वृद्धिके लिये अपने पितरों को पिण्ड दे और ऋण रोग शत्रु कीबाकी न रक्खै१०४याचकआदि से प्रार्त्थितहोकर तेज उत्तर न दे और समर्त्थहो तो उसकार्य्य को करै अथवा करादे १०५ दाता धार्म्मिक शूद्र का सदानाम होता है यत्न पूर्व्वक उसके कीर्त्तन को करै उसके

छिद्र कोन देखै १०६ काल में हित और मिताहार अथवा हिज बायन्नशेषका विहारी अदीनात्मासुनिद्र शुचि सदा मनुष्यसुखी रहता है १०७ विहारआहार निराहार को एकान्तमें करै सदा परिश्रमी हो सुख कसरत को करै १०८ अन्न की कभी निन्दा न करै जो कुछ उपस्थित हो भोजन करै आहार को षट्रस से भी मधुर और श्रेष्ठजानै १०९ अपनी स्त्री सेविहार करै वेश्याकेसाथ विहार न करै कुस्तीके जाननेवालों के साथ नम्रता पूर्व्वक कसरत सीखना उत्तम है ११० रात्रि का पहिला और चौथा प्रहर छोड़के शयनउत्तमहै और दीनअन्धपंगुल बधिरको कभी नहँसै १११ कभी अकार्य्यमें बुद्धि न करै और उद्योगबल बुद्धि धीरता साहससे अपने कार्य्य को साधै ११२ पराक्रम कोमलता से मानको छोड़ के साधक अनिष्ट न कहै और किसी काम में किसी के छिद्र को न देखै ११३ बड़ों और राजा की आज्ञाका भङ्गकभी न करै और असत्कार्य्य के सिखलाने वाले गुरु का भी प्रबोध करै ११४ सत्कार्य बोधक छोटा भी हो तो उसका अनादर न करै और तरुण स्त्रीको स्वतंत्रकरके कहीं नजाय ११५ तरुण स्त्रियां अनर्थका मूल हैं मदद्रव्यसे मदान्ध न हो और कुसन्तति में मो हन करै ११६सास्त्रीभार्य्या पितृ पत्नी माता बाल पिता स्नुषा विधवा पुत्र रहित साध्वी कन्या बहिन ११७ मामी भाई की स्त्री पिता माता को बहिन अपुत्र नाना गुरुश्वसुर

मामा ११८ बाल पिता कन्या पुत्र भाई भगिनी सुतये अपनी शक्तिके सदृश अवश्य पालनीय हैं ११९ दरिद्र होयाधनीपित साले कुल सुहृत पत्नीका कुलदासदासी भृत्यवर्गकापोषण करै १२० विकलाङ्ग सन्यासीदीन अनाथका पालन करै और जो मनुष्यकुटुम्ब के पोषण में यत्नवान् न हो १२१ उसके सब गुणों से क्याहैऔर वह जीते मृतक है जिसने कुटुम्बका पोषण और शत्रु-ओं को पराजित नहीं किया १२२ जो अपने पास प्राप्त हो उसकी रक्षा न करै उसके जीवित से क्या है स्त्रीजित नित्य ऋणी सुदरिद्री याचक १२३ गुण हीन अरिके आधीन इतने मनुष्य जीते मृतक हैं आयु वित्त गृहछिद्र मंत्र मैथुनऔषध १२४ दान मान अपमानइन नव बातोंको गुप्त रक्खे देशाटन राजसभा प्रवेशशास्त्र चिन्तन १२५ वेश्यादर्शन पण्डित मित्रता निरालस्य हो इनको करै अनेक धर्म्मऔर पदार्थ पशु नर१२६ देशाटनसे पर्व्वत और देश रीति जानी जाती है राज पुरुष कैसे हैं न्याय और अन्याय कैसाहै १२७ झूंठ बोलने वाले कौनहैं और कौन सत्यवादी हैं औरशास्त्र और लोकसे व्यवहार की प्रवृत्ति कैसीहै १२८ और सभा के गमन करने वाले और सभा का ज्ञान होता हैऔरशास्त्रतत्त्व विवेचन से अहङ्कारी और धर्म्मान्ध नहीं होता१२९ एक शास्त्रका पढनेवाला कार्यनिर्णय को नहीं जानता इससे बहुशास्त्र सन्दर्शी हो इससेव्य-वहार बड़ाहै १३० बुद्धिमान् मनुष्य बहुत शास्त्रों को

निरालस्य हो चिन्तन करै उसके अर्थ को ग्रहणाकर-
के उसके आधीन न हो १३१ जिस तरह वेश्या सब
मनुष्यों को सदा वशमें रखती है और आप किसीके
वश नहीं होती उसीतरह जगत को स्वाधीन करै १३२
श्रुति स्मृति पुराण के अर्थका विज्ञान पण्डितों के
साथ जो होता है उसीसे पण्डा बुद्धि उत्पन्न होती
है १३३ देवता पितर अतिथि को विना अन्न दिये
कभी न भोजन करै अज्ञान से जोअपने अर्थ भोजन
बनाता है वह नरकार्थ होताहै १३४ गुरु बली
व्याधित मृतक राजा श्रेष्ठ ब्रती सवारीवाला इनके
लिये मार्ग को छोड़ दे १३५ गाड़ी से पांच हाथ
घोड़ेसे दश हाथ हाथी और बैल से सौ हाथ दूर जा-
य १३६ सींग नख दांत वाले और दुर्जन मनुष्यनदी
और स्त्री का विश्वास कभी न करै १३७ कुछ खाता
हुआ राह न चलै और हंसता हुआ कुछ भाषणनकरै
और नष्टका शोक और अपने किये हुये काम, की
बड़ाई न करै १३८ शङ्का वालेका समीप और नीच
सेवा न करै और एकान्त में किसी का गुप्त कथन
न सुनै १३९ विना अच्छों की आज्ञा के उनके साथ
कार्य करनेकी इच्छा न करै क्योंकि देवताओं के
साथ अमृत पानसे राहुका शिर काटा गया१४० सदा
क्षमा का अकार्य्य काम भी भक्षण के लिये होताहै
क्योंकि विष शिवका पान और अन्य को मृत्यु का
रक है १४१ तेजस्वी मनुष्य सब पचा सक्ता है जैसे

अग्नि और गुरु राजा श्रेष्ठ के सम्मुख कभी न टिकै १४२ राजाको मित्र जानके मन माना काम करनेकी इच्छा न करै और मूर्खकी स्वामित्व न चाहै और महात्मा की दासता की इच्छा करै १४३ थोड़े ज्ञानियोंसे बल्कि उनके साथ प्रीति करै आवश्यक और गैर आवश्यक कामको यथा क्रमसे करै १४४ प्राप्त कार्य्यको पूर्व्वपर देखके करै पिताकी आज्ञासे मातृ वधमें आज्ञा सुपूजिता होतीहै १४५ गौतम ऋषिके पुत्र ने अकार्य्य में देरीकी थी प्रेम समीप बास स्तुति नीति सेवा १४६ चतुरता कलाकथा ज्ञान आदर को मलता शूरता दान विद्या १४७ किसी के आने पै उठके खड़ा होना जाने पर कुछ दूर जाना आनन्द सहितस्मित भाषण उपकार स्वाभायसे सदा जगतको बशकरै१४८ ये वश्य करने के उपाय दुर्ज्जनों में निष्फल होते हैं और समर्थ तो दुर्ज्जनों को दण्ड से जीतै १४९ छल भूत तद्रूप इन उपायोंसे श्रुतिस्मृति पुराणों का अभ्यास सदा हितहै १५० सकल अंग उपवेद शिकार जुआ स्त्री पान यह मनुष्यों के व्यसन हैं १५१ इन चारों का त्याग करके कभी २ युक्ति पूर्व्वक कहीं युक्त करै और कपट से व्यवहार और वृत्ति लोप न करै १५२ किसीका अहित कभी मनसे भी न बिचारै वह कार्य्य करै जिससे तीनों कालमें दृढ़ सुखहो १५३ मरने पै स्वर्ग को जाता और जीवते हुये दृढ़ शुभ कीर्तिको पाताहै जो आधि व्याधि प्रपीड़ित

सचिन्त हो जागता है १५४ जार चोर बलिद्वेषी वि-
षयी धन लुब्ध कुसहायी कुतृपति और भिन्नहैं अ-
मात्य सुहृद प्रजा जिसके १५५ इनको देखके कार्य्य
करै जिससे सुख पूर्व्वक मनुष्य सोवैं और राजा और
अन्य किसी श्रेष्ठ का काम देखके न करै १५६ सर्प
व्याघ्र चोर के मारने के लिये अकेला न जाय
मारते हुये आततायी श्रेष्ठ कोभी मारै १५७ झगड़ालू
की सहायता न करै बहु नायक की रक्षा करै
गुरु और राजाके सम्मुख उच्चासनपै न बैठे १५८ प्रौढ़
याद हेतुओं से विकारको न प्राप्त करै कर्त्तव्य को
कोई न जानै होजाने पै सबजानैं १५९ कहेनहीं और
कार्य्यको करै वह उत्तम नरहै और स्त्री करके
कहे हुये कामको अनुभव बिना न करै १६० साला
पतोहू भाई की स्त्री सपत्नी इनको बारह वर्ष
के ऊपर और पुत्र को सोलह वर्षके ऊपर ताड़न न
करै १६१ इनको दुष्टवचनसे ताड़नकरै और बहू आ-
दिको ताड़न न करै पोता भानजा भाई ये पुत्रसे अ-
धिकहैं १६२ भाई की स्त्री पतोहू बहिन ये कन्यासे
अधिकहैं आगम और रक्षाके लिये सदा यत्न क-
रै १६३ मालिक कुटुम्ब का पोषण करता उससे
अन्य सब चोर की तरहहैं क्योंकि झूंठ बोलना साह-
स मूर्खता और स्त्रियां कामाधिक होतीहैं १६४ काम
बिना एक शय्या पै स्त्री के साथन सोवै और धन
कुल शील रूप बलविद्या अवस्था देखके १६५ जो

इन सबसे उत्तम हो तो अपनी मर्जी से कन्या दे और बहुधा भार्य्यार्थी वय विद्या रूपवाले निर्द्धन भी होतेहैं १६६ केवल रूप या अवस्था अथवा धन देखके कन्या न दे प्रथम कुलकी परीक्षा करै तत्पश्चात् विद्या और वयको देखै१६७शील धन अवस्था रूप देशको देखके पीछे से कन्यादान करै कन्यारूप को चाहती माता धन को पिता विद्या को चाहताहै १६८ बान्धव कुल की इच्छा करते और इतर मनुष्य मीठे भोजन की इच्छा करते हैं जिसका कुल और गोत्र समान न हो ऐसी कन्याको भार्य्या बनावै १६९ और वह कन्या भाई करके युक्तहो और योनि दोषसे वर्जित हो और प्रति क्षण विद्या और धनको चिन्तनाकरै१७० क्षण मात्र भी विद्या धनार्थी पुरुष सुन्दर स्त्री पुत्र मित्र के विद्या धनका इकट्ठा करना न छोड़े १७१ और दान बिना ज्ञान धनसे क्या है और आगेकी रक्षाके योग्य धनकी यत्नसे रक्षा करै१७२ प्रात बर्ष जीवेंगे धन कुछ न देंगे इस बुद्धिसे धन विद्या आदि को सदा इकट्ठाकरै १७३ पचीसबर्ष या साढे बारह अथवा छः वर्ष विद्या धन श्रेष्ठहै अन्य सम्पूर्ण धन विद्या मूलहै १७४ दानसे विद्याधनकी वृद्धिहोतीहै और विद्या धनसे कुछ भार नहीं होता और अन्य धन जब तक रहता है तब तक सब सेवा करतेहैं १७५ इसीसे निर्धन मनुष्य स्त्री पुत्र आदिसे त्याग किया जाताहै संसारी व्यवहारके लिये केवल सार भूत धनहै १७६ मनुष्य इसीसे धनकीप्राप्ति

के सुन्दर उपाय और साहस सुविद्या सेवा शूरता कृषी
करके यत्न करै १७७ व्याजकी वृद्धि रोजगार कला
और दान लेना इन सबसे या जिस किसी उपाय से
धनवान हो वैसा करै १७८ धनी के दरवाजे पर गुणी
लोग सेवक की तरह रहते हैं कहीं दोष गुण होते हैं
कहीं गुण दोष होतेहैं १७९ धनवान और निर्धन सब
दरिद्र की निन्दा करते हैं जैसे यह कोई नहीं जानता
कि कितना धन कहां धरा है १८० आप स्त्री पुत्र जो
कुछ ले लिखके व्यवहार करनेवालों के लिये लेखसे
अन्य नहीं है १८१ निर्लोभ धनिक राजा बिस्वासी धनी
इनमें भी लेख बिना व्यवहार न करै १८२ अच्छीतरह
संचित धनको लेके लिखके धरै और मित्रताके लिये
उस धनको बिना व्याजदे १८३ धरे धनमेंसे बहुत व्याज
के लोभसे न दे नहीं तो हानि होतीहै अधमर्ण वृद्धिसे
दे व्यवहार के योग्य सदादे १८४ और तथा सम्बन्ध
अर्थात् मेलहो तो गवाहकरके रुपयादे गृहीत लिखित
योग्यमान रुपये की आमदमें सुखदेताहै १८५ वृद्धिके
लोभसे धनदे नहीं तो मूलधन भी नष्ट होताहै आहार
और व्यवहारमें त्यक्त लज्जा सुखी होता है १८६ धन
देनेमें मित्रता होतीहै और लेनेमें शत्रुता होती है मनमें
उदारता करके कृपणता को दूर करके धनदे १८७
मनुष्य समयपै उचित खर्चको अधिक न करै सुभार्या
पुत्र मित्रको प्रीतिपूर्वक रक्षा करै१८८और सब पुनः
होताहै आत्मा पुनः नहीं होता इसकारण इसकीरक्षा

करनी चाहिये क्योंकि जीता रहेगा तो सैकरों शुभ काम देखेगा १८९ भलाईका चाहनेवाला पिता बिवा-हित समर्थ पुत्रों को धन बांटदे सस्त्रीक भाई समर्थ होनेपै खुद बांटलेतेहैं १९० सहोदर भाई भी बिनाशके लिये होतेहैं अर्थात् पृथक् रहतेहैं मनुष्यको दो स्त्रियां सलाम नहीं रहतीं १९१ जब दो मनुष्य एक जगह नहीं रहसक्ते तो बहुत पशु रूप मनुष्य एक जगह कैसे रह सक्तेहैं वृद्धि का कारण जो धनहै उसको उनके पुत्र विभाग न करें १९२ अधर्मसे स्थापित और जिसको बे ब्याज दिया है जिसकी उत्तम मैत्री चाहै तो ऐसे धनके पानेकी इच्छा न करै १९३ जिससे बड़ी प्रीति रखना चाहै उसकेपीछे उसके घरमें न जाय और स्त्री से वार्त्तालाप न करै और उसके अन्यथा विवाद न करै १९४ मित्रके कार्यमें असहाय न करै और बुराई न देखै ब्याजू था बे ब्याजू धन या औत्तमर्णिक १९५ दे तो पाने की इच्छा न करै नहीं तो दोनों का लोप होता है और तमस्सुक की पीठ पै उसकी गवाही न लिखावै १९६ अपने और पिता माता के गुणसे ख्यात हो तो वह उत्तम मनुष्य है अपने और पिता माता केगुण से पृथक् पृथक् १९७ उत्तम मध्यम नीच अधम मनुष्य होते हैं और कन्या स्त्री बहिनको भाग्य से भाग्यवान् हो वह अधमाधम हैं १९८ और बड़ा धनवान् होके पोष्य वर्गों का पोषण करै बिना कुछदिये दिनको न बितावै १९९ मैं मृत्यु के मुख में

स्थितहूं और क्षण भर की भी आयु नहीं है ऐसाम्मा-
नके इच्छा पर्वक दान धर्म करै २०० बिना दान
धर्म के परलोक में हमारा कोई सहाय न होगा
दान शीलाश्रय लोक शठाश्रय नहीं है २०१ दान से
शत्रु भी मित्र होजाते औरोंकी क्या गिन्ती हैं देवता
यज्ञ ब्राह्मण गऊ के अर्थ २०२ जो दिया जाता है वह
परलोक और संचित दान कहाता है और बन्दी
मागध मल्ल नट आदिको जो दिया जाता है २०३ वह
पारितोष्य और यश के अर्थ है और श्रीदान कहा-
ता है और सुहृद सम्बन्धीको दियाजाताहै २०४ अ-
थवा विवाह में आचार अर्थात व्यवहार में जो दिया
जाता है वही दत्त कहाता है और कार्य्य के लिये
काम के बिगाड़नेवाले २०५ अथवा पाप के भयसेजो
राजाको दे वह भी दत्त कहाताहै और जो हिंसाबुद्धि
के लिये दे नष्टहोजाय या जुआमें जातारहै २०६चो-
रसे लियाजाय और परस्त्री सङ्गमार्थक यह पापहै
और जिस देवता की आराधना करै उसको सब से
बड़ा कहै २०७ उसकी न्यूनता कभी न करै प्रीति से
उसकी सेवा करै बिना देने और कोमलता के वशी-
करण संसार में नहीं होता २०८ दान शीश झुकनेवा-
ला चन्द्रमा देदेभी होते इसीसे शुभ हैं स्नेह और देश
विचारके कार्य्य कार करिकै और न करै २०९ न
अपकार करै न उपकार करै क्योंकि ये अनर्थकारी
होतेहैं अतिक्रूरता और शठता को न धारणकरै और

बहुतकोमल नहो २१० अतिवाद कार्य में बहुतआसक्त हठ इनको न करै सम्पूर्ण अति नाशकारण इस से अतिका त्यागकरै २११ क्रूरता से जनोंको उद्वेग हो और कृपणता से बड़ीनिन्दा होतीहै बहुत कोमलता से कोई गिनतानहीं और बहुत वादसे अपमान होता है २१२ अति दानसे दरिद्र होता और लोभ से अनादर होता और बहुत हठ से मनुष्य की मूर्खता होती है २१३ अनाचारसे धर्म्म हानिहोती और बहुत आचार मूर्खताहै सबसे हम अधिक हैं और सबसे हम अधिकज्ञानवान् २१४ औरधर्म्म तत्ववेत्ता हमीहैं बुद्धिमान् ऐसा न मानें देवता गऊ ब्राह्मणोंमें मालिकन हो २१५ ऐसी मलिकई महानर्थकारी और समग्र कुल नाशनहै इनको सदा क्रमसे भजन पूजन सेवाकरै २१६ यह नहीं जानाजाता कि किसमें कितना ब्रह्म तेजहै और स्त्री धन पुस्तक को पराधीन न करै २१७ भाग्य है तो नष्टभ्रष्ट विमर्दित बस्तु मिलजाती है बड़े कामको छोटेकाम के लिये न छोड़ै और छोटेकाम को न करैं २१८ बुद्धिमान् मनुष्य अभिमान से बहुत द्रव्यका खर्च न करै और बहुत धनके खर्चकेडरसे सत कीर्त्ति का त्याग न करै २१९ वीरों के क्रूर वचन से क्रोध न करै जिस सुहृद वर्गसे लाज न करै उससे भेद दुर्म्मना न होय २२० और हसीठ्ठा में भी भेदकीबात मित्र से न करै आजन्म दान मानसे उसको प्रसन्न रक्खे २२१ कटुवचन से मित्रभी शत्रुता कोप्राप्तहोताहै

क्योंकि टेढ़े बचन रूप बाणोंके निकालनेको मन समर्थ नहीं है २२२ जब तक शत्रु अपने बलसे अधिक हो तब तक उसको स्कन्ध से ले चले और नष्ट बल देख पत्थर के ऊपर घट की तरह भेदन करे २२३ जिस तरह सी जन्य भूषण है उस तरह आभूषण राज्य पौरुष विद्या धन नहीं भूषित करते २२४ अश्वमें वेग बैलमें धीरता स्त्रियोंमें कान्ति राजामें क्षमा वेश्यामें हावभाव गायक में मधुर स्वर २२५ धनिक में दान और सैनिक में शूरता गऊ का दम तपस्वियों और पण्डितोंकी बाव दूकता अर्थात् बचन विशेषता २२६ सभावालों में अपक्षपात गवाहोंमें सत्य बचन सेवकमें अनन्य भक्ति मन्त्रियों का हित कहना २२७ मूर्खमें मौनता और स्त्रीमें पातिव्रत्य भूषण है इनको छोड़के और दुर्भूष-ण हैं २२८ एक नायक अर्थात् स्वामी उत्तम होता है बिन मालिक और बहुत मालिक नहीं अच्छे होते हिंसा करने वाले को छोड़े नहीं समर्थ होता उसी क्षण मारै २२९ चुगली चण्डता चोरी मत्सर अति लोभ असत्य कामना बिगाड़ना आलस्य २३० ये गु-णियोंके दोषके लियेहैं गुणोंको ढकके रहतेहैं माता स्त्री पुत्र धन इनका बिनाश २३१ बाल्यमध्य वृद्धतामें क्रमसे महापाप फलहोता है अर्थात् लड़कपनमेंमाता जवानीमें स्त्री पुत्र और धनका नाश दुखदायी होताहै लक्ष्मीवान अन पुत्र और अधन मूर्ख २३२ स्त्री का नपुंसक पति मित्रका जान ये सुखके लियेनहीं हैं मूर्ख

पुत्र विधवा कन्या क्रोधवती स्त्री दरिद्रता २३३ नीच सेवा नित्य फिरना इनसे सुख नहीं होता न पढ़ने पढ़ाने और देवता गुरु द्विज २३४ न कलामें न संगीतमें न सेवा में न कोमलता में न स्त्रीमें न भूरतामें न तपस्या में न काव्यमें मन लगताहै २३५ जिसका चित्त मुक्त हो अथवा खलये नररूप पशुहैं सकता किसीके उदयको नहीं देखसक्ता और विनिन्दक छिद्र को देखताहै २३६ द्रोह शीलमलिन चित्त प्रसन्न मुख ऐसा खल होताहै एकसे वह पार पूर्ण नहीं होता ब्रह्माण्ड के धनकी चाहना करताहै २३७ त्यागीहुआ आशाबद्ध थोड़ेसे भी परिपूर्ण होताहै और आशावान लोभी अकार्य करता और अन्योंसे कहता और प्रसन्न होता २३८ धूर्त लोग अन्यके उपदेश के लिये सदा साधु सम रहते हैं और अपने कार्यकेलिये सो अकाज करतेहैं २३९ पिताकी आज्ञाका पालन करै और सेवन में निरालस हो छाया की तरह सदारहै और प्राप्तिके अर्थ सदायत्न करै २४० सर्वविद्यामें चतुर ऐसा पुत्र पिताको प्रीति कारक होताहै और विपरीति दुष्ट गुणवाला धननाशक दुःखदायी होताहै २४१ जोस्त्री पतिमें अनुरक्त और गृह कार्य में निपुण पुत्र उत्पन्न करने वाली सुशीला ऐसी स्त्री पतिको प्रिय होतीहै २४२ पुत्रके अपराध को सहै और पुत्रका पोषण करै ऐसी माता प्रीतिदा होतीहै और पुंश्चली होतो दुःख देनेवाली होतीहै २४३ पुत्रकी विद्या और वृत्तिके लिये यत्न

करै और उत्तम शिक्षा और प्रीतिका करनेवाला पि
ता ऋणी होताहै २४४ जो सदा सहायता करै उसके
खिलाफ कभी न कहै सत्य और हित कहै और चलै
और देनेमें ग्रहण करै वह मित्रहै २४५ नीचको अति
परिचय और अन्य गृहमें सदा गमन जातिके समूहमें
विरोध और दरिद्रता ये हानि कारकहैं २४६ व्याघ्र
अग्नि सर्प और अन्य मारने वालों का संग अच्छा
नहीं होता और राजा सेवासे भी किसीका मित्र नहीं
होता २४७ इष्टमित्रों की अप्रसन्नता और शत्रुकी प्रब-
लता और पण्डित में दरिद्रता दरिद्रता में बहुत पुत्रा-
दिका होना २४८ धनीगुणी वैद्य नृप जल इनसे रहित
स्थानोंमें सदा स्थित और कभी कन्या और पितासे
भी मांगना यह दुःखदहैं २४९ स्वरूप धनवान् पंडित
बलवानभी खाली हो और यथेष्ट स्त्री कौन चाहता हो
तो स्त्री को सुख नहीं होता २५० जो यथेष्ट चाहना
करताहै स्त्री उसकेवश रहतीहै जिसतरह ग्रहणऔर
प्यारसे बालकवशरहताहै २५१ उसके साधनके द्वारा
जो खर्च कियाजाय वहसहीहै ज्ञानीमनुष्य विचारके
द्वारा खर्च करै अन्यथा कुछ लाभ नहीं होता २५२
बुद्धिमान मनुष्यजिस कार्यमें अधिक खर्चहो न करै
कोईभी कार्य हो और इसमें अधिक लाभहो उसको
करै २५३ औरव्यापारकीवस्तुका मोल औरपरिमाण
को सदा यथार्थ ढूंढाकरै और तपकी हानी नासेवा
उपभोगसे प्राप्त होतीहै २५४ कार्यमें हित मनुष्य को

अपने स्थानमें नियुक्तकरै चोर और जार सदा अकेला रहना और मधुर चीजों को खाना चाहता है २५५ बलीसे द्वेष करने वाला वेश्या धनी की भिन्नताखराब राजा छलको और कुत्सित भृत्य स्वामी की द्रव्यकी चाहना करता है२५६ज्ञानवान् तत्त्व अर्थात् सिद्धान्त की और देवजीवक अर्थात् देवता सेजीने वालादम्भ तप अग्नि की चाहना करता है योगी एकान्त की कुलटा अर्थात् दुष्ट स्त्री दूसरे पतिकी और रोगी वैद्य की चाहना करता है २५७ रोजगारीमहँगी की चाहना करता याचक दानी को औरडरा हुआ सहाय को ढूंढता और दुर्ज्जन छिद्र को ढूंढताहै २५८ मूर्ख मनुष्य नाहक तेजहोता कुछ बकता सोता नशा खाता निष्फलकर्म्म करता और अपने इष्ट का नाश करता है २५९ तमोगुणाधिक क्षत्री सत्व गुणाधिक ब्राह्मण अन्यसब रजोगुणाधिक होते तिन में सत्त्वगुणाधिक ब्राह्मण श्रेष्ठ है २६० अपने कर्म्म से ब्राह्मण सबसे अधिकहै उसके तेजसे क्षत्रियादिमें तेजहै २६१ अपने धर्म्ममें टिके हुये ब्राह्मण को अन्यवर्ण डरतेहैं इसमे और तरह पर क्षत्रिय आदि धर्म्म का आचरण न करैं २६२ और जिस वृत्ति करके अपने धर्म्म की हानि न हो वह वृत्ति उत्तमहै और जिस देशमें कुटु-म्बका पोषण हो वह देश धन्य है २६३ उत्तम वृत्ति और नदीके निकट की खेती माता के तुल्यहै वैश्य वृत्ति मध्यम है और शूद्र वृत्ति अधमहै २६४ याचना

अवसतर वृत्तिहै परन्तु वह तपस्वियों में श्रेष्ठ है कहीं धर्म्मशील राजा की सेवा वृत्ति भी उत्तम है २६५ जो यज्ञ कराके मजदूरी लेता है वह यथा महाधन के लिये है केवल एक तरह का रोजगार है २६६ बहुत धन राजा की सेवा बिना नहीं मिलता राजसेवा बहु-तकठिनहै बुद्धिमान् बिना वह नहींहो सक्ती २६७ क-दाचित और कोई राजसेवा करै तो भी तरवारकी धार चाटनेके सदृश रहती है सर्प पकड़नेवाला अपने मंत्र के प्रभाव से जैसे सर्पको वश्य रखता है उसी तरह मन्त्री अपने मंत्र अर्थात् सलाह की बलसे अपनेवश्य रखता है २६८ राजाको अधीनभी करले तोभी बुद्धि मानको राजासेबड़ाभय रहता है बुद्धिमान् में ब्रह्मतेज रहता और क्षत्रिय का तेज राजामें रहता है २६९ बु-द्धिमान मनुष्य दूर भी रहै राजाके निकटही मालूमहो बुद्धिरूपी पाशसे बांधके ताड़न करै और खेंचै २७० राजाके समीप रहै और दूर मालूम हो औ अप्रत्यक्ष सहायवान् हो अनुवाकहता बुद्धि व्यवहार के योग्य नहीं होती २७१ अव्यवस्थित चित्तवाले की बुद्धि स-र्वत्र नहीं पहुंचती और पहिले दरिद्र पीछे धनी य-ह श्रेष्ठहै २७२ पहिले पैर से चलना उसके पीछे सवा-री का मिल जाना उत्तम है जो सुखके लिये हैं उससे विपरीत दुःखद हैं २७३ लड़के के होके मरजाने से न होना उत्तम है और दुष्ट सवारीसे पैरका चलना उ-त्तम विरोध से चुप रहना अच्छा होताहै २७४ देशा-

छ्छादन से चर्म्म करके पैर लपेटना अच्छा है और किञ्चित ज्ञान से अज्ञता उत्तम होतीहै २७५ पराये घर में रहने से जङ्गल बास उत्तमहै और दुष्ट भार्य्या अर्थात स्त्रीके साथ गृहस्थी करने से भिक्षामांगना या मरना श्रेष्ठ है २७६ कुत्ते का मैथुन ऋणा गर्भाधान स्वामित्व खलकोमित्रता अपथ्य इनके करनेमें पहिले सुख होता पीछे दुःखहोताहै २७७ खराब मंत्री से राजा रोगी रहता और खराब वैद्य और कुत्सित राजा करके प्रजा रोगिणी रहती खराब पुत्रसे कुलरोगी रहता और कुबुद्धि करके अपना शरीर दिन रात हीन होताहै २७८ जिस तरह हस्ती घोड़ा बैल बालक स्त्री इनके सिखलाने वाले होते हैं उसी तरह जो साथसे गुणा भ्यास्या करतेहैं वे होतेहैं २७९ अवसर पाके वचन कहै तो जय होताहै और सुन्दर वस्त्रसे जाहिर होताहै सभामें विद्यासे मानहोता और येतीनों पूर्व्वोक्त अधिकार पानेसे होते हैं २८० सुन्दर स्त्री अच्छा पुत्र सुन्दरि विद्या उत्तमधन अच्छेमित्र सुन्दर दास दासी सुन्दरगृह उत्तम राजा २८१ ये दश सदा गृहस्थों के सुखके लियेहैं और प्रकार ऐसा सुख नहीं होता और वृद्धा सुशीला विप्रवासिता सदाचारमें निपुणास्त्री पुरुष को २८२ अथवा खोजेको भीतरमकानमें रक्खे जवान मित्रभीहो उसको न रक्खै और कालका नियमकरके कार्य्य अन्यथा कभी न करै २८३ गऊ आदिको अपनी तरह जानै और अर्थ धर्म्ममें नियुक्त करै और

भोजन के बनवानेमें माताको नियुक्त करै और गुरुको
शिक्षा करनेमें २८४ मनुष्य सदा अनियम से अन्तःपुर
में जाय अच्छी सवारी और बिना पुत्र की स्त्री भार
वाहक सुरसक २८५ पर दुखहरा विद्याऔरनिरालस
सेवक ये छः विदेशमें सुखदायक होते हैं २८६ समर्थ
भी रास्ता रोक के न ठहरै और राजा भी हो तो उत्तम
सवारीपै चढ़के बाजार के रास्तेमें न निकलै २८७ और
राजा रास्तेमें भी जाय तो बिना सहाय न जाय रास्ते
में जहां से मार्ग और जल निकट हो ऐसे दो गांवके
बीचमें डेरा करै २८८ ऐसे स्थान में निवास करै मा-
र्गमें जल में न उतरै बहुत चलना नखाना बहुतमैथुन
अर्थात भोग २८९ बहुत कसरत करना यह सबको
बुढ़ापेका सबब होता सम्पूर्ण विद्या और कला में
अनभ्यास यह भी बुढ़ापे का सबब होता है २९०
दुर्गुणको गुण करके कीर्त्तन करै वह प्रियहोता है
जो अधिक गुणको कहताहै वह क्या मित्र न होता
होताही है २९१ अगर जो सत्य दुर्गुणको कहै वह
अप्रिय होताहै औरजो गुणको दुष्टगुण करकेकहता
है वह कैसे प्रिय होसक्ता है २९२ स्तुतिसे देवतावश्य
होजाता है मनुष्य को क्या गिन्ती है इसीसे प्रत्यक्ष
दुर्गुण कहने को कोई समर्थ नहीं २९३ इसी से
बुद्धिमान को उचितहै कि अपने दुर्गुणों को लोक
और शास्त्र से विचार करै और जो अपने दुर्गुणों
कोसुन के प्रसन्न होता और क्रोधनहीं करता है २९४

वह अपने उपहास में यत्न करता है और सुनते हुये त्याग नहीं करता उचित है कि अपने गुणोंके श्रवण से सम रहे अधिक प्रसन्न न होजावै २६५ दुष्ट गुणोंकी में खानि हूं गुण मुझमें कैसे आवैं और इसी में सम्पूर्ण अज्ञानता भी टिकीहै ऐसा जो अपने को मानता है वह सबसे अधिक है २६६ वही साधु है उसीके कलालेशको देवता प्राप्त होते साधु मनुष्यसे थोड़ा भी उपकार किया हुआ बहुत होता है २६७ और खल मनुष्य बड़े उपकार को सरसों के तुल्य जानता है ऐसा खेल किसीके साथ न खेले जिससे लड़ाई हो २६८ हास्यमें भी ऐसा न कहै कि तेरी स्त्री छिनाल है और मित्र भावसे भी किसी को खराब शब्द न कहै २६९ मित्रसे गुप्त बातों न छिपावै और ऐसी शोच्य बात भी न कहै कि वह शत्रु होके उसी बातको कहै ३०० किसीकी दुष्टताको जानता भी हो उसको न दिखावै उसके दूर करनेकी यत्न करै और गुप्त उसकी दवा करै ३०१ और बलवान्के विपरीत यथार्थ भी न कहै और देखेको बिनादेखा और सुनेको अनसुना करै ३०२ अपनी विपत्तिके समय में मनुष्य गंगा अन्धा बधिर लँगड़ा होजाता है व्यवहार से हीन ऐसा मनुष्य और तरह दुःखपाता है ३०३ वृद्धके सदृश सारांश बोले बालकोंके सदृश लात भीत न करै और पराये घरजाके उसकी स्त्रीका निरीक्षण न करै ३०४ बिना आज्ञा किये दरिद्रसे स्वामी झगड़ै और अपने लड़केकी शिक्षा करै और

अपराध किये हुये भी परायेके लड़केकी वैसी शिक्षा न करै २०५ अधर्म्म रतराजनीति रहित अन्तःकरण में, छली लोभी अति दण्डदेनेवाला ऐसा मनुष्यग्रामको छोड़के अलग बसै २०६ दो वादियों का सतयथार्थ भी मालूम हो बिना किसीके पूछे कुछ अगर कहै तो शत्रु होजाता है २०७ दूसरे का बिवाद लेके झगड़ा न करै और बहुत मनुष्यों के साथ मिलके राजमंत्र की तर्कणा न करै २०८ बिना शास्त्र जाने ज्योतिष धर्म्म निर्णय नीतिदण्ड वैद्यक प्रायश्चित्त क्रिया फलको न कहै २०९ पराधीनतासे अधिक दुःख और स्वाधीनतासे अधिक सुख नहीं है किसीके वश न होस्वाधीनहो ऐसा गृहस्थ सुखी है २१० नवीन और पूर्व जन्मके व्यवहारको जानने वालोंकी बुद्धिका प्रतिक्षण नया२ व्यवहार होताहै २११ इसीसे प्रत्यक्ष और अनुमानसे कहनेकेयोग्यनहींहै उसकाज्ञान उपमान अथवा बड़ों के उपदेश से होता है २१२ नीति शास्त्रके योग्य जो राजामें विशेष करके चाहिये उस के सदृश राजा और देश के सामान्य व्यवहार को संक्षेप करके कहा २१३॥

इति श्री शुक्रनीतौ तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

शुक्रनीति भाषा ।

चौथा अध्याय ॥

इसके अनन्तर मिश्र अर्थात् मिलाहुआ प्रकरण संक्षेप से कहैंगे अब मित्र आदि का लक्षण संक्षेप से सुनों १उपकार और अपकार में मित्र और शत्रु चार प्रकार के हैं करै करावै सलाह दे सहायता करै ये बातें शत्रु मित्र दोनों से होती हैं २ पराये के दुःखसुननेसे जिसका चित्त द्रवीभूत होजावै और विनाकहे परायेके हितके लिये यत्नकर सत्कार करै ३ जीवस्त्री धन गुप्त बातको जो समय पर रक्षा करै वह उत्तम मित्रहै औ द्विपद त्रिपद एक पद मित्र होते हैं ४ एक वस्तुमें दो की बहुत चाहना हो तो जिस के हित की हानि होगी वह अवश्य शत्रुता करैगा ५ भाईके होते हुये दूसरा भाई कहै कि पिता का सम्पर्ण धन मेराहै इसमें दूसरेका अख्तियार नहीं दूसरा कहै मेराहै एक कहै कि इसका भाग हमीं करैंगे दूसरा कौनहै ये दोनों आपसमें एकतर संज्ञक शत्रुहैं ७ बलवीनिकरके युक्त उठाने वाले शूरके सम्पूर्ण मित्र शत्रु वैर करतेहैं और राजा समयको देखताहै ८ इसमें आश्चर्यनहीं

कि वे राज्यके लोभी न हों इसीसे न राजा के कोई मित्र है और न राजा किसीका मित्रहै ९ बहुधाकार्य्य-स मित्र परस्पर होते हैं और कोई स्वभावसे मित्रहै और सदा शत्रु रहते हैं १० माता मातृकुल पिता और उसके माता पिता पिता के चचा अपनी कन्या स्त्रीऔर स्त्रीके कुलवाले ११ पिता माता अपनीबहिन कन्याकी सन्तान प्रजापाल गुरू ये सम्पूर्ण सहजमित्र हैं१२विद्या शूरता दक्षता बलधीरता येसबसहजमित्रहैं बुद्धिमान् इनके साथ बर्त्ताव करै १३ऋणकर्त्तापिता और व्यभिचारिणी माता और स्त्री ये स्वभावसेपति पुत्रकी मारने वाली दुष्टा चरणा होती हैं १४ अपने पिताके भाई उसकी स्त्री और पुत्र शत्रु होते हैं और सास बहू सवति ननंद देवरानी ज्यठानी ये भी परस्पर शत्रु होती हैं १५ मूर्ख पुत्र कुवैद्य अरक्षक पिता येशत्रु हैं क्रोधी राजा प्रजा शत्रु होता और न देने वाला धनी शत्रु होता है १६ चारों ओर चारों दिशामें स-न्निकट जो राजा हैं जिनको धनकी तृष्णा होती है वे क्रमसे हीन बल और शत्रु होते हैं १७ शत्रुउदासीन मित्र ये स्वभाविक होते हैं शत्रु मित्रहो वह उदासीन है और शत्रु मित्र परस्पर होते हैं १८ समीप वर्त्ती सेवक और प्रधान आदि अन्यसम्पूर्ण ये क्रमसे राजा के शत्रु होतेहैं १९ थोड़े बलवाले मित्र को राजा बढा वै और अधिक बलवाले मित्र को कम कर दे भेदकावै बटोर ले फिर इधर उधर करदे इस प्रकार शत्रुके

साथ राजा बर्त्ताव करै २० साम दाम दण्ड विभेद इन उपायों अथवा उनके योग्य उपायोंसे अपने बशमें करै २१ जिसतरह उपायसेसर्प और हाथीबशमें किये जातेहैं और उपाय से ही भूमि के जीव स्वर्ग कोजाते हैं और उपाय से बज्र का भेदन होता है उसी तरह राजा उपाय से शत्रु को बशमें करै २२ मित्र सम्बन्धी स्त्री पुत्र प्रजा शत्रु इनमें अपनी युक्तिसे राजा अलग अलग साम दाम दण्ड भेद का बिचार करै २३ शील वय विद्या जाति व्यसन वृत्त समान हो और कोमलता के साथ इकट्ठा रहै तो मित्र होता है २४ तुम्हारे सदृश हमारे दूसरा नहीं है यह मित्र में सामहै और हमारा सब तुम्हारा है यह मित्रमें सजीवित दानहै २५ अन्य मित्रके सुन्दर गुणाका कीर्तन मित्रमें भेदन है अगर तुम ऐसे हो तो हम ऐसी मित्रता नहीं करते यह मित्र में दण्ड है २६ जो हित नहीं चाहता अन्य के अनिष्ट को उपेक्षा करता है वह सुसान्धिक उदासीन शत्रु क्यों न हो२७ हम तुम आपसमें एक दूसरे की बुराई न विचारैं एकदूसरे की सहायता करता रहै यह शत्रु विषयक साम है २८ कर या कुछ गांव वर्ष भर मेंयथा योग्य शत्रु को देकर प्रसन्न करै वह दाम कहलाताहै २९ शत्रु साधक की हीनताके लिये प्रबलका आश्रय से अथवा उससे हीनके उज्जीवन से शत्रुभेदन कहलाता है ३० चोरों के द्वारा शत्रु को पीड़ा दे धन और धान्य को हर लेना उसका कोई छिद्र देखके

नीति पूर्वक सेना लेकर डर दिखाना ३१ और युद्ध
आन प्राप्त हो उसका करना शासन दण्ड कहलाता है
क्रियाके भेदसे उपाय यथायोग्यसे भेदन होजाते हैं३२
नीति का जाननेवाला राजा सम्पूर्ण उपायों के साथ
ऐसाकरै जिससे मित्र उदासीन शत्रु अपने से अधि-
क न हो ३३ पहिले साम श्रेष्ठ है उस के पीछे दाम
उत्तम और सदा शत्रु का भेद उत्तम है और प्राण
के संदेह में दण्ड दे ३४ प्रबल शत्रुमें साम दाम और
अधिक में साम भेद सम में भेद और दण्ड और हीन
में केवल दण्ड को करै ३५ मित्रमें साम दाम भेदऔर
दण्ड को कभी न करै राजा अपनी जय के लिये
प्रजा और शत्रु में भेद और पीड़नकोकरै ३६ शत्रु से
प्रपीड़ित जनोंकी रक्षा साम दाम से करै और दुष्ट-
चार दुष्टों का निकाल देनाही उत्तम है ३७ राजा अ-
पनी प्रजा का पालन दण्ड और भेद से न करै सर्व-
दा यत्न पूर्वक साम दाम से प्रजा पालन करै ३८
दण्ड और भेद के साथ प्रजा पालन से राज्य नष्टहो
जाता है जिससे हीन अधिक प्रजा न हो ऐसे प्रजापा
लन करै ३९ जिससे असत् आचार से निवृत्तहो ऐसा
दण्ड दमन से होता है जिस से जीव दण्डित जाय वह
उपायदण्ड कहलाताहै ४० राजा सबकास्वामीहै इससे
प्रजाका डरदिखाना अपमान नाश कर देना बन्धन ये
सबउपाय राजाके आधीनहैं ४१ ताड़न द्रव्यहरण पुर
से निकालना निशानदेना मूंड़ मुड़ाना गधे पर चढ़ाना

अङ्गच्छेद बध ४२ युद्ध ये उपाय भी दण्डके भेदहैं दण्डके भयसे प्रजा धर्म रत होतीहै ४३ दण्डसे कोई ज़बरदस्ती नहीं करता न कोई झूंठ बोलता क्रूर मृदु होता दुष्ट दुष्टताको छोड़ देताहै ४४ दण्डसे पशुभी भयको प्राप्त होता और शत्रु भागता चुगुल चुप रहता आततायी अर्थात् इच्छाचारी भयको प्राप्तहोताहै ४५ अन्यसम्पूर्ण कर देनेवाले होते और अन्य डर को प्राप्त होते इस कारण राजा धर्मकी रक्षामें दण्डको धारण करै ४६ गर्व्वित कार्य अकार्य्यको न जानते कुमार्ग गामी गुरु का भी राजा शासन न करै ४७ राजाओं की दण्ड नीतिसे सम्पूर्ण कार्य सिद्धि होतेहैं दण्ड धर्मका परम शरण है ४८ श्रुति के मतसे पशुकी भांति दुष्ट हिंसा हिंसा नहींहै दण्ड देनेके योग्यको दण्डदे जो दण्डके योग्य न हो उसे दण्ड न दे ४९ अति दण्ड करनेसे उसको गुणी लोग त्याग करते हैं और वह पातकी होता है थोड़े दान से जो पुण्य होता है वही दण्ड देने से फल होताहै ५० यह दण्ड मुनिवरों ने प्रवृत्ति और भय के लिये कहाहै जो पुण्य अश्व मेधादि से होतावह क्या स्तोत्रपाठसेहोताहै ५१ क्षमासे जोपुण्य होताहै अपनी प्रजाके दण्ड देनेसे राजाका कल्याण किसतरहहोता है ५२ उस दण्डसे राजाकी कीर्ति धनका नाशहोताहै और राजा लोग सतयुग में धर्म करकेपरिपूर्णहोते हैं इससे सत्ययुगमें दण्ड नहींहै ५३ त्रेतायुगमें प्रजाएक चरण अधर्म्मकरतेहैं इसकारणपादंदण्ड राजादे और

द्वापर में अर्द्ध धर्म्म प्रजा होती इससे राजा तीन चरसा
अर्थात तीन हिस्से दण्डदे ५४ राजाकी दुष्टता से प्रजा
लोग निर्द्धन होते हैं इससे कलियुग में अर्द्ध दण्डहै
धर्म्म और अधर्म्मके सिखलाने से राजा धर्म्म प्रवर्त्तक
है ५५ युग और प्रजाका कोई दोष नहीं अधर्म्म से
केवल राजा को दोष होताहै जिससे राजा प्रसन्न हो
वैसा मनुष्यकर ५६ लोभ था भयसे प्रजा राजा की
आज्ञा माने तो क्या है पुण्यवान जहां राजा होता है
उस राज्यमें प्रजा धर्म्मिष्ठ होतीहै ५७ और जहांमहा
पापी राजा होताहै वहां मनुष्य अधर्म्म पर होते हैं
वहां न समय पर जल बर्षता और न पृथ्वीमें फलहो
ताहै ५८ महापापी राजाके होनेमें देशकी हानि और
शत्रु की वृद्धि और धनकी क्षय होती है मदिरा पीने
वाला राजा अच्छा होता स्त्री लम्पट और क्रोधी
राजा उत्तम नहीं होता है ५९ क्रोधी राजा लोक
को दुःख देता है और स्त्री लम्पट वर्णो का लोप
करताहै और मदिरा पीने वाला राजा बुद्धि और
व्यवहार से भ्रष्ट होता है ६० काम और क्रोध मद्यतम
हैं और सब मदिरा से अधिक हैं और अति लोभी
राजा प्रजाके धन प्राणको हरता है ६१ इससे इनतीनों
को छोड़ के राजा दण्डको धारण करे और भीतर
कोमल और बाहर कठोर होके राजा अपनी प्रजाको
दण्ड दे ६२ जो राजा बड़ा दण्ड देता है और स्वभाव
से अपनी प्रजाका अहित चाहता है वह राजा चुगलों

के द्वारा अपने राज्य को नष्ट करता है ६३ इसकारण राजा से कोई कहै तो भी बिना विचारे काम न करै अपना और प्रजाका दोष देखने वाला राजा उत्तम होताहै ६४ राजा प्रथम अपना नियम करै तत्पश्चात् नौकरों का नियम करै प्रजा का कायिक, वाचिक, मानसिक, सांसर्गिक ६५ यह चार तरह का अपराध दो प्रकार का है एक स्वबुद्धि कृत दूसरा बिना जाने किया फिर भी दो प्रकार का अपराध है एककराया दूसरा अनुमोदन करना ६६ स्वभाव से एक बार या बहुत बार किया हुआ चार प्रकारका है नेत्रमुखआदिके विकार आदि भावोंसे मानसिकहोताहै ६७ क्रिया करके कायिक होता है और कठोर शब्द से वाचिक होता है सांसर्गिक साथ से इसमें गुरु लघु देखलेवे ६८ पैदाहुआ या पैदा होनेवालेकार्य्यों का दण्डकरै प्रथम साहस करनेवाला उत्तम भी दण्ड केयोग्यहै ६९ न्याय करने वाले से पूंछे कि तुम्हीं ने ऐसा अनादर किया है उपहास करै यथा योग्य कहै तो द्विगुण अथवा त्रिगुण दण्डदे ७० मध्यम साहस को करते हुये उत्तम भी दण्डके योग्य है प्रथम साहस में पहिले धिक्कार का दण्ड करै उसके पीछे ७१ यथोक्त यथा वृद्धिभली भांति दण्डदे अनन्तर बड़े अपराध को करता वह उत्तमभी दण्ड योग्यहै ७२ प्रथम साहसहो तो आदिमें तत्पश्चात् मध्यम तत्पश्चात् यथोक्त द्विगुण दण्ड दे तत्पश्चात् मार्ग रोकै ७३ मनुष्यके मारने बिना यह

दण्ड कल्पना बुद्धि पूर्व्व है यह दण्ड उत्तम मध्यम नीच
के भेद से तीन प्रकार का है ७४ गुण कुल धन करके
मुख्य हो और प्रथम साहस करै तो मध्यम दण्ड दे ७५
धिक दण्ड अर्द्धदण्ड पूर्ण दण्ड इनको क्रमसे द्विगुण
त्रिगुण करके दे तत्पश्चात् संरोध और नीच कर्म्म
करै ७६ मध्यम साहस करता हुआ मध्यम जाति दण्ड
के योग्य है जैसा कहा है द्विगुण या त्रिगुण अर्द्ध
तत्पश्चात् बन्धन ७७ मध्यम साहस अर्थात् अपराध
करते हुये मध्यमजाति दण्डके योग्य है और पहिले
अपराधकरचुकाहै तो यथोक्त द्विगुणदण्डदे ७८ उत्तम
साहस को करते हुये मध्यम जाति दण्ड केयोग्य है
और मध्यम अपराध आदिमें हो तो यथोक्त दण्डदे ७९
तत्पश्चात् द्विगुण या त्रिगुण तदनन्तर यावज्जीव
बन्धन दे पहिले अपराध करता हुआ मध्यम जाति
दण्ड के योग्य है ८० सड़कके संस्कार अर्थात् बना-
नेके लिये नित्य उसको और रक्खे अधम जातिबड़े
अपराध के करने से दण्डके योग्य होताहै ८१ आदि
में मध्यम अपराध हो तो यथोक्त द्विगुण दण्ड दे
तत्पश्चात् यावज्जीव बन्धन करके नीच कर्म्मकरा-
वै ८२ जो मनुष्य धनके गर्व्वसे अपराधकरै तो राजा
पहिले आधा या सम्पूर्ण धनले जबतक जीवे तबतक
बन्धन में रक्खे ८३ सहाय के गौरव विद्याके मद
बलके घमण्ड से जो मनुष्य पाप करताहै राजा उसको
बंधवावै और ताड़ना दे ८४ स्त्री पुत्र बहिन शिष्य दास

पतोह छोटा भाई ये अपराधकरें तो छोटी रस्सी अ-
थवाछड़ी से दण्ड दे ८५ ऐसा दण्ड देह की पीठ में
करै शिर में कभी न करै इससे अन्यथा मारने वाला
चोर के तुल्य दण्ड के योग्य होता है ८६ राजा
पापी को बांध के मासभर तीन मासछः महीनाअथवा
वर्षदिन तकनीच कर्म्म करावै ८७ यावज्जीव बन्धन
और बधके कोई योग्य नहीं है और मनुष्यों को न
मारै यह श्रुति है८८ इससे सर्व्व यत्न से पण्डितराजा
वध दण्डको त्यागकरै रोकने बन्धन ताड़न से दण्ड
दे ८९ राजा लोभसे प्रजा को धन दण्ड न दे और जो
पिता आदि की सहायता से रहित हैं वे अपराधी भी
हों तो दण्ड न दे ९० क्षमावान् राजा का दण्ड ऐसा
होता है प्रचण्ड धन हरने वाला राजा अपराध को
नहीं सहता९१ऐसे राजा के रहने से लोक दुःखीऔर
शत्रुओंके आधीन होजाता है इससेराजा शुभागदण्डी
क्षमावान्प्रीति कराने वाला हो ९२ मदिरापीनेवाला
धूर्त्त चोर परस्त्री गामी मारने वाला वर्णधर्मत्यागी
नास्तिक शठ९३ झूंठा कलङ्क लगानेवाला चुगुलखोर
और देवता का दूषने वाला झूंठा कहने वाला न्यास-
हारी वृत्ति विनाशक ९४ औरौं की वृद्धि न चाहनेवा-
ला घूस लेनेवालाअकार्य्य कर्त्ता सलाह औरकामका
तोड़ने वाला ९५ अनिष्ट वाक्य क्रोधी जल और बाग
को बाधा करनेवाला केवल नक्षत्र बताने वाला राज-
द्रोही कुमन्त्री झूंठेकार्य्य करनेवाला ९६ कुवे[illegible]अम-

गलअपवित्र राहरोकनेवाला खराब गवाही देनेवाला
अपूर्व वेषधारी स्वामिद्रोही बहुत खर्चीला ९७ अग्नि
देनेवाला विषदेनेवाला वेश्याभक्तदण्डदेनेवाला पासि-
कसभ्य जोर से लिखवाने वाला ९८ अन्याय कारी
कलही युद्ध में भगा गवाही का बिगाड़ने वाला पिता
माता सती स्त्री मित्रसे द्रोह करने वाला ९९ पर द्वेषी
शत्रु की सेवा करनेवाला मर्म का भेदक वंचक इष्ट
मित्रों से द्रोह करने वाला गुप्त वृत्ति शूद्र ग्राम कंटक
१०० परिवार पोषण बिना तप और विद्याकाचाहने
वाला तृण काष्ठादि के इकट्ठा करने में समर्थ भी
है भीख मांग खाताहै १ कन्याका बेचने वाला परि-
वार की वृत्ति का छोटा करने वाला अधर्मी सूचक
राजा का अनिष्ट चाहने वाला २ पुंश्चली पति पुत्र
की स्त्री स्वतंत्र वृद्ध निंदित गृह कार्य्यको छोडनेवाली
दुष्टाचार प्यारी बहु जिसकी हो ३ इनसबको स्वभाव
दुष्ट जानके राज्य से निकालदे अथवा छोपके किसी
किले में बसावैं ४ या कदन्न थोड़ा भोजन देके रास्ता
रखवावैं या तत्तज्जाति के लिये जो कर्म्म हैं करावै ५
ऐसे संसर्ग दूषित दुष्टोंको राजा दण्डदेके धर्मार्थ में
लगावै ६ राजा और राज्य उसीतरह मन्त्री की शत्रु
सम्बन्ध से बुराई की इच्छा करताहै उसका राजा वध
करै ७ समूह की दुष्टता से कभी किसी की बुराई न
करै जिस तरह बत्स ढूंढ़ २ स्तनको पीताहै उसी तरह
मक एक को राजा मारता है ८ धर्म्मात्मा बलवान

शत्रु के आश्रय से अवरुद्धी राजा को मनुष्य डर दिखावे ९ वह राजा जब तक धर्म शील हो तभी तक उत्तम है अगर राजा धर्मात्मा न हो तो राज्य और राजा दोनों नष्ट होतेहैं १० माता पिता स्त्री इनकाजो कोई त्याग करके आपरहता उसको बेरी डारके घोड़ा और हाथी के मार्गमें रक्खे ११ उस की मजदूरी का आधा यत्न पूर्वक राजा उसके माता पिताको दे और हजार पण उसउत्तम साहस का दण्डले १२ दश मासे राज मुद्रित ताम्र का पण होता है और डेढ़ सौ कौड़ीका मोल कार्षपण कहाताहै १३ उसका आधा और उसका आधा क्रमसे मध्यम प्रथम होते हैं प्रथम अपराध में प्रथम दण्ड और क्रम से अन्य दो १४ मध्यम अपराध में मध्यम दण्ड और उत्तम अपराधमें राजा उत्तम दण्ड करै इस मिश्र प्रकरण में उपाय सहित मित्र उदासीन शत्रु कहा १५ अथ मिश्र प्रकरण में दूसरा कोश प्रकरण कहते हैं बहुत सी चीजें एक अर्थ में जहांहों उसे कोश कहते हैं १६ जिस किसी प्रकार से राजा धनको इकट्ठा करै उसी धनसे राज्य सेना यज्ञादि क्रिया की रक्षा करै १७ सेना प्रजा यज्ञ की रक्षा के लिये खज़ाने का इकट्ठा करना परलोक और इस लोकमें सुखद होता है अन्यथा दुःखदहै१८ और स्त्री पुत्रके लिये जो धन इकट्ठा करता है वह केवल भोग के लिये है या नर्क के लिये है परलोक में कुछ सुख नहीं देता १९ अन्याय से जो धन उपा-

दुर्जन करता है वह पाप भागी होता सुपात्र से जो ले अथवा दे वह बढ़ता है २० अपने वेद के सदृश सुंदर व्यय करै वह पात्र इससे अन्यथा अपात्र होता है अपात्रका धन लेतेहुये राजा दोषी नहींहोता २१ छल बल चोर के द्वारा सब तरह अधर्मी राजा का धन हरे २२ जो कोई राजा नीति और बल को छोड़ के अपने प्रजा पीड़न से धन को इकट्ठा करता है उसका राज्य शत्रु के आधीन होता है २३ दण्ड भ भाग कर की आधिक्य और तीर्थ देवताके करसे बिनाविपत्ति पड़े खजाने को न बढ़ावे २४ जब राजा शत्रु के नाश के लिये सेना रखने को हो तब विशेष दण्ड और कर प्रजा से ले २५ राजा धनी को मजदूरी दे के विपत्ति में धनले विपत्ति से छुटीपाके धनीका द्रव्य वृद्धि सहित दे २६ अन्यथा करनेसे प्रजा राज्य कोश राजा नष्ट होतेहैं और प्रबल दण्डसे राजा लोग सुर-थ आदि से हीन होते हैं २७ दण्ड भ भाग महसूल विना खजाना बीस वर्ष तक भली भांति रक्षा होती-है २८ राजा को चाहिये कि इतना खजाना राखैजि-ससे प्रजा की रक्षाहो बल सत्कोश है और कोश मूलबल अर्थात सेनाहै २९ सेना की रक्षासे खजाना राज्य वृद्धि शत्रुक्षय ये तीन होते और प्रजा पालन सेस्वर्ग होताहै ३० यज्ञके लिये द्रव्य उत्पन्न हुआहै और यज्ञ स्वर्ग सुख और आयुर्बल के लिये और यह तीनों शत्रुनाश सेना खजाना राज्य वृद्धिको

करतेहैं ३१ उस राज्यकी वृद्धि क्षमावान् नीतिनिपुण राजासे होतीहै इसकारण राजा अपनी बुद्धि बलभर प्रजा वृद्धिकरै ३२ राजा माली की तरह अपनी प्रजाके रक्षण के लिये शत्रु को तुच्छ समझके उस प्रजाके धनसे खजानेको बढ़ावै ३३ इस प्रकार जोराजा कोशको बढ़ाताहै वह नृपोंमें श्रेष्ठहै और जो राजा रोजगारसे खजाना जमा करताहै वह मध्यम और सेवा दण्ड और तीर्थ देवताके करलेनेसे जो राजा खजाना इकट्ठा करताहै वह अधमहै ३४ राजा करके हीनधन प्रजा रक्षाके योग्यहै और मध्यधन भृत्य रक्षणार्थहै जैसे स्थानापन्न अधिकारी की रक्षा राजा करै उसी तरह उत्तमों की रक्षा करै ३५ जिसका उत्तम धनहो वह धनीहै बहुतों से अधिक हो वह कुछ नहीं बारह वर्ष का धन नीचधन है ३६ और बराबर सोलह वर्षसे चला आताहो वह मध्यम धनहै और तीस वर्षसे बराबर चलाआताहो वह उत्तम धनहै ३७ अपनी विपत्तिमें इन धनोंमेंसे आधेकी रक्षा करै आधे मूलसे व्यवहार करै न व्याज लेन बनियई करै ३८ महंगीमें बेचै और सस्ती में खरीदै रोजगारी बनियां उस धनके बिना न लगावै ३९ और तरह मे प्रजाका ताप वंश सहित राजाका नाश करताहै धान्यका बटोरना तीन वर्षको पूरा करताहै ४० तत्तत्काल अर्थात् जिसकालमें जो पैदा होताहै उसको अपने देश और अपने लिये पुराना और अधिक भी होतो उस-

को बढ़ाता रहै ४१ सुपुष्ट शोभायमान जातिमें उत्तम सुखा तथा जिसमें सरसहो ऐसेधान्यको देखरक्खै४२ अच्छी तरह से बढ़ा बहुत कालतक महँगा भीहोतो ले विष अग्नि पालाको मारा कीड़ों से युक्त कभी न धरै ४३ जबतक निस्सार न हो तबतक उसको खर्च में लावै और जितनाखर्चहोजाय उतना नया ४४ वर्षभर में राजाले और उसीतरह औषधि धातु लगा काष्ठादि का संग्रहकरै ४५ उसीतरह शस्त्रअस्त्र बारूद बर्त्तन वस्त्र जोजोजिस २ कार्य्यमें साधकहो ४६ उनको संग्रहकरै क्योंकिइनसे कार्य्यसिद्धहोतेहैं और बटोरेहुये धनआदि को यत्नसे रक्षाकरै ४७ बटोरने में बड़ादुःखहै और रक्षा में उससे चौगुना दुःखहै क्षणमात्रभी उसको भुलावै तोनष्ट होजाताहै ४८ धनके बटोरनेमें जो दुःख होताहै उसीतरह नाशमें भी दुःख होता यही पुनऔर अन्यको उसतरह नहीं होताहै ४९ जो अपने कार्य्य में सुस्त होते अन्य से क्या होताहै और जो अपनेकार्य्य में चैतन्य रहता उसको उसीके समान बहुत सहायक मिलजातेहैं ५० जो मनुष्य धनका बटोरना भलीभाँति जानताहै और रक्षा करना नहीं जानता उससे दूसरा कोई मूर्ख नहींहै उसके बटोरने का फल वृथाहै ५१ जो मनुष्य एक अधिकारपर नियुक्तहो और देवताम को करै वह मर्ख जीती हुई दोस्तियों को विश्वासमे उत्पन्न कराताहै ५२ अत्यन्त लोभीहै और स्त्रियोंकर के जितहै वहीचोर जार आततायी से मनाही पूछता

है ५३ कृपण की तरह धनको रक्षा करै और समय पर विरक्त की तरह दे और बस्तु के ज्ञानमें आपही यत्न करै ५४ राजा परीक्षकों के द्वारा रत्न आदिको देखके रक्खै हीरा मोती मूंगा गोमेद इन्द्रनील ५५ वैदूर्य पुष्क राग पाचि माणिक्य इन नवों को पण्डित लोग महारत्न कहते हैं ५६ लालरत्न सूर्यको प्रिय है और माणिक्य पीला है लाल पीला सुपेद काला मोती ये चंद्रमा को प्रिय हैं ५७ पीला लाल रक्त मंगल को प्रिय है और मूंगा उत्तम है सुरैला चाष पक्षके सदृश हरितपाचि बुध प्रिय है ५८ सोनेके सदृश देदीप्यमान पीले रंग का पुष्कराग बृहस्पतिको प्रिय है अत्यन्त उज्ज्वल ताराके सदृश हीरा शुक्र को प्रिय है ५९ सघन मेघ सदृश काला इन्द्र नील मणि शनैश्चर को प्रिय है कुछ पीला लाल गोमेद मणि राहु को प्रिय है ६० बिलार के आंख के सदृश चलतन्तु वैदूर्य मणि केतुको प्रिय है सब रत्नोंमें हीरा श्रेष्ठ और सबसे नीच गोमेद और मूंगा है ६१ पाचि माणिक्य मोती ये श्रेष्ठ हैं इंद्र नील पुष्कराग वैदूर्य ये मध्यम हैं ६२ महा तेजवान् रत्नोंमें श्रेष्ठ स्पर्श का मणि दुर्लभ है जिसके मध्यमें जाल न हो सुन्दर वर्ण हो रेखा और बिन्दुसे वर्जित ६३ सुन्दर कोनेदार सुन्दर दीप्ति ऐसे रत्नको रत्न पारखी रत्नों में श्रेष्ठ कहते हैं शर्करा और दलके सदृश चिपटा गोल ६४ रत्नके वर्णकी प्रभा सुपेद लाल पीत कृष्ण जैसा वर्ण हो उसी तरह छाया और दोषवर्जित ६५ लक्ष्मी पुष्टिकी शौर्य अर्थात

मारता आयुकोदेता अन्य अशुभहै पद्मराग मणिमा-णिक्यकाभेदहै उसकारंग लालपद्मके सदृश होताहै६६ पुत्रकी चाहनेवालीस्त्री हीराकभी नपहिनै और समय पर धारण कियाहुआ मोती और मूंगा हीन होजाता है६७गारुत्मई दीप्तिवर्ण बड़ाई बैठक स्वरूप इनसे दोष वर्जितरत्न अधिक मौल्य होताहै६८मोती और मूंगा कोछोड़के और रत्नमें लोहेसेरेखा नकरै बहुधा पत्थर से रेखा करते हैं यह रत्न के जानने वाले कहतेहैं ६९ छोटा और चौड़ारत्न बड़ेमोलका होताहै हलकाऔर वर्णमें हीन थोड़े मोलका होताहै और जो उत्तम गुण हो ७० खड़ाहो उसका थोड़ामोलहै और चिपटा रत्न हो वह मध्यम है और पत्ते सदृश हो उसका अधिक मौल्यहै और गोल रत्न अपने प्रीतिके सदृशहै ७१ मोती और मूंगाको छोड़के और कोईरत्न पुराने नहीं होते राजा की दुष्टता से रत्नों का मोल कम सिवाय होजाताहै ७२ मछली सर्प शंखशूकर बांस मेघ सीपी इन सबमें मोती उत्पन्न होता परन्तु बहुत सीपिही से मोती उत्पन्न होता है ७३ काला और दोपर्त्त के भी-तर का मोती नीच और सुपेद चारपर्त के भीतर का मोती मध्यम पीला लाल सातपर्त्त के भीतर का मोती श्रेष्ठ होता है ७४ वही बेधने के योग्य होता है और अन्य सम्पूर्ण बेधने के योग्य नहीं होते और सिङ्ग-लद्वीपवासी कृत्रिममोती बनातेहैं ७५ कृत्रिम मोतीका सन्देह दूर करने के लिये मोती को परीक्षा करै कि

लोन सहित गर्म्म मीठे तेलमें रात्रिको रक्खै ७६ और चावल डाल के उसका मर्दन करै जो दूसरे रंगका न होजाय वहमोती असलीहै असलीदीप्ति श्रेष्ठ है दूसरी शोभा मध्यम शोभाहै ७७ गोमेद मणि को छोड़ के अन्यरत्नोंमें तोलनेसे दाम लगायाजाताहैऔरमोतीको छोड़केरत्न तोलनेकीरत्ती बीस अलसीकीहोतीहै ७८ चार कृष्णल की मोती कीतीन रत्ती होती हैं और उन्हींचौबीसरत्तियोंका एकरत्न टंक होताहै ७९ और चारटंकका सोना और मूंगा का तोला होता है एक रत्तीका एकहीरा८०सुविस्तृत दलकामोल पांच सुवर्ण होताहै रत्ती और दलके विस्तारसे पचगुनाहोसो श्रेष्ठ है ८१ जैसे२कम होताहै उसीतरह दाममें कम होताहै इसमें आठ रत्ती कामाशा और दशमासे का सुवर्णक होताहै ८२ पांच सुवर्णक का मोल अस्सी कर्ष होता है जितना गम्भीर हीरा होताहै उसी तरह रत्तियों के हिसाब से अधिकदाम होता है ८३ और चिपटे हीरे का एक तिहाई कम होताहै और अंकवारिके सदृश हीरेकादाम आधा उत्तम कहाहै ८४ एक रत्ती के दो हीरेहों तो आधे दामके योग्यहै अपने २ गुणकेसदृश उसी तरह आधे मोलका होताहै ८५ गुण करके हीन हीरा उत्तमार्द्ध या उसके आधेका होताहै और रत्ती भरका हीरा शतसे अधिक का होता है और बीस रत्ती को जीत लेता है ८६ जो हीरा बड़े दलका हो अथवा चिपटा हो तो सैकड़े पीछे दाम कम होजाता

है ८७ अंकवारिके सदृश हीरा हो तो पचास अथवा चालीस क्रमहोजातेहैं और काला लाल बिन्दुयुत रत्न को न धारण करै ८८ उत्तम पाच्चि और माणिक्य मोल में उत्तम सोने के तुल्य गम्भीर हो तो उत्तम है ८९ और रत्ती भरका पुष्करागा और नीलमणि स्वर्णार्द्धके तुल्यहैं तीन सूतका वैदूर्य्य उत्तम मोल का होताहै९० तोला भरका मूंगा स्वर्णार्द्ध मोलका होताहै और गोमेद मणिका कोई प्रमाण मुकर्रर नहीं है इससे बहुत थोड़ा मोल कहाहै ९१ हीरा को छोड़ के छोटे छोटे रत्नोंके मोलकी संख्या कही और अतीव दुर्लभ रत्नों का मोल इच्छासे होता है ९२ इसलिये बहुत उत्तम रत्नोंका दाम तोल से नहीं होता क्योंकि चौदह का हतवर्ग मोती की रत्ती होती है ९३ और चौबीस से भागदे लब्धि जो मिलै उससे मोल जानै सुवर्णार्द्धका रत्न उत्तम है जैसा गुणहो वैसा दामकम होता जाताहै ९४ मोतीकी रत्तियों में प्रति रत्ती नव कला होतीहै पांचभाग करके तीसका भागदे ९५ जो कुछ लब्धि मिलै उसको कला में जोड़के कलामें सा- लहका भागदे और मोलको लब्धिमें जोड़दे वहीयथा गुण मोती का मोल होता है ९६ लाल पीला गोल सुपेद मोती उत्तमहोताहै और चिपटा अधम अंकवारि के तुल्य और अन्य मध्यम है ९७ रत्नमें स्वाभाविक दोष होते और धातुमें कृत्रिम दोष होते हैं इससे धातु की परीक्षा करके उसके मोल की कल्पना करै ९८

सोना चांदी तांबा बङ्ग सीसा ये रंजकहैं और लोहाये सात धातुहैं अन्य मिलीहुई धातुहैं ९९ सबसे पहिला श्रेष्ठ है और सोना सबसे उत्तम धातुहै बंग और तांबा मिलकेकांसा होता है और तांबा और रांगा मिलके पीतल होताहै २०० सोना मानमें समहै जितना देखने में आताहै उतनाही तोलमें होताहै और थोड़ा होताहै और अन्य बहुत होते हैं एक छिद्रसे दोनों का तार खींचै तो १ धातुका सूत्र मानके समान होजाय और जिसका यंत्र शस्त्र अस्त्र बनताहै वहबडे मोलकालोहा होताहै २ सोलह गुना चांदी सुबर्ण का मोल होताहै और सोलह गुणा तांबा चांदीका मोल होताहै बहुधा अस्सी गुणा होता है ३ तांबे से अधिक डेढ़ गुना बंग होताहै उसी तरह अन्यरांगा और सीसा दोतीन गुना अधिक होता और तांबेसे लोहा छगुन है ४ यह रत्नों का विशेष मोल कहा प्रथम रत्न का मूल्य कल्पना करै और सुन्दर शृङ्ग और वर्णहो सुखसे दुहनेदे बहुत दूधहो उत्तम बछड़ा हो ५ ज्वानि दुबली हो या मोटी हो अधिक मोल होती है पीला बछड़ाहो पसेरी भर दूध देतीहो ऐसी गऊकाचांदीकापल मोलहै ६ बकरी का मोल गऊ के मोलसे आधा होताहै और बकरीसे आधा भेड़का मोल और मोटे लड़नेवाले भेड़े का मोल चांदीका एक पल होताहै ७ दश या आठ चांदी का पल गऊका उत्तम मोलहै और भेडी भेड़का चांदीका एकपल होता है ८ और गऊके सदृश डेढ़ गुना भैंस

का उत्तम दाम है और सुन्दर सींग उत्तम वर्ण वाला जल्द चलनेवाला ६ अस तोल वृषका सातपल मोल है सात अथवा आठपल भैंसा का उत्तममोलहोताहै १० होतीन चारहज़ार हाथी घोड़ेका उत्तम मौल्यहै और ऊंटका भैंसेके सदृश उत्तम दाम कहाहै ११ जो घोड़ा दिन भर में चारसौ योजन जाय वह उत्तम घोड़ा है और सुन्दर वर्ण हो ऐसहो उसका पांचसौ रुपया मोल है १२ और तीस योजन अर्थात् एकसौ बीस कोशका चलनेवाला ऊंट उत्तम है और उसका चांदी का सौ पल मोल कहा है १३ चार मासे सोने की निष्कसंज्ञा है और पांचरत्ती का मासा हाथी के दाम में कहाहै १४ और पृथ्वी में जिस के सदृश दूसरा न हो वह रत्नभूत कहाता है यथा देश और यथा सब रत्नों का मोल रक्खै १५ व्यवहार के अयोग्ययथाहीन पदार्थ का मोल नहीं होता और सबके मोल कल्पना से नीच मध्य उत्तम होता है १६ खरीदने और बेचने वालों से जो राज भाग लिया जाता है वह शुल्क है इसको लोकरीति से विचारे १७ करलेने के स्थान की चौड़ी सड़क बनवावै क्योंकि वह कर सीमा है और सम्पूर्ण वस्तु मात्र का महसूल एक बार ले १८ और राजाकुलसे राज्यसे दुबारा कभी कर न ले और खरीदने और बेचने वाले से राजा बत्तीसवां हिस्सा करले १९ और बीसवां या सोलहवां हिस्सा कर मूल विरोधकारीहै सममूल्यसे हीनबेचनेवालेसेकर न ले२०

खरीदने वाले के लाभको देखके राजा करले बहुत था मध्यम अथवा थोड़ीज़मीन मानकेलिये नियतकरै २१ जानने वाला पहिले जानके पीछे भागकी कल्पनाकरै किसीपै जास्ती न हो कि जिस्से वह नष्ट हो जाय २२ राजा मालो की तरह प्रजासे पोतले अङ्गार कारवत न ले बहुत मध्यम छोटे फलकी तारतम्य देखके पोत ले २३ राजभाग के देने से द्विगुणा फल होताहै और खेती उत्तम होती है और कम देना मनुष्य को दुखद होता है २४ तालाब बावली कुआं खतस्तालाब देवमेघनदी मातृक देशसे अनुक्रम करके २५ तृतीयांश चतुर्थांश अर्द्धांश करले और पत्थर आदि का महसूल छठां हिस्सा ले २६ रजत या प्रति कर्षमित राज भाग है और कर्षक जो मिलै उसमें बीसवां हिस्सा राजा छोड़ दे २७ सोना अथवा चांदी का कर तृतीयांश और तांबेमें चौथा हिस्सा करहै लोह और बङ्ग का छठा हिस्सा करहै २८ रत्न और क्षार वस्तु में अपने खर्च करने से जो बचाहो और खेतीकरनेवाले को आदिको लाभादि को देखके करले २९ तीनपांच सात दश प्रकार करै तथा काष्ठ आदि के लेनेवाले से बीसवां हिस्सा करले ३० बकरा भेड़ा गऊ भैंस वृद्धि से अष्टांशकरले और भैंस बकरी भेड़ी गऊ इनकेदुग्ध का सोलहवांहिस्साकरके करले ३१ काम करनेवाला और बढ़ई से दिनका काम करावै और उसकी वृद्धि से तड़ाग बावली या कृत्रिम नदी तैयार करावै ३२

यह छोटी तपका फल नहींहै वहीपृथ्वीतल में नाचता है अन्य देवता नहीं ४४ उसी राजा के आश्रित लोक होके राजाकीआज्ञानुसार प्रजाकरै और इसीसे राजा देश का फल और पाप भोग करता है४५ और जो जो राज्य जिस के राज्य में हों वहां के सम्पूर्ण प्रजा धर्म्म परहों धर्म्म नीतिपर राजा बहुत दिन तक यश को पाताहै ४६ जब तक भूमिमें कीर्त्ति रहती है तब तक वह प्राणी स्वर्ग में रहता है अकीर्त्तिही नरक है और दूसरा नरक स्वर्ग में नहीं होता ४७ पाप मूल नर देह बिना अन्य देह नरक है व्याधि आधि महा पाप रूपक हैं ४८ राजा आप धर्म्म पर होकर प्रजा को धर्म्म में लगावै और प्रमाणभूत धर्म्मिष्ठ का प्रजा उप सर्पण करै४९ देश जाति सनातन कुलधर्म्म और मुनियों करके प्राचीन अथवा नये जो धर्म्मकहे हैं उनको करै ५० राजा राष्ट्र अर्थात् देश वृद्धि के लिये यत्न पूर्व्वक इन नियमों को धारण करै धर्म्म संस्थापन से राजा लक्ष्मी कीर्त्ति को प्राप्त होताहै ५१ ब्रह्माजीने कर्म्मकरके पूर्व्वही चारभेद कियाहै उसकी साङ्कर्य्यको साङ्कर्य्यता प्रतिलोम और अनुलोमसे ५२ जातिअनन्तहैं ऐसी कोईवस्तु नहींहै ऐसामनुष्य कोई नहीं जिसके जन्मसे जातिभेद है ५३ अलबत्त वहीलोग जानते हैं जो जरायुज अण्डज स्वेदज और उद्भिज की जाति को जानता है ५४ नीच के साथ से उत्तम नीच होताहै जन्मसे अन्य नहीं होताहै और उत्तम मनुष्य

नीचतासे नीच नहीं होता जन्मसे नीचहोताहै ५५ गुण
कालके कर्म्मसे उत्तमको नीचता होतीहै विद्या कला
श्रय या उसकेनामसे जाति होतीहै ५६ यज्ञाध्ययन दान
ये ब्राह्मणकेकर्म्महैं और लेना देना पढ़ाना पूजा इतने
कर्म ब्राह्मणमें अधिकहैं५७ सत रक्षण दुष्ट नाश क्षत्रिय
की भांति कारलेना खेतीगोरक्षा नाराज्य या अधिक
बनियांकारे ५[illegible]दान और सेवा नीच कर्म्म स्वभावज है
क्रियाभेदसे सबको मजदूरोकी वृत्ति अनिन्दित है ५६
धीरके भेदसे क्रोध और मनुआदि ब्राह्मणों में औरब्रा
ह्मणाकरके सोलहगऊ अथवाबारहको गिन्तीकरै ६०
हिगव अर्थात् गऊ बैल औरधीर को अन्त्यजसेधीर
और जमीन की कोमलता देखै और ब्राह्मणकोछोड़
अन्य जाति को भिक्षा मांगना निन्दित है ६१ तपो
विशेष विविधओरविधि पूर्व्वक व्रतकरै और सरहस्य
सम्पर्ण पढ़े ६२ जो सम्पर्ण विद्या पढ़ लेताहै वह सब
में श्रेष्ठ है और वे पढ़ा जाति करके केवल गुणोंके
योग्य नहींहै विद्या और कलाअनन्तहैं इनकी संख्या
नहीं हो सक्ती है ६३ विद्या अनन्त हैं संख्या नहींहो-
सक्ती विद्या सहित बत्तीस और चौंसठकलाहोतीहैं ६४
जोजो वाचिककर्म्महैं वहसम्यक्‌विद्याभि संज्ञकहैं जो
मककरनेको समर्थ होताहै तौनकला कहाता है ६५
संक्षेप से लक्षण कहा है विशेष पृथक् कहते हैं और
विद्या और कलाका पृथक् २ कहतेहैं ६६ ऋक्यजुः
साम अथर्व्वण वेद आयुर्व्वेद धनुर्व्वेद गान्धर्व्व तंत्र ये

उपवेद हैं ६७ शिक्षा व्याकरण कल्प निरुक्त ज्योतिष छन्द ये वेद के अङ्ग हैं ६८ मीमांसा तर्क सांख्य ये वेदान्त योग कहाते हैं इतिहास पुराण स्मृति ये नास्तिक हैं ६९ अर्थ शास्त्र काम शास्त्र शिल्प अलङ्कार काव्य निदेशभाषा अवसरोक्ति यावनमत ७० धर्म्य देश विद्या संज्ञित इन बत्तीस को जानै और ऋक आदि वेद में मंत्र और ब्राह्मण में ब्राह्मण को वेद करके वर्णन किया है ७१ जिसका जप होम देवतों का प्रीतिद है जहां ब्राह्मण के लिये ब्राह्मण का विनियोग हो वहां मन्त्र शब्द का उच्चारण होता है ७२ जिस के पास ऋक रूप मन्त्र हों और पादशः अर्धशः हो और जहां ज्ञेय होव हो और समाख्यान जहां हो ७३ जहां मिले हुये मन्त्र वृत्त और गीत विना पढ़े जाते हैं अध्वर्यु का जहां कर्म होता त्रिगुण जहां पाठ होता है ७४ मन्त्र और ब्राह्मण में यजुर्वेद कहाजाताहै शस्त्र आदिकी यज्ञमें उद्गीथयज्ञमें वही साम है ७५ अथर्व्वा और अङ्गिरा उपास्य उपासनात्मक हैं ये संक्षेप में चारवेद कहे गये हैं ७६ सम्यक् आकार और औषधी को जानताहै उसका आयुर्वृत्त बढ़ता है जिसमें ऋग्वेद का उपवेद है वह आयुर्वेद कहाता है ७७ युद्ध के शस्त्र अस्त्र निपुण और उनके बनानेमें चतुर हो वह यजुर्वेदोप वेद धनुर्वेद कहाता है ७८ उदात्त आदि स्वर और तन्त्री कण्ठोत्थितस्वर ताल ज्ञान विज्ञान गान्धर्ववेद कहाताहै ७९ त्रिविध

उपास्यमन्त्रका विभेद से प्रयोगकहे हैं उपसंहारसहित तद्धर्मनियम से छः प्रकार का है ८० स्वरकालस्थान प्रयत्न अनु प्रदान से अथर्व्वण वेदका उपवेद तन्त्ररूप है ८१ सवन आदि करके वर्णों का पाठ शिक्षाहोता है और जहां यज्ञोंकाप्रयोग कहा है वह ब्राह्मणग्रंथ कहाजाता है ८२ एक श्रौत कल्प और दूसरा स्मार्त्त कल्प होताहै व्याकरण प्रत्यादि धातु संधि समास से जानो ८३ शब्द शब्द जहां कहा जाय एक वचन द्विवचन बहुवचन वहां व्याकरण जानो और जहां बहुत शब्द इकट्ठाकहे जायंवह वाक्यार्थका एक संग्रह है ८४ उसके समाज दूसरो वार्त्ता कहने से श्रोत्र संज्ञक को वेदाङ्ग कहते हैं और नक्षत्र और ग्रह गमनका काल जिससे जानाजाय वह निरुक्तहै८५संहिता और होरा से जहां गणित कहाजाय वह ज्योतिष है और मगणआदि गणोंसे गुरु लघुजोपद्यका प्रमाणजानै८६ कल्पान्त अर्थात छन्दश्शास्त्र वेदोंका पाद धारण करनेवाला है विधिभेदसे अर्थ कल्पना होतीहै ८७ मीमांसा वेद वाक्योंका न्याय करताहै भावाभावपदा-र्थ प्रत्यक्ष प्रमाणको प्रसिद्धकरताहै ८८ जहांविवेक सहित तर्क हो जो कणादआदि का मतहै पुरुष और आठ प्रकृति सोलह विकार ८९ तत्त्व आदिकी संख्या की विशेषता से सांख्य कहाता है ब्रह्मएक और अ-द्वितीयहै बहुत नहीं है ९० वेदान्तियों का सब मत शायिकहै यह अज्ञानसे मालूम होताहै क्योंकि इस

में प्राण संयमन आदि से चित्त वृत्ति निरोध कहते हैं ९१ जो एक राजा के कृत्यके विषय से कहा जाय ध्यान समाधि से वह योग शास्त्र पूर्व वृत्तान्त कहने के लियेहै ९२ जिस इतिहास सहित पूर्व वृत्त कहा जाय वह सर्ग प्रति सर्ग वंश मन्वन्तर कहा जाता है ९३ जिसमें वंशानुचरित हो वह पुराण कहाता है और वर्णोंका धर्मादि स्मरणहै क्योंकि वेदवर्णधर्म के अविरोधी हैं ९४ अर्थ शास्त्र का कीर्त्तन स्मृति कहाती है जिस में युक्ति वलीयसी और सम्पूर्ण स्वाभाविक मत है ९५ किसीका ईश्वर कर्त्ता नहीं है न वेद है न नास्तिक मत है श्रुति स्मृति के अविरोध से राज वृत्त शासन है ९६ शाशादि भेद और पुरुष के अनुकूलादिभेदसे सुयुक्तिसे धनका इकट्ठा करनाअर्थ शास्त्रहै ९७ पद्मिनी आदिके भेदसे स्त्रियों के स्वीयादि भेदहैं जिससे स्त्री पुरुष दोनों का चिह्न हो वह काम शास्त्रहै ९८ प्रासाद प्रतिमाबागघर वापी करना जहां हो वह शिल्प शास्त्र है ९९ सम न्यूनाधिकत्व समान रूप भेद से परस्पर गुण भूषण का वर्णन जहां हो वह अलङ्कारहै १०० विलक्षण चमत्कार बीजपदहो सरस लंकृत जहां ऐसा हो वह दुष्ट शब्दार्थ काव्यहै१ लोक के संकेत से अर्थोंका घटना देशकी वाक् कहाती है बिना कोशके कार्य्यको सिद्ध करती है २ यथा कालोचित जो वाक्य है वह अवसरोक्ति कहातीहै अदृश्य जगतके कारण ईश्वरहैं३ धर्मअधर्म

विना श्रुति स्मृति अर्थात् श्रुत्यादि मत भिन्न जहां धर्म्महै वह यावन मतहै ५ श्रुति में कहाहो अथवा लोक वैसा करता सोवह देशादि धर्म्महै वही देश २ कुल कुलमें है ६ विद्या के पृथक् पृथक् लक्षण कहे हैं और कलाके अलग नाम नहींहैं केवल लक्षण हैं ६ पृथक् क्रिया करके कला भेद होताहै जिस २ कला में जो प्राप्त हो उसी नामसे जाति होती है ७ अनेक वाद्य के बजानेको कला कहतेहैं हाव भावादि संयुक्त नाचनाभी कला कहातीहै ८ वस्त्र अलंकारस्त्री पुरुषों का भूषित होना कला कहाती और अनेक रूप का बनाना इसको भी कला कहतेहैं ९ अच्छी शय्याको बनाना और पुष्पका गूंथना और जूआ आदिका खेलना भी कला कहाती है १० अनेक आसन करके रति का ज्ञानकला कहातीहै यह सात कला गन्धर्वोंमें प्रसिद्ध हैं ११ फूलका रस आसव निकालना मदिरा बनाना कला कहाती है टूटे शल्य अर्थात् हड्डी का निकालना रुधिर निकालना कलाहै १२ नाना या अधिक अन्नरस के पचाने को कला कहते वृक्षादि को बनाके वृक्षादिका लगाना कलाहै १३ पाषाण आदिको भट्ठी बनाके पाषाण औ धातु के भस्म करने को कला कहतेहैं और जितने कख के विकार हैं उनका करना जानना कला कहातीहै १४ धातु और औषधोंके संयोगकी क्रियाका ज्ञान कलाहै धातु सबमें मिली हुईहो उसका जुदा करना कला कहातीहै १५ किसी धातु में

कोई धातु मिलीहो उसका अलग करना कलाहै और उसके निकालने का ज्ञान कलाहै १६ ये दश कला वैद्यकमें हैं शस्त्रचलाने में पैरका रखना भी कलाहै १७ दांवपेंचके साथ मल्ल युद्ध भी कलाहै और कला आदिसे दिखाये हुये स्थानमें निशाना लगानाभी कलाहै १८ बाजाके ऊपर सेना का, किला आदि बनाना भी कलाहै हाथी घोड़े रथ की चालपै युद्ध करना कलाहै १९ ये पांच कला धनुर्वेद में हैं अनेक तरह के आसन और मुद्रासे देवता का प्रसन्नकरना कला है २० हाथी घोड़ा आदिकी सारथ्य और उनकी शिक्षा कला है मट्टी काष्ठ पत्थर धातु आदि के बर्तन की सत्क्रिया २१ व अलग २ इन चारों का तसवीर में लिखना भी कलाहै तालाब बावली अटारी की सम भूमिकी क्रिया भी कलाहै २२ घड़ी आदि अनेक यन्त्रों का बनाना कलाहै हीन मध्य आदि संयोगवर्णों आदि से रंगना भी कलाहै २३ जल वायु अग्निके संयोगके रोकनेसे क्रिया को कला कहतेहैं नावरथ आदिक यान बनाना भी कला है २४ सूत आदिकी रस्सी बनाना अथवा उसका जानना कलाहै और अनेक सूतके संयोगसे वस्त्र बनाना कला है २५ अच्छा या बुरा अथवा वेधे रत्न आदिका जानना और सुवर्ण का ठीक ठीक जानना कला है २६ सुवर्ण या रत्न आदिसे भूषण बनाना कलाहै और सोने और चांदी आदि के भूषणमें मुलम्मा करनाभी कलाहै २७ मृदंग

आदि के कड़े मुलायम चमड़े का जानना और पशुके अंगसे चमड़ेका उतारना कला है २८ दूधदुहना आदि से घी निकालने तक कला और चोली आदि का बनाना यह भी कलाहै २९ हाथ पैरआदि से जल में तैरना और गृह और पात्र आदि साफ करना कला है३० वस्त्रधोना बारबनाना ये दोनोंकलाहैं तिल और मांसादि से तेल निकालने में कलाहै ३१ हल आदि के चलाने और वृक्ष आदिके चढ़ने अनुकूल की सेवा इनका जानना कला है ३२ बांस और तृण का पात्र बनाना और कांचका पात्र ढालना यहकलाहै ३३ सींचना और जल का रोकना लोहा भिधार और शस्त्र अस्त्र के बनानेकी क्रिया का जानना यह कलाहै ३४ गज घोड़ा बैल ऊंट पर्वत पै छोड़ना और बालक की रक्षा और उन के साथ खेलना और धारणा करना कलाहै ३५ अपराधी मनुष्य का युक्ति पूर्वक ताड़ना और नानाप्रकारके देशोंके अक्षरोंका लिखना कला है ३६ ताम्बूल की रक्षा और सरत का जानना कलाहै और शीघ्रकरनेवाला और देरमें करनेवालेके प्रतिदान हैं ३७ कलामें दोगुण हैं और दोकलाहैं यह चौसठि कला संक्षेप से कहा ३८ जिस जिस कला के आश्रित हो उसको सदा करे ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ यती ये क्रमसेहों ३९ क्रमसे ये चारआश्रम सदा ब्राह्मणकेहैं अन्य सबको यतिको छोड़ और सम्पूर्ण आश्रम होते हैं ४० विद्या सीखने के लिये ब्रह्मचारी

हो सबके पालनके लिये गृहस्थ इन्द्रियों के दबाने के लिये वानप्रस्थ और मोक्ष साधन में संन्यासी हो ४१ अन्यथा करनेसे वर्ण आश्रम जाति बचनसे दण्ड के योग्यहै जप तप तीर्थ सेवा संन्यास मंत्रसाधन करै ४२ खेती बनिज आदिक कार्य्यमें वे कार्य्य साधिका होतीहैं मीठे गान से जैसे अपने आधीन पतिहोता है ४३ मायाकार्य्य हास्यसे स्त्री ऐसा करै कि पति प्रसन्नहो न पतिकेसमान नाथहै न पतिके समान सुखहै ४४ सर्वस्व धन छोड़ के स्त्री का भर्ता शरण है पिता भाई पुत्र प्रमाण भर देतेहैं ४५ ऐसी कौन स्त्रीहै जो अमितदान देनेवाले पतिको पूजानकरै शूद्र चौथावर्णहै इससेधर्म करने के योग्य है ४६ परन्तु शूद्रवेद मंत्र स्वधास्वाहा वषट्कार बिना कर्म करै और पुराणादिके नमोन्त मंत्रोंसे कर्मकरै ४७ ब्राह्मणीमें उत्पन्न पुत्र ब्राह्मणके सदृश और क्षत्रियामें उत्पन्न क्षत्रवत कर्म्म करै और वैश्या स्त्रीमें उत्पन्नपुत्र वैश्यवत् कर्म्मकरै ४८ बनिनमें ब्राह्मण क्षत्रियसे उत्पन्न पुत्र वैश्यवत और शूद्रास्त्रीमें तो शूद्र नीचजाति के पति से उत्तम जातिकी स्त्री में उत्पन्न शूद्रसे भीनीच होताहै४९ वह नामगोत्रमें शूद्रकेही सदृशकरैं ये संकर चारवर्ण म्लेच्छ यावनहैं ५० ये वेदभिन्न प्रमाणहैं पश्चिम और उत्तर दिशामें रहते हैं उनके आचार्य्योंने उनके हितकेलिये उनका शास्त्र बनाया है ५१ व्यवहार के लिये जो स्त्री पुरुष की नीति कहीसो उसमें कहीं बीजकी माहात्म्यहै कहीं

सेवकी माहात्म्यहै ५२ जो बउत्तम श्रेष्ठ क्षेत्र बीज से होताहै जैसे विश्वामित्र वशिष्ठमातंग नारद आदि ५३ अपनी २ जातिके लिये जो धर्म्म कहाहो और पुराने लोगोंने जिसतरह कियाहो उसी के सदृश वह जाति करै अगर न करै तो राजा दण्ड दे ५४ जाति वर्णा आश्रम के स्वरूपों चिह्नोंको दिखावै यंत्र धातुकारों को राधिको रक्षाकरै ५५ राजा अपने राज्यमें कारु शिल्पी की कार्य्यके सदृश रक्षाकरै और अधिक को वृत्तिकरने वालेकी सेवा और भृत्यवर्गोंमें योजित करै ५६ और सोनार आदि चोरोंके बाप हैं और मदिरा गृहग्रामसे बाहर रक्खै ५७ राज्यमें कोई दिनमें मदिरा न पीवै ग्राममें ग्राम्य वृक्षोंको राजा लगावै ५८ उत्तम वृक्षोंको बीस हाथपर और मध्यमवृक्षों को पन्द्रह हाथपर सामान्य वृक्षों को दशहाथपर और छोटे वृक्षोंको पांचहाथ पर लगावै ५९ बकरी भेड़ी गऊका गोबर मांससे वृक्षोंका पालनकरै गूलर पीपर वट इमली चन्दन जम्भल ६० कदम्ब अशोक वकुल बेल हिरडा कैथा राजादन आम्र पुन्नाग तूत अम्ल चम्पा ६१ नीप कोका आम्र सरल अनार अखरोट भिलावा सिरसा गिंगुकेर नींब जम्भीरी क्षौद्रक ६२ खजूर देवदार कांजा फल्गु तापिच्छ सिंभला छुहारे वडी कचनार आंवला सुपारी बिजौरा ६३ बड़हड़ नारियर केला अन्य अच्छे फल वाले और शोभपुष्प जो वृक्ष इनको ग्रामके निकट लगावे ६४ और जो

होती और सत युग में दश तालकी मूर्ति और त्रेता युगमें नव तालकी मूर्ति होती है ९० और द्वापर में अष्ट ताल की मूर्ति और कलियुग में सात तालकी मूर्ति होती है और नव ताल की मूर्ति मुख एक ताल प्रमाण होता है ९१ चार अंगुल का ललाट और उसी तरह अधो नासा कर और नाकके नीचेसे ठाढी तक चार अंगुलहोताहै ९२ चार अंगुलका गला और एक तालका हृदय होता और एक तालकी शोभितना भी होती है ९३ और नाभी के नीचे एक भाग का लिङ्ग होताहै और दोतालकी चौड़ी जंघा और चार अंगुल जानु होती है ९४ जङ्घा और ऊरू समकरै औरगुल्फ के नीचे चार अंगुलकरै यह नवतालका बुधलोग ऊर्ध्वमानकहा है ९५ और शिखासे लेके के शान्त तीन अंगुल का सब प्रमाण है सात या आठ तालका जो मान से विभाग न हो ९६ चार ताल की भुजा अंगुली सहित कही हैं और स्कन्ध से कोपरान्त बीस अंगुल उत्तमहै ९७ और कांखसे नीचे कोपरान्त तेरहअंगुल यह अट्ठाइस अंगुल मध्यमान्त कर कहाता है ९८सात अंगुलका करतल और बीचकी उंगुली पांच अंगुलकी साढ़ेतीन अंगुल का अंगूठा तर्ज्जनी उतनीही करै ९९ और अन्यका पर्व्वद्वयात्मक तीन २ पोरकाकरै और अर्द्धांगुल या अंगुल करके हीन तर्ज्जनी होतीहै ४०० कनिष्ठिका अनामिका से न्यून होती है और चौदह अंगुल का पैर और एक अंगुलका अंगूठा होता है १

दो अंगुल की केंगुनी होती और इत अंगुलको अन्य सम्पूर्ण अंगुलियां होतीं और सिर को आड़ पर्याप्त, पार,गूढ़,गुल्फ होतेहैं २ मूर्तिके जाननेवाले जो मूर्ति के अंगकहेहैं वे मानसे न अधिकहैं न कम तो उत्तम है ३मूर्ति न मोटीहो न बहुत पतलीहो सब अंग मनो- रमहों सबअङ्ग से सर्व रम्य कोई लक्षण में होताहै ४ शास्त्रमानसे जो रम्यहो वहीरम्यहै अन्य नहीं शास्त्र मान विहीन परिडतोंको अरम्यहै ५ और एक किसी को यही जिसमें जिसका चित्तलगै यहां अष्टांगुलका ललाटहोता और तावन्मात्र भौंह ६ अर्धांगुल धनुषके सदृश आयतलिखै और तीन अंगुलकालम्बा और दो अंगुल का चौड़ा नेत्रहो तोशुभ है ७ उसका तृतीयांश पुतली कालीहोती भौंहकाबीच दो अंगुल और नाक का मूल बराबरहोताहै ८ और नासिकाके अग्रभाग और उसके दोनों छिद्र दो अंगुलका होता है शुकके मुखके सदृश या सीधी नासिका शुभ है ९ तिउपावके सदृश नासिकाके दोनोपुट सुन्दरहों और कान भौंहकेसमान और बड़े चार अंगुलके हों १० कर्णपाली दो अंगुल की हो और मोटी हो तो आधअंगुल और नाक का बांसा आध अंगुलसुन्दर अग्रभाग और कुछ उठाहो ११ गालोंकी जड़से कन्धे तक आठ अंगुल हो और दोनों भुजाका अन्तर दोताल और स्कताल स्तनका अन्तर हो १२ दोनों कानोंकाअन्तर सोलह और कर्ण चाढ़ी का अन्तर आठ अंगुल का कहा है १३ और उसी

तरह नाक और कानका अन्तर जानना और उसका आधा नेत्र और कान का अन्तर कहा है मुख चार अंगुल ओष्ठ और मुखसे अर्द्ध अंगुलका अन्तरहो १४ और शिरकाघेरा बत्तीस अंगुलकाकहाहै दश अंगुल का चौड़ा और बारह अंगुलका लम्बा १५ और ग्रीवा मूल की परिधि अर्थात घेरा बाईस अंगुल का और हृदयके मूलमें जो घेरा होता है वह चौवन अंगुलका हो १६ एक अंगुलकम चार तालका हृदयका घेरा होता और स्तनसे पीठ तक बारह अंगुलकी मोटाई हो १७ साढ़े तीन ताल दो अंगुल अधिक कमरका घेराहो चार अंगुल उँचाई और छः अंगुल का विस्तार हो १८ स्त्री के नितम्ब के पिछले भागमें एक अंगुल अधिकहोता है और भुजाके अग्रभाग का घेरा सोलह या अठारह अंगुल का होता है १९ हस्त मूल के अग्रभागका घेरा चौदह या दश अंगुल और पैर और हाथ के तलका विस्तार पांच अंगुलका हो २० जांघके मूलका घेरा बत्तीस अंगुल काहो और जांघके आगे उन्तीस अंगुल का होता है २१ जंघा मूल के अग्रभाग की परिधि अर्थात घेरा सोलह या बारह अंगुलका होताहै और चार अंगुल की मध्यम मूल परिधिहै २२ तर्जनी अना-मिका अँगुलियों की परिधि अर्थात घेरा साढ़े तीन अंगुलहो और कनिष्ठिकाकी परिधि मूलमें तीनअंगुल हो २३ और अपनी मूलपरिधिसे पाद हीन आगे की परिधि कहीहै और हाथपैर अँगूठाकी परिधि क्रमसे

चार और पांच अंगुल परिधि जानो २४ और पैर की अँगुलियों की परिधि तीन अंगुल कही है और स्तनमण्डल और नाभी डेढ़ अंगुल अथवा एक अंगुल कहाहै २५ जैसे सब अंग शोभितहों वैसा यथायोग्य बनावै ऊर्ध्व दृष्टि अधोदृष्टि आँख मुंदी ऐसी मूर्ति न बनावै २६ और कठोर दृष्टिकी मूर्ति न बनावै प्रसन्न-सी मूर्ति बनावै और मूर्ति का तृतीयांश या अर्द्धांश देव पीठबनावै २७ प्रतिमाका दूना तिगुना या चौगुना द्वार बनावै एक या दो या तीन अथवा चार हाथ देवालयका पीठ बनावै २८और पीठसे दशहाथ ऊंची दीवारकरै और द्वारसे ऊंची दुमंजिलेकी दीवार बना-वै २९ उँचाई के सदृश दूना या तिगुना शिखर बना-वै एक भूमिको लेकै सवासैगुना ऊंचा करै ३० अपनी शक्तिके सदृश अष्टपत्र कमल के माफिक प्रासाद ब-नावै और चारों दिशामें मंडप अथवा चारशाला बना वै ३१ हजार स्तम्भसेयुक्त प्रासाद उत्तमअन्यसम और अधमहैं और प्रासाद या मंडपमें जो शिखर बनावै३२ तो इसमें स्तम्भ न लगावै वहां भीतिही सुखप्रद है और प्रासादमध्यविस्तार प्रतिमाके चारोंतरफहो३३ दूगुना या अठगुना आगे विस्तारहो और वाहन मूर्तिके सदृश या डेढदुगुनाकहाहै३४ जहां देवताका रूपनहीं कहाहै वहां चतुर्भुज बनावै और जहां आयुध नहींकहा वहां अभय और वरदे ३५ नीचे और ऊंचेके हाथोंमें शङ्ख चक्र अंकुशपाश वा डमरु शूल कमल कलश माला३६

खड्ग, मातुलंग, वीणा, माला, पुस्तक जिस मूर्त्ति में बहुत मुखहों वहां पक्तिसे अस्त्रादिदे ३७ वह मुख ग्रीवा और मुकुटहो भिन्नहो परन्तु मुख आंख, कानसुन्दरहों और भुजा जहां बहुतहैं वहां स्कन्ध भेदननहींहै ३८ कूर्पर के ऊपर अंग छोटा चिपटा मजबूत बनावै और पक्षमूल के सदृश भुजमूल करै ३९ ब्रह्माजी की मूर्ति में चारो ओर मुखबनावै और हयग्रीव, वाराह, नृसिंह, गणेशजी ४० इनके मुखको छोड़ अन्यसबनरा- कारबनावै और नृसिंहको नखबिना नराकार बनावै ठहरीहुई आसनपैबैठीहुई वाहनपैस्थित ४१ इष्टदेवको प्रतिमाको पहिले कहेहुयेकेसदृश बनवावै दाढ़ीऔर पलक मारने से रहित सदा सोलह वर्ष की मूर्तिज्ञा- तहो ४२ दिव्याभरण और दिव्य वस्त्र संयुक्त दिव्य वर्ण और दिव्यक्रिया सहितहो और हीनांगी और अधिकाङ्गी देवता कहीं न बनावै ४३ हीनाङ्गी मूर्त्तिस्वामी को मारती और अधिकाङ्गी बनानेवाले को दुबली मूर्त्ति अकालको देती और मोटी मूर्त्ति रोगकी देनेवा- ली होती है ४४ जिस मूर्ति के सन्धि, हड्डी, शिरागुप्तहों वह सदा सुख देनेवालीहोतीहै और वर, अभय, कमल, शङ्ख से विष्णु की सात्विकी मूर्ति बनती है ४५ मृग, वाजा, अभय, वरहाथमेंलिये चन्द्रमाकीसात्विकी मूर्ति होती और वर, अभय, कमल, लडुआहाथ में लिये गणेश जीकी सात्विकी मूर्तिहोती है ४६ पद्म, माला अभय, वर हाथमें लिये सूर्यकी सात्विकी मूर्त्ति होती और

बीणा बिजौरा, अभय, वर हाथ में लिये लक्ष्मीजी की सात्विकीमूर्तिहोतीहै ४७ शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म आयुधों से अलगअलग विष्णुआदिकी मूर्तिके छःछःभेदहैं ४८ जिसतरह उपाधि भेदसे संयोग और विभाग होताहै उसीतरह समस्त व्यस्त वर्ण आदिका ज्ञान होता ४९ लेख्याअर्थात् लिखीहुई लेप्या सैकती अर्थात् बालूकी और मिट्टी की पीठेंकी इन मूर्तियोंमें लक्षण नहो तो कुछदोष नहींकहा ५० नर्म्मदेश्वर स्वयंजात चन्द्रकान्त समुद्भव रत्नकीमूर्ति शालग्राम इनमें मान दोषनहीं होता ५१ पाषाण और धातु की मूर्तिमें मानका दोष विचारै श्वेत, पीत, रक्त, कृष्ण इन पत्थरों की मूर्तियुग भेदसे हैं ५२ यथा रुचि बनाने वाला बनावै या और कोईकहे श्वेत मूर्ति सात्विकी और पीली लाल राजसीमूर्ति होती है ५३ और कालेरंगकी मूर्ति तामसी जो कहेहुये लक्षणोंसे युक्तहो सोना, चांदी, तांबा, पीतल वा कृतादि की ५४ शङ्करकी श्वेतवर्ण और विष्णुकी मूर्ति कृष्ण वर्ण सूर्य्य, शक्ति, गणेश ताम्र वर्ण कही हैं ५५ लोहा या शीशा की चल हो अथवा स्थिरहो जैसा बुधों ने कहाहै बनावै और प्रासादादि पहिले कहेहुये लक्षणों के सदृश बनावै ५६ सर्व्व दुःखकी नाश करने वाली अन्य प्रतिमाका स्थापन न करै सेव्य सेवक भाव से प्रतिमा का लक्षण कहाहै ५७ प्रतिमा के जो दोष वहसर्व्वत्र ईश्वर चित्तपूजकके तपोबल से क्षणमें नाश कोप्राप्तहोते हैं ५८ देवता केसम्मुख मण्डपमें बाहन को

धरै सुन्दर चोंच और आंख से युक्त द्विबाहु गरुड़जी कहे हैं ५९ नराकार चोंच, मुख, मुकुट, कवच, वजुल्लाधारण किये हाथजोड़े नम्रशिर और सेवा करनेके योग्य चरण में दृष्टिलगाये ६० जो जो पक्षी देवतोंके वाहन हैं और सिंह वृष आदि ये काम रूपधरहैं जब जैसा रूप चाहतेहैं धर लेते हैं ६१ इनके नामके सदृश बुध लोग सदा बनावें सुन्दर भूषण पहिने देवता के आगेमण्डप में ध्यानतत्पर रहैं ६२ बिलारके सदृश पीला काले चिह्न बड़ा शरीर गलकेश रहित व्याघ्र कहाता है और सूक्ष्मकटि सिंहहोता है ६३ बड़े भौंह, कपोल, नेत्र, भाल रेख मनोहर गलकेशयुक्त धूसर अरुण लांछन महाबली ६४ व्याघ्र और सिंहमें गलकेश और लांछनों से भेदहै कामसे भेद नहीं गजाननको नरके सदृश छोटा कान बड़ा पेट ६५ बहुत पुष्ट और सघन कन्धा चरण हाथ हों और बड़ी सूंड टूटा बायां दांत वाहन को देखते हुये ६६ थोड़ी टेढ़ी सूंडको बाजूमें डारे विराजित सन्धि और धमनी की हड्डी गूढ़ सदा मान संयुत ६७ साढ़ेचार तालमित समस्त शुंडा दण्ड दशअंगुल मस्तक अगरण्ड चारअंगुल६८ बाकी सूंड नाक और ऊपरका ओष्ठरूप सपुटकरा कहाती है दशांगुल कानकीलंबाई और आठ अंगुलविस्तार ६९ कानोंके बीचकाव्यास दो अंगुल एकताल और मस्तकका घेर छत्तीसअंगुल हो ७० नेत्रोपान्त में परिधि अर्थात् घेरा मस्तक के तुल्य सदाजानना और नेत्रके नीचलेभागकी दोअंगुल

दोताल ७१ कर और कराग्र पुटकरमें दश अंगुल प-
रिधि तीन अंगुल गले की लम्बाई और परिधि तीस
अंगुल ७२ पेटमें तोंद चार ताल का और बनानेवाले
को चाहिये छः अंगुल या अष्टांगुल बनावै ७३ छः
अंगुलका लम्बा दांत और उसके जड़का घेरा भी छः
अंगुल करे नीचे का ओष्ठ छः अंगुल अकमल युत
पुटकर ७४ जांघकी जड़की परिधि छत्तीस अंगुल और
जांघके आगेकी परिधि तेईस अंगुल ७५ जंघाके मूल
की परिधि बीसअंगुल और बाहुमूल आदिकोपरिधि
दो अंगुल अधिक दो अंगुल ७६ कान नेत्र का अन्तर
सदा चार अंगुल का और मूल मध्य अग्रका अन्तर
दश सात छः अंगुलका हो ७७ नेत्रकेजाननेवाले गणेश
के नेत्र में विशेष कहा है ऊँचाई और मोटाई जैसी
स्त्रियोंके कुचमें होतीहै उसीतरहहो ७८ स्त्रीकी कटिमें
दो अंगुल अधिक तीनतालकी परिधि होती है और
अन्य सम्पूर्ण स्त्रियोंके अंगको साततालमें विभावना
करै अर्थात विभागकरै ७९ साततालकेमानमें भी मुख
बारह अंगुलका होता और बाल आदि की दीर्घता
पृथक् पृथक्ले ८० लड़केका गला छोटाहोताहै शिर
बड़ाहोता है बालकके गलेकेनीचे जिसतरह बढ़ता है
उसतरह शिर नहीं बढ़ता ८१ कण्ठके नीचे मुख के
प्रमाण से साढ़ेचारगुना बढ़ता है द्विगुण लिङ्गपर्यंत
बाकी नीचेकाशेष हड्डियों से ८२ सवा दूना हाथपाँव
और मुखमें दुगुना न ले मुटाई में मानन होंहै जैसा देख

यहै कल्पना करै ८३ पांच वर्ष के ऊपर बालक नित्य बढ़ताहै सोलहवें वर्ष बालक सर्वाङ्गपूर्ण स्त्रीके योग्य पुरुष होता है ८४ तबसे सप्ततालादि प्रमाण के योग्य होता है कोई लड़कपन में शोभा युक्त होता कोई ज्वानीमें कोई बुढ़ापे पै ८५ मुखके नीचे तीन अंगुल गला और नव अंगुल हृदय और पेट, बस्ति, सक्थि अठारह अंगुल ८६ घुटना तीनअंगुल और जंघा अठारह अंगुल गुल्फ के नीचे तीन अंगुल यही सात ताल हैं ८७ चार अंगुलका गला हृदय दश अंगुल दशअंगुल का पेट औ दश अंगुल की बस्ति ८८ इक्कीस अंगुल सक्थि और जानु चार अंगुल इक्कीस अंगुल जंघा और गुल्फके नीचे चार अंगुल ८९ आठताल प्रमाण का यह सदा प्रमाण कहा है तेरह अंगुल मुख और तेरह अंगुल हृदय होता है ९० उदर और बस्ति को दशताल सदाले गुल्फके नीचे और गला पांच अंगुल कहेहैं ९१ छब्बीस अंगुल सक्थि उसी तरह छब्बीस अंगुल जंघा एक अंगुल मस्तक का मणि इस तरह दश तालमें कल्पना करै ९२ पचास अंगुल भुजा दश तालमें कहे हैं और हीन प्रमाणमें दोदो अंगुल न्यून करता जाय ९३ शोभा के सदृश चतुरता के साथ सम्पूर्ण मानों में कल्पना करै नव ताल के प्रमाण से न्यूनाधिक देखै ९४ दश ताल में चरण पन्द्रह अंगुल और हीन प्रमाण में एक एक अंगुल न्यून करदे ९५ मूर्त्ति भेदके जाननेवाले श्रेष्ठमानमें भी हाथकी मध्यमा

अंगुली को पांच अंगुलसे कम और छः अंगुल से अ-
धिक नहीं कही है ९६ मूर्ति बनाने वाला कहीं तो
बालक के सदृश और सदा जवानके सदृश बनावै वृद्ध
के सदृश कभी न बनावै ९७ इस प्रकारके देवता को
राजा अपने राज्यमें स्थापित करै और प्रति वर्ष उन
देवताओंका उत्सव देखै ९८ देवालय में मानहीन और
टूटीहुईमूर्ति स्थापित न करै और देवों के पुरानेस्थान
और पुराने देवता का यत्नसे उद्धारकरै ९९ देवता को
आगेकरके नाच आदिकोदेखै अपने भोग में सदानन्द
न हो सदा यत्नपूर्वक राजारहै ५०० प्रजाओंने जो २
उत्सव धारण किया है उसको राजा पालता रहै प्रजा
के आनन्दमें प्रसन्नरहै और प्रजाके दुःखमें दुःखीहो १
व्यवहार को देख के दुष्टों का निग्रह करै ऐसी प्रजा
आज्ञाको मानती और अधीन रहती है २ शत्रु अपने
इस प्रयोजन का हानिकारक होता और दुष्ट पापका
प्रचार करताहै प्रजाका पालन यही इष्टसम्पादन है ३
शत्रुके अनिष्ट कारणसे निवृत्ति शत्रुनाश है और जिस
राजाने दुष्टोंकोनिकाला उसनेपापाचारकोनिकाला ४
प्रजाका धर्म पै चलनेका कारण सदसद्विवेक है और
जिससे अर्थ सिद्धहो वह व्यवहारहै ५ धर्मशास्त्र के
अनुसार क्रोध लोभ वर्जित व्यवस्थापक मंत्री ब्राह्मण
पुरोहित सहित ६ एकाग्र चित्त हो क्रम से व्यवहारों
को देखै एकमनुष्य कार्यको न दे और दोनों वादियों
के वचनको सुनै ७ राजा एकान्त स्थित हो या सभा

वालों को अपने निकट बैठाके पक्ष पाताथि रोप के पांच कारणोंकोदेखै ८ राग,लोभ,भय,द्वेष दोनों वादियोंसे सुनै और जो राजा सुखी होके पड़ा रहता है परके कार्य को नहीं देखता ९ वह राजा प्रत्यक्ष घोर नैरकमें पड़ताहै जो अधर्म या अज्ञान से कार्य करता है १० ऐसे दुष्ट राजा को थोड़े दिनमें शत्रु जीत लेते हैं अस्वर्यलोक नाशी शत्रुकी सेनाको भयदेनेवालाहोता है ११ राजाके वचनकी क्षति आयु और वीज हर है इससे राजा शास्त्रानुसार कार्यकरै १२ जो राजा आप कार्य्य विनिर्णय न करै तो वेद के जानने वाले अपने स्थान पर ब्राह्मण को नियुक्त करै १३ इन्द्रिय जित कुलीन मध्यस्थ अनुद्वेग कर स्थिर परलोक से भीत धर्मिष्ठ उद्युक्त क्रोध वर्जित वह ब्राह्मण ऐसा हो १४ और जो ब्राह्मण पण्डित न हो तो क्षत्रियको नियुक्त करै या धर्मशास्त्रज्ञ वैश्यको नियुक्तकरै शूद्रको कभी न करै १५ जिस वर्ण का राजाहो उसी वर्ण वाले को अपनी जगहपर नियतकरै क्योंकि उस वर्ण में बहुधा बुद्धिमान लोग उत्पन्न होतेहैं १६ व्यवहार का जानने वाला प्राज्ञ वृत्त शील गुण युक्त शत्रु और मित्रमें समान धर्म्मज्ञ सत्यवादी १७ निरालस जित क्रोध काम लोभ प्रिय बोलनेवाला ऐसे मनुष्यों को सब जाति में राजा मुसाहिबकरै १८ किसान काम करनेवाला राज व्याज लेने वाला नाचने वाला चिह्नी चोर ये लोग अपने धर्म्म के सदृश निर्णय करैं १९ इनका निर्णय

आपस में न हो तो अन्य अपनी जातिवाले से निर्णय करावै और ब्राह्मणोंके आपस में झगड़ा हो २० तो अपना हित चाहनेवाला राजा कुछ न कहै और तप- स्वियोंके कार्यको त्रैविद्यकरावै २१ मायावी योगियों और अच्छे ज्ञानीको क्रोध करके उपदेश न करै २२ उत्तम जातिवाले और आचार्य गुरू तपस्वी आरण्यक आपसमें करैं और सार्त्थिक सार्त्थिक केसाथ काम करै २३ सेनावाले सेनावालों के साथ और गांव वाले दोनों तरफके लोगोंके साथ जो जिस काम में नियुक्त हो वह उसको पूर्णाकरै २४ वहांके गुण दोषको वही लोग विचारसक्तेहैं और राजा परीक्षा लियेहुये सभा- सदोंको मुकर्ररकरै २५ व्यवहार के बोझके लेजानेमें जो बैलके सदृशहो लोक वेद और धर्म्मके जाननेवाले सातपांच अथवा तीनको नियुक्तकरै २६ जहांब्राह्मण लोग सभामेंहों वह सभा यज्ञ समानहै वहां अच्छे च- तुर बनियों को श्रोता नियुक्त करै २७ अनियुक्त हो अथवा नियुक्त धर्म्म कहनेके योग्यहै यथार्थशास्त्र का जानने वाला देववाणी कहताहै २८ सभा में जाय नहीं असमञ्जस न कहै कहै या चुप रहै तो मनुष्य पापी होता है २९ जिसको भली भांति राजा कुल पांति गण जानता हो वे लोग साहस और चोरी को छोड़ अन्य कार्य्य करैं ३० श्रेणी वाले विचार कर के करैं जो कुलवालोंने न विचाराहो और जो श्रेणी वालों ने न जाना हो तो उस को गण वाले करैं और

गणावालोंने जानाहो तो उसको नियुक्त करें ३१ कुल वालोंसे सभावाले अधिक हैं और सभावालोंसे नायब अधिकहै और धर्म्म अधर्म्मका नियोजक राजा सबसे अधिकहै ३२ उत्तम अधम मध्य विवादोंके विचारसे सब बुद्धियों के ऊपर ईश्वर बुद्धि होती है ३३ एक शास्त्र का पढ़नेवाला कार्य्य निर्णय को नहीं जानता इसलिये बहुत शास्त्र जाननेवाले को बिवाद में राजा नियुक्त करै ३४ आत्म ज्ञानी जो कहता है वही धर्म है और एक या दो अथवा तीन बारका विचार करता है ३५ राजा श्रेष्ठ सभासदों को अलग कार्य्य दे अर्थी और प्रत्यर्थी को राजा सभा वालों के द्वारा देखतारहै ३६ सभाकेलोग धर्म्म वाक्यसे उनका रंजन करैं और उनका भय छुड़ावैं राजा ऐसे सभासद नियत करै जो स्मरण रक्खैं गणाक और कार कुन हों ३७ सोना अग्नि जल और स्वपुरुष दश साधन ये दशांग करण जिस राजामेंहों ३८ जिससभाकी न्याय में मतिहो वह सभा यज्ञके समान है और इन दशोंके अलग२ काम कहे हैं ३९ मालिक वक्ता शिक्षा करने वाला सभावाले कार्य्यकी परीक्षा करनेवालेहों स्मृति निर्णयके करनेवाले जप दान अथवा दम ४० शपथके लिये सोना और अग्नि और तृषित और सुत्र के जल गणाक अर्थ को गिनै और लेखक न्याय लिखै ४१ शब्द के तत्त्व के जानने वाले गिनती में निपुण पवित्र अनेक तरह के लेखके जानने वाले ऐसे गणाक

लेखकको राजा नियुक्त करे ४२ धर्म्म शास्त्र के अनु-
सार अर्थ शास्त्र विवेक करे स्थान में यात्रा करे वही
अधिकरण है ४३ ब्राह्मण और मन्त्रज्ञ मन्त्रियों के
साथ राजा नम्रता सहित सभामें जाय ४४ धर्म्मासन पै
स्थित कार्य्यका प्रारम्भ कर पूर्व उत्तर में सम होके
राजा विवादी से पूछे ४५ प्रति दिन देश दृष्ट और
शास्त्र दृष्ट हेतुओंसे जाति देश और श्रेणीके धर्म्म ४६
कुल धर्म्म को देखके अपने धर्म्म का पालनकरे और
देश जाति कुल में जो धर्म्म प्रथम प्रवृत्त होरहे हैं ४७
उनका उसी तरह पालन करे अन्यथा प्रजा घबड़ा
जातीहै दक्षिणी ब्राह्मण मामाकी लड़की के साथ
विवाह करतेहैं ४८ मध्य देश में कर्म्म कर शिल्पी
विशादक मछली खानेवाले मनुष्य और स्त्रीव्यभिचार
रत हैं ४९ उत्तरदेशसेंस्त्री सद्यप हैं और रजस्वला स्त्री
को सब स्पर्श करतेहैं और खसदेशवालेविना स्वामी
की भाई की स्त्री का ग्रहण करतेहैं ५० इन कर्मोसेये
प्रायश्चित्त के योग्य नहीं होते जिन के परम्परासे
प्राप्त प्रवीनोंने कियाहै ५१ वे लोग उनसे दूषित नहीं
होते दूसरे के आचारको नहीं करते और राजासध्या-
ह्न में न्याय को देखे और पूर्व्वाह्न में स्मृति को ५२
मनुष्य मारण साहस चोरीके काममें इसमें कालनि-
यम नहींहै शीघ्र विवेक करे ५३ मन्त्रियोंके साथ
धर्म्मासन पै बैठे राजाको देख निकट जाके जो अध-
र्म्म से घिराहो कहै ५४ सत्य विचारके या लिखवा-

के एकाग्र चित्त हो हाथ जोड़ नमस्कार कर अपने प्रयोजन को कहे ५५ ब्राह्मणों सहित राजा यथा योग्य आदर करके सान्त्वसे समझाके अपने धर्म्म को कहै ५६ समय पै कामवाले नम्र सम्मुख खड़ेहुये से राजा पूछैकि तुम्हारा क्याकामहै डरोमत कहो५७ किससे कहां कब कोह दुरात्मासे तुम पीड़ितहुये इस प्रकार पूछ के राजा उसके बचन को सुनै ५८ प्रसिद्ध लेख और भाषा करके उसके कहे हुये को लेखक लिखैं और जो अर्थी प्रत्यर्थी का बचन उसको अन्य के कहेके सदृश भी लिखै ५९ राजा चोर की तरह लेखकको त्रास दिखावै अगर लिखने वाला अच्छीतरह नहीं लिखा तो सभावाले कभी न कहैं६० जबरदस्ती उससे लिखवाया है तो लिखनेवाले को चोर की तरह दण्ड दे और राजा न हो तो प्राड्विवाक सभामें पूछै ६१ अथवा प्राड्विवाक दोनों वादियोंसे पूछै और सभावालों के साथ विचार करके धर्म्म अधर्म्म कहै ६२ सभाके हित योग्य सभ्य उत्तमहैं और स्मृति आचारसे हीन मार्ग करके दूसरे केकहने में न आवैं ६३ जो राजा से कहा जाय वह व्यवहार है राजा और राजपुरुष स्वयं कार्य्य न उत्पन्न करैं ६४ प्रेम लोभ क्रोधसे किसीको राजा न दबावै अपनी बुद्धि से पराये अर्थ को भंग न करै६५ छल और अपराध राजाकेस्थानहैं बतलानेवाले विना राजा इनका ग्रहण करैं ६६ सूचक और स्तोभक से

उसको मुख्यताको देखै शास्त्र अर्थीको निन्दा कर
राजा कुछनहीं करता जो पहिले कहिदे वह स्तोभक
कहलाता है और परायेके दोष देखने के लिये राजा
जिसको मुकर्रर करै ६७ और आके राजासे कहै वह
सूचकहै और राह बिगाड़ने वाला परासेना कोटका
लांघनेवाला ६८ जल स्थान और घरका बिगाड़ने
वाला भरी खन्दक भाठनेवाला राज छिद्रका प्रका-
शक ६९ अन्तःपुर वासगृह भाण्डागार रसोई इन
स्थानों में बिना भेजा हुआ जाय और भोजन को
देखै ७० बिष्टा मूत्र थूक बात इनको जानके राजा के
आगे छोड़ै और पलंग पर आसन लगावै और आगे
की जगह रोकै ७१ राजा सेभी उत्तम पोशाक पहिन-
नेवाला धरेपै छिपजाय और जो छोटे दरवाजे होके
कुवेलामें जाय ७२ शय्या आसन पादुका शयनासनपर
बैठनाराजाके सोनेकेसमय जो समीपरहै ७३ राजशत्रु
सेवीबिना दियेहुये आसन पै बैठनेवाला अन्य का वस्त्र
आभरण सोने का पहिरनेवाला ७४ अपने आप
ताम्बूल लेके खानेवाला बिना पूछे कहने वाला राज
निन्दक ७५ एक [illegible] तेल लगाये बाल खोले अव-
गुण्ठित बिचित्रितांग मालापहिने ऊपर का वस्त्र वे-
कायदे ओढ़े ७६ शिरके बाल झांकनेवाला छिद्रको
ढूंढ़नेमें तत्पर आसंगी बाल खोले नाक कान नेत्रका
दिखाने वाला ७७ दांतका रँगो नाक कानको सिको-
रनेहारा राजा के समीप ये पचास छल हैं ७८ आज्ञा

के न मानने वाले स्त्री बध बर्णसंकर पर स्त्री गमन चोरी पति बिना गर्भ ७६ वचनकी कठोरता थोड़े अपराधमें बड़ा दण्ड गर्भ का पतन ये दश अपराध हैं ८० उत्कृती सस्यघाती अग्नि देनेवाला राज द्रोह कर्त्ता राज मुहर कातोड़ने वाला ८१ राजाकी सलाह तोड़ने वाला बँधेहुये को छुड़ानेवाला अस्वामि धान्य काबेचनेवाला या किसीकोदे डाले जोदण्डकोढूंढै ८२ नकारे के बाजनेका ढाकने वाला बिना मालिक का द्रव्यलेनेवाला राजाकी वस्तुलेनेवाला अपराध बिना-मान ८३ इनबाईसपदको पण्डितलोग राजाके जानने योग्यकहतेहैं उन्मत्त क्रूर वाक् क्रूरवेष गर्बिततेज ८४ साथ बैठनेवाला अति मानी वादी दण्ड पाता है किसी अर्थी ने जिसकी नालिश की हो ८५ सब के समझने वाली जो प्राड्विवाक आदि में पहिले अ-र्थीसे पूछके यथार्थ बिचार करके ८६ प्रार्थितहो के हीनकी पूर्णताकरके बहुतगवाहीनदे और वादीको गवाहोंके सहित राजा मुहरकरे ८७ पक्षका प्रयोजन बिना जाने जो उत्तर दिलाताहै प्रीति लोभ भयविरु-द्ध स्मृति जो अधिकारी उत्तर [illegible] है ८८ ऐसे सभा वाले को दण्डदेके राजा अधिकार से गिरादे जिससे ग्राह्य अग्राह्यका सब लोग समाश्रय करें ऐसे बिवाद को विचारे ८९ जिसने पूर्व पक्ष कियाहो उसको राजा रोक ले राजाकी आज्ञा से सत्पुरुष सत्यमांहै वचन से ९० निरालस दिलकी बात जानने वाले दृढ़

शस्त्र अस्त्रके धारण करने वाले वक्तव्य अर्थमें न टिकने वाला उनके बचनका टालने वाला ९१ अर्थी जब तक बुलाया न जाय तब तक प्रत्यर्थी को शपथ अथवा राजाज्ञा से बादवाले को निषेध करै ९२ कालकृत स्थानासेध प्रवासके कर्म्म से हो वह आसेध चार तरहका है असिद्ध नहीं टाल सक्ता ९३ जो इन्द्रियके निरोध वाणी और श्वासके बात अनासेध से आसेध करै वह दण्डयहै अति कभी नहीं ९४ आसेध का समय आसिद्ध है आसेध को जो टालता है वह अन्यथा करने के योग्य है और आसेध करतेहुये दण्ड के योग्य नहीं होता ९५ राजा जिस पुरुष का अभियोग तत्त्व या आशंकासे करता है उसको चपरासी या सेवक से बुलावै ९६ असत्व के साथ से शंका होतीहै अथवा जिसमें शंका होचुकीहै उसके करने से वोढाके अभिदर्शनसे चतुर लोग तत्त्वको जानतेहैं ९७ अयोग्य बाल वृद्ध बिषम क्रिया कुल कार्य्य घात में व्यसनी नृप कार्य्योत्सवाकुल ९८ प्रमत्त मत्त उन्मत्त दुःखी सेवकों को राजा न बुलावे और हीन पक्षायुवती कुलीन बच्चेवाली ऐसीस्त्री को भी राजा न बुलावै ९९ ब्राह्मण की कन्या और जाति की स्त्री बिवाहोद्यत रोगार्त्त यज्ञ कर्त्ता विपद्गत इनको राजा सभा में न बुलावै ६०० किसी के कामपरबैठा और राजकार्य पै उद्यत और गऊ चराते गोपाल बीज बोते हुये खेती वाला १ कारीगर काम कर्त्ता सिपाही युद्ध

कर्त्ता अत्याम व्यवहार दूत दान देता हुआ वृती २ संकट स्थान स्थित आसेध्या इन को राजा न बुलावै नदी तैरने वाला बन कुदेश उपद्रवमें पड़ा ३ पराधीन आसेध अपराधी नहीं होता काल देश जानके राजा कार्य्य का बलाबल देखै ४ अकल्प बालक आदिको राजा सवारी पर चढ़ाके बुलावे और जो बनमें संन्यासी आदि रहतेहैं उनके गौरव के सदृश ५ व्यवहारका न जाननेवाला अन्य कार्य्य से आकुल राजा संन्यासी आदिको प्रसन्नता पूर्व्वक ले आवे ६ वादी और प्रतिवादी दोनों को बुध मुख्तार करें जो खुद अबुद्ध जड़ उन्मत्त वृद्ध स्त्री बाल या रोगीहो ७ पहिले या पीछे बन्धु कहे या मुख्तार कहै पिता माता हित बन्धु भाई सम्बन्धी अथवा ये कहैं ८ जो अर्ज़ी देता बाद प्रवृत्त होताहै और जो कोई अज्ञान से कोई कर्म्म करावे ९ वह उसीका किया समझा जायगा उसकाअपराध न मिटैगा जो उसमुकद्दमेमें नियुक्त किया जाय उसको बिवादसे सोलहवां अंश मजदूरी दे १० इस से अधिक मजदूरी ले तो दण्ड के योग्य होताहै और राजा अपनी बुद्धिसे मुख्तार न करै ११ लोभसे मुख्तार अन्यथा करै तो दण्ड पावै जो भाई पिता पुत्र न होय और मुख्तार न होय १२ व्यवहार में कहता हुआ जो परार्थ वादीहै वह दण्डकेयोग्यहै क्योंकि कुटुम्बिनी स्वैरिणी गणिका उसके आधीन रहती १३ बिना कुलकी स्त्रियां पतित होतीं-

उनको सभा में राजा बुलावे और झगड़े को जारी करके बादी प्रतिबादी सरजायँ १४ तो उनको पुत्रजा-नते हों तो बिवाद करें नहीं तो झगड़ा निवृत्तकिया जाय और मनुष्य घाती चोरी परस्त्री गमन १५ अ-भक्ष्य भक्षण कन्या हरणा दूषणा कड़ाई कपट राजद्रो-ह साहस १६ ऐसेपापों में आपही बिवाद कर सक्ताहै कोई उसकी जगह पर दूसरा नहीं कर सक्ताहै और अहंकार बन्धु बलसे युक्त जो राजा के बुलाये न आ-वे १७ तो उसके अपराध के सदृश राजा दण्डदे और सिपाहीके बुलाने से जो कैदी न आवे और उससे वि-बाद करै १८ ऐसा हाल देख के राजा सिपाही और कैदीका जामिन ले और वह जामिनकहै किजो इन को देना पड़ेगा वह देंगे या हाज़िर करदेंगे १९ यह भिक्षा हम तुमको देते हैं कि इससे तुमको कुछ भय न होगा और जो नहीं किया वह करेंगे इसीसे तुम सत्य होगे २० यह इसी तरह है मिथ्या नहींहै इससे निरालस हो अंगीकार करे वृद्ध बहु विद्वान्‌ी आधी-न विश्रुत धनी २१ कार्य्य निर्णय में समर्थ दोनों का जामिनले और बिबादियों को राजा रोकके फै-सला करै २२ स्वपुष्ट हो अथवा राज पुष्टहों स्वभृत्य हों या पुष्ट स्वकहों ससाधन कपट की शंका करके तत्त्व की इच्छा करे २३ प्रतिज्ञा दोष निर्मुक्त साध्य साधन से युक्त निश्चित लोक सिद्ध पक्ष जानने हारे पक्ष कहतेहैं २४ अन्यार्थ अर्थहीन प्रमाण औरआ-

गम से वर्जित लेख्य हीन बहुत भ्रष्ट ये भाषा दोष हैं २५ निर्बाध अप्रसिद्ध निरर्थ निष्प्रयोजन असाध्य विरुद्ध ऐसा पक्षाभास है सो वर्जित है २६ न किसीने देखा न सुना वह अप्रसिद्ध कहाता है गूंगे ने हमको शाप दिया और बन्ध्या पुत्र ने हमको मारा २७ यह हमारे घर के निकट पढ़ता और सुन्दर स्वर से गाता और अपने घरमें बिहार करता है और हमारे घरके निकट मार्ग होकर जाता है २८ यह निराबाध और निष्प्रयोजन है और सदा हमारी दी हुई कन्यामें यह विहार करता २९ यह कन्या गर्भ को धारण किये मारने के योग्य नहीं है और यह जामाता मरने पैभी न कहैगा इसने ऐसा क्यों किया यह असाध्य विरुद्धक है ३० हमारे दिये हुये दुःख सुखसे लोक दुःखी और सुखी होता है यह निरर्थ या निष्प्रयोजन है ३१ और काम सुना के उसका त्याग करके और सुनावे अन्यके पक्षाश्रय से कहै वह हीन दण्ड्य कहाता है ३२ पूर्व पक्षके निश्चयहोने और ग्राह्याग्राह्यसे विशुद्धहोने प्रतिज्ञा के अर्थ स्थिरी भूत होने उत्तर पक्ष लिखावे ३३ इस में पहिले मुद्दई तत्पश्चात मुद्दाअलेह से पूंछ के प्राड्विवाक और सभा वाले उत्तर दिलावैं ३४ सुने हुये अर्थ का उत्तर लिखै और वादी के सन्मुख कहै पक्ष का व्यापक सार असन्देह और अनाकुल है ३५ जिसके बयान को टीका बिना सब समझें वह निर्दाय है सन्दिग्ध अन्यकीबोलीमें हो थोड़ाहो अथवा अवि-

कहे ३६ पक्ष के सब देश में जो व्याप्य हो वह कभी उत्तर नहीं हो सक्ता और जो बुलाया हुआ कुछ न कहे वह हीन दण्डके योग्य है ३७ पूर्वपक्ष यथार्थहै उसमें जो उत्तर न दे तो साम आदि उपायोंसे प्रतिवादी उत्तर दिलावे ३८ मोह अथवा शठता से पूर्व्व बादी ने जो नहीं कहा तो बाकी उत्तर दोनों के प्रश्नसे ले ३९ उत्तर चारप्रकारका होताहै सत्य मिथ्या प्रत्यवस्कन्दन पूर्व्व न्याय बिधि ये चारप्रकारके उत्तर हैं ४० बादी का कहा हुआ यथार्थ का अङ्गीकार सत्योत्तरकहाता है और उसी को प्रतिपत्ति कहते हैं ४१ बयानको सुनके दूसरा निषेध करै और शब्द और अर्थसे भी वही मालूम हो वह मिथ्या उत्तर कहाता है ४२ यह मिथ्याहै हम नहीं जानते उस समय वहां हम नहींथे तब हमारा जन्म ही नहीं हुआथा ये चार प्रकार के मिथ्याहैं ४३ बादीने जोअर्थलिखाहै उसकोप्रतिबादी भी उसीतरहकहे और माननेकाकारणकहै वह प्रत्यवस्कंदन कहाताहै ४४ इसमें पहिले हमारा और इनका झगड़ाहोचुकाहै यह जीतगयेथे ऐसाकहै तो वह पूर्व न्यायहुआ ४५ जयपत्र सभावाले और गवाहों से सत्य जानके पर्वहीं हमनेजीताहै यह प्राङ्न्याय तीनप्रकार काहै ४६ बादी प्रतिबादीके सन्मुख जोसभावाला पक्ष का उत्तर ग्रहण न करै तो चोरवत दण्डकेयोग्यहो ४७ लिखि कै भली भांति शोधै जो निर्दोष उत्तर हो तो वह बादी प्रतिबादी का क्रिया कारण कहलाताहै ४८

आद्य पाद पूर्व्व पक्ष दूसरा उत्तरात्मक तीसरा क्रिया पाद चौथा निर्णयात्मक ये चारों चरणोंके नामहैं ४९ कार्य्य को साध्य कारण को क्रिया कहते हैं तीसरे पाद में क्रिया करके कहा जाता है ५० प्रति प्रत्युत्तर बिना चतुष्पाद व्यवहार है क्रमसे आये हुये वादों को कार्य्य गौरवसे देखैं ५१ जिसमें अधिक पीड़ा होय तो उस में कार्य्य भी अधिक होता है वर्णोंके अनुक्रम से प्रथम पूंछै ५२ सभावाले उत्तर की कल्पना करके भावनादे साध्य के साधनके लिये जो किया जाय वह भावना है ५३ सम्पूर्ण प्रतिज्ञात को लिखितम आदिसे बिचार करै एकही विवाद में दोनों वादी की क्रिया नहीं होसक्ती ५४ पूर्व्ववादी खराब क्रिया कारण प्रतिपादन करै तब तक न्याय से पहिले प्रतिवादी बयान करै ५५ मुकद्दमा दो प्रकारका है एक सत्यानुसारी भूत दूसरा छलानुसारी भव्य सत्य सत्य अर्थ को कहता और छल झूंठा होता है ५६ कारण से पूर्व्व पक्ष उत्तरत्व को प्राप्त होता है इससे वादी शीघ्र ही अपने अर्थ साधनको लिखावै ५७ वह साधन दो तरह का है एकमानुष दूसरा दैविक और लिखित भी तीन प्रकारका है भुक्ति अर्थात १ भोग २ साक्षी ३ मानुष ५८ दैवघटादि से भव्य मानुष में युक्त करै युक्ति और अनुमानसे सामादिक उपाय करै ५९ राजा साधनके देखने कालको न देखै कालके देखनेसे धर्म्मकी हानिमें र जाको बड़ा दोष होता है ६० वादी प्रतिवादीके सन्मुख

अपना साधन दिखावै दोनोंके एकत्र न रहने पै राजा उनका वाद न सुनै ६१ विवादी वादी के साधनमें जितने दोषहैं सम्पूर्ण गूढ़हैं या प्रकट काल शास्त्रके मुताबिक कहे ६२ और वृथा दोषदे तो दण्डपावै जो साध्यके लिये हीन हो साधन को भली भांति विचारके कार्य्यका निर्णयकरै ६३ झूठसाधन करनेवालाकार्य्य के सदृश दण्डके योग्यहोताहै और झूठी गवाही देने वाला और गवाहीदेके और कुछ कहनेवाला ये दूना दण्डपावैं ६४ यह अभीकालिखाहैयह मैं ठीककहताहूं यह मुझको ऐसा याद है कि ब्रह्माजीने लिखाहै ६५ लिखित दोप्रकारका है एकराजकीय दूसरा लौकिक वह अपने हाथसे लिखाहो और से लिखाया हो ६६ गवाही बिना या गवाही इसहित इसकी सिद्धिलोक व्यवहारके मुताबिक है भोग दान क्रयाधान प्रतिज्ञा दासऋणआदिभेदसे ६७ सातप्रकारका लौकिकहै और तीनतरहका राजशासन एक शासनार्थ दूसराज्ञापनार्थ तीसरा निर्णयार्थ ६८ राजाके हाथसेसंयुक्त मोहर या चिह्नित कहाताहै और राजाका लिखाहुआ प्रजाओंके लिये मुद्रित कहाताहै ६९ लिखनेका काल वर्षमास पक्ष तिथि वेला देश विषय स्थान जाति सरत उम्र ७० साध्य प्रमाण द्रव्य संख्या अपना नाम और राजाका क्रमसेनाम निवास और साध्यनाम ७१ क्रमसे तीन पुरुषका नाम और एक पक्षमें ऐसा चिह्न अन्य पितरोंका नाम कहके लिखावै ७२ जहां ये

सम्पूर्ण न लिखे वह हीन लेख है क्रम और अर्त्थ में भिन्न या व्यर्त्थ हो वह लेख निरर्त्थक है ७३ बहुत कालका लिखाया जोहै वह साधन के योग्य नहींहै और अनजान और स्त्री से जबरदस्तीसे लिखाया भी साधन योग्य नहीं ७४ उत्तम लेख और दिव्य भोग गवाहीसे लेख प्रमाणीक होताहै इससे व्यवहार में मनुष्य इस लोकमें सुखीहोता है ७५ स्वेतरकार्य्य विज्ञानी ऐसे साक्षी बहुतहैं दृष्टार्त्थ श्रुतार्त्थ क्षत्त और अक्षत्त दो प्रकार के हैं ७६ वादी प्रतिवादी के निकट में अनुभूत ऐसादर्शन और श्रवण से जो साक्षी देताहो वह प्रमाणीक गवाहहै ७७ जिसकीबुद्धि और स्मृति उपहत न हो और सुने हुये को बहुत दिन तक याद रक्खै वह साक्षीहोने के योग्यहै ७८ यहबात प्रसिद्धहै कि सत्य वचन गवाह एक आधे मनुष्य हैं और दोनों तरफ धर्म से कहनेवाला ऐसा भी एकही है ७९ यथा जाति यथा बर्ण सबसबमें साक्षी होतेहैं गृहस्थ पंडित जोकिसीकेबसे न हों ये पराधीन नहींहोते ८० जवान काजवान स्त्रीकीस्त्री सम्पूर्णसाहस और चोरी और संग्रह में साक्षी करैं ८१ कठिन वचन और कड़ाई में गवाहीकी परीक्षा न करैं अज्ञानसेबल असत्यतासे स्त्री और पापसे छली ८२ बांधव स्नेहसे गवाही देता और वैरसेशत्रु और अभिमानसे विजाति और लोभसेशठ गवाही देता ८३ जीविकाकै संकोचसे भृत्यलोग गवाहीके योग्य नहींहैं और उसीतरह धन विद्या जवानी

के सम्बन्ध वाले भी गवाही के योग्य नहीं ८४ किसी श्रेणी या वर्गमें जो कोई शत्रुहो तो उसकी उनकेलिये गवाही नहीं होसक्ती क्योंकि वे सब आपसमें शत्रुहैं ८५ राजा गवाहोंके कहने पर समय को न लगावै बादी प्रतिवादी को अपने सम्मुख ८६ प्रत्यक्ष में गवाही ले परोक्षमें न ले जो गवाही अङ्गीकार न करै वहदण्ड पावै ८७जो प्रत्यक्षगवाही न दे और बुलानेपर न आवै और झूंठ सांच कहदे वह नराधम दण्ड के योग्य है ८८ बहुत आदमियोंके बचनमें दुविधा होतो गुणी का वचन ले और उनमें जो सबमें अधिकगुणीहो उसका वचन सदाले ८९ जो विना बुलायेदेखै अथवा सुनै पूछने पर वहभी जैसादेखा या सुनाहो कहै ९० भिन्न२ काल और अंश से पृथक् कहै तो सब सबको अलग२ करके पूछै यह सनातन विधिहै ९१ गवाह जो अपने स्वभावसे कहै उसको सुनै जास्ती न करै साक्षीके कहतेहुये पुनःपुनः न पूछै ९२ साक्षीको बुलाके पुराण सत्य वचन धर्म्म माहात्म्य कीर्त्तन शपथसे पूछै ९३ झूंठके दोष से गवाही कोअच्छी भांति डरावै देशकालमें तुमने क्या देखा और क्या सुना ९४ जो लिखा या लिखाया हो वह सत्य २ कहो जो सत्य गवाही देता है वह उत्तम लोक को जाता है ९५ और सत्य बोलनेवालेकी इस लोक में उत्तम कीर्त्ति होती और वाणीही ब्रह्मपूजितहै सत्य साक्षीकी पूजाहोती और धर्म्म बढ़ता है ९६ इस कारण सबवर्णों में उचित है

कि साक्षी सत्य बोलै आत्माही अपना साक्षी है और आत्माही अपनी गतिहै ९७ अपनाअभिमान न करो मनुष्यको साक्षित्व उत्तमहै पापकारी अपनेको देखता है पुण्यात्मा नहीं ९८ सौ जन्ममें जोपाप और पुण्य मनुष्यकरता है उसको देवता और अन्तरात्मा पुरुष देखता है ९९ जिसको अनायास पराजय दोगे उसके सम्पूर्ण पाप तुमको होंगे ७०० यह सम्पूर्ण सभाके मध्यमें गवाहोंको सुनावै और साधनके देखनेमेंदेशा-नुरूप कालदे १ देवता या राजकृत उपाधिको देखके लेखके बिनष्ट होनेसे राजा साक्षियोंसे विचारकरै २ और लेख और गवाहोंके नष्टहोने से सद्भोगसेचिंतना करै और सद्भोगकेअभावसे साक्षी और लेखसेविचार करै ३ केवल भोग लेख साक्षीकरके राजा कार्य्यकोन करै लोक औरदेशके धर्म्मको भी देखके कार्य्य को करै ४ होशियार लोग लेखके सदृशदूसरा लेख बना सक्तेहैं इसकारणलेखकीसामर्थ्यसे एकान्तकीसिद्धि न करै ५ स्नेह लोभ भय कामसे झूंठीगवाहोकी शङ्का से केवल साक्षीपै राजा सदा कार्य्य सिद्धि न राखै ६ अपना हो या पराया जो बलके घमंडसे भोगकरैइस ... जशङ्कित भोगसे कार्य्य सिद्ध नहीं होता७शङ्कित व्यवहारमें अन्यथा शङ्का न करै और जिसमभावाले ... अन्यथा शङ्का हो राजा उसको चोरकीतरहदंडदे ८ अन्यथा शङ्का करनेसे नित्य अनवस्था रहतीहै लोक भेदको प्राप्तहोता और धर्म्महीन होता है ९ आगमबहु

तदिनकाहो औरअपवाद विघ्न जनहो समक्षप्रतिवादी हो ऐसा भुक्त भोग प्रमाणावत्त होता १० सम्भोग का कीर्तनकरै आगम न कहै वहभोग छलापदेशसे तस्कर है ११ और आगममें बल नहीं और जहां थोड़ा भोग भी न हो जिस किसीको दश वर्ष निकट देखताहै १२ पराये करके भोगकियेहुये धनको वह नहीं पा सक्ता और जिसकीभूमि कोई बीस वर्ष भोग करता है १३ राजाकेहोतेहुये उस समर्थकोभी वहभूमि नहीं मिलती और बिना आगम के जो जिसका भोग करता है १४ उसको चोरकी भांति राजा दण्डदे और अनागम जो भोगहै और अपवाद नहीं है १५ औरवह भोगसाठवर्ष होगयाहै तो कोई हरनहींसक्ता आधिसीमाबाल धन निःक्षेपस्त्रीको उपनिधि १६राजधन वैदिकधन ये भोग सेनष्टनहींहोते और इनका निरादरकरता और चुपका होरहता १७ तो कालबीतलेपै इनका फल नहीं संक्षेप से भोग कहा अब दिव्य कहते हैं १८ जहां प्रमाद से धनीके त्रिविध साधन न हो अर्थ के लिये झूंठ बोले तहां तीन विधि करै १९ प्रेरणा समयलिताना सौगन्द इनसे कार्य सिद्धकरै २०जो शास्त्रके अविरुद्धहो ऐसा यत्न अपने अर्थको सिद्धिकेलियेकरै अन्यथायुक्ति न करै २१ देना फोड़ तोड़ लोभ दिखाना चित्तकालेनाये स्वार्थ साधक उपायहैं २२बारम्बार कहने परभीउत्तर न दे तीनचारपांचदफेकेकहनेपर किसीसे अर्थदिला देगा २३ युक्तिकार्य्य साधनमें असमर्थ हो तो दिव्य

उपाय से उसका बिमर्द्दन करै क्योंकि देवतों करके प्रयुक्त दुस्साध्य अर्थ महात्माओं को प्राप्तहोतेहैं २४ इसीसे परस्पर विशुद्ध्यर्थ सप्तर्षियोंने स्वीकारकिया २५ अपने माहात्म्य और ज्ञान के घमराडसे बशिष्ठादि कृत दिव्य साधन नहीं करता वह ज्ञानतस्कर है २६ ज्ञान दुर्ब्बल ब्राह्मण देवबलके प्राप्त होनेपै शाप न दे शापदेनेसे आधाधर्म्म देवता हरलेतेहैं २७ जो अपनी शुद्धिकी इच्छाकरके निरालस हो दिव्य साधन करता है वह विशुद्ध हो कीर्ति और स्वर्गको प्राप्त होता अन्यथा नहीं २८ अग्निविष घट जलधर्म्माधर्म्म के तराडुल मुनिलोग दिव्य निर्णायमें इनको शपथ कहतेहैं २९ एक एकसे पहिला गम्भीरतरहै जैसाकार्य्य हो वैसा निर्णाय करै लोकके विश्वासकेलिये कहाहै सम्पूर्णा दिव्य निर्णायगुरुतरहैं३० जलताहुआ लोहेका गोला हाथमें लेचलै नहीं तो तप्त अङ्गारों में सात पग चलै ३१ लोहके छर्रेको ताते तेलमेंसे निकालै अथवा जलतेहुये लोह पत्रको जीभसे चटावै ३२ हाथसे बिष खिलावै याकालेसांपको पकड़ावै अथवा तुलापैचढ़ा कमीबेशीका शोधनकरै३३ अपने इष्टदेवताके स्नानसे उत्पन्न जलको पिलावै या कुछ समयका नियम करकेजलमेंडुबोवै ३४ बिनादेखीहुई धर्म्मअधर्म्मकीमूर्तियोंको स्पर्श करावै या निष्शंकहो तोले भर चावल चबवावै ३५ पूज्यके चरण का स्पर्शकरावै अथवा पुत्रादिके शिरका स्पर्श करावै अथवा अपने धनका

स्पर्शकरे या सत्यका शपथ करै ३६ हमको पाप प्रा-
प्तहो और हमारा सम्पूर्ण पुण्य नष्टहो ऐसा कहै ह-
जार मुद्राकी परीक्षा अग्निसे करै और एक तिहाई
कमहो तो विषसे परीक्षा करै ३७ और हजारमें ती-
न भाग कमहो तो घटसे परीक्षाकरै और पांचसौकी
परीक्षा जलसे करै और ढाईसौ की परीक्षा धर्म्मावि-
धर्म मूर्त्ति से करै और आठवें भागका निर्णय चावल
चबवाके करै ३८ और सोलहवें भागका निर्णय हो
तो शपथ खिलावै इस प्रकार दिव्य विधि कहाहै
इन निकृष्ट और मध्यको संख्या द्विगुण कही है ३९
और परीक्षक लोग उत्तम की संख्या चतुर्गुण क-
ल्पना करैं जब तक शिरोवर्त्ति हो तब तक दिव्य
परीक्षा न करैं ४० दिव्यनिर्णयमें अभियोक्ता अर्थात्
प्रेरणा करने वाले को शिर स्थान में जानै और
अभियुक्तको अर्थात् मुद्दाअलेह को दिव्य परीक्षा
दे ४१ मुद्दाअलेह को कोई दिव्य परीक्षा में युक्त न
करै दूसरे की इच्छासे दूसरा शिरोवर्त्ती हो ४२ जो
राजासे शंकितहों और शत्रुने उनको बतला दियाहो
और अपनी शुद्धि चाहतेहैं तो बिना शिरोवर्त्ती के
भी अपनी परीक्षा करा सक्तेहैं ४३ पर स्त्री और
अगम्यागमन अर्थात् जो गमनके योग्य न हो और
अन्य महा पापों में दिव्य परीक्षा करै और परीक्षा
न करै ४४ जिसपर चोरीका सन्देह हो उससे जलते
तेल में से लोह के करै निकलवावे और जो कोई

किसीके प्राण लेनेकी इच्छा करै ऐसे और साधनों में
४५ वादी दिव्य परीक्षा करै और साधन उसमें न पू-
छै छल सहित साधन हो और राजाको सुनादियाहो
४६ तो राजा धर्म्मासन पै बैठके दिव्य निर्णयसे शो-
धन करै और जिसके नाम गोत्र से तुल्य लेखहो ४७
और रुपया न लियाहो तो उसकी निर्णय दिव्य
से करै इसमें मनुष्य साधन न करै केवल दिव्यहीनि-
र्णयकरै ४८ अरण्य निर्ज्जनस्थान रात्रि घरके भीत-
र साहस करै और स्त्रियोंके बीचमें असत्य भाषण
करै ४९ और अदुष्ट प्रमाणोंमें दिव्य निर्णयसे कार्य
शोधन करै महा पापाभिशाप यानिक्षेप हरणमें ५०
राजा अच्छे गवाहोंके होने पर दिव्य परीक्षा करै
पहिला और अन्य गवाह फूट जाय ५१ इस तरह
सब गवाहोंके भिन्न होजानेमें सौगन्दखिलावै स्थावर
विवाद और मुख्य गणोंके विवादमें ५२ स्वामी के
भृत्यको नौकरी न देनेके निर्णय में व्यापार में माल
लेके दाम न दे ५३ इनको गवाही या लिखे हुयेके
सदृश या जो भोगके तुल्य साधन करै और विवाहो-
त्सव जुआ इनमें कोई विवादहो ५४ इनमें गवाहोंसे
साधन करै न दिव्य निर्णय न लेख और द्वार मार्ग
क्रिया भोग्य जल बहने आदिमें ५५ भोगहीप्रमाणहै
न दिव्यनिर्णय न गवाह जो एक मानुषी परीक्षाकहै
और अन्यदेव परीक्षा कहैं ५६ तो राजा मानुषी प-
रीक्षाका ग्रहणकरै दैवी परीक्षा न करै यद्यपि मानुषी

क्रिया एकदेश प्राप्तहों ५७ वहीग्राह्यहै और पूर्णभी दैवी परीक्षा नहींग्राह्यहै और प्रमाणहेतुचरित शपथ नृपाज्ञा ५८ वादी या सम्प्रतिपत्तिसेनिर्णय आठप्रकार कीहैजहां लेख और भुक्ति अथवा साक्षी न हों ५९ और दिव्य अवतार नहो वहां राजाप्रमाणहै किवही सम्पूर्ण संदेह रूप वादोंका निश्चय करै ६० सीमादि प्रमाण राजाहै क्योंकि वह स्वामी है और स्वतन्त्र अ-र्थों को साधता हुआ राजा पापी होताहै ६१ धर्म-शास्त्रके सदृश अर्थ शास्त्रका विचार करै और म-

...रीके लोभमे राजा और व्यवहार दोनों दूषित होते

जिस कार्य्य में गवाह और सभा वालों की तरफ से कुछ सन्देह हो तो उसकोभी राजा पुनः देखै ६९ और जिस मुकद्दमेमें राजा करते हुये भूल गयाहो उसको फिरसेदेखै अमात्य या प्राड्विवाक जो कोई अन्यथा कार्य्य करै ७० उसको राजा पुनः करै और करनेवा-लेपर एक हजार जुर्म्माना करै बिना दण्ड कोई स-न्मार्ग गामी नहीं होता ७१ सभावालों का दोष देख के उसदोषको राजा निकालडालै प्रतिज्ञा भावनाही हो प्राड्विवाकादि पूजनसे ७२ जयपत्रकेलेनेसे संसा-र में जयी कहलाताहै सभाके लोग जो निर्णय करैं उसको प्रतिवादी मानिले ७३ राजा देखके जीतवाले को जयपत्र दे अन्यथा मुद्दई को बहुत दिनतक कैद रक्खै ७४ मिथ्या अर्जी के समान प्रतिवादी की अ-हंणा करै और काम क्रोध को बटोरके जो अर्थको धर्म्म से देखताहै ७५ ऐसे राजा के पीछे प्रजा फिरा करतीहै जैसे समुद्र के पीछे नदी और माता पिताके जीते हुये वृद्धभीहो स्वतंत्र नहो ७६ माता पितामें भी वीर्य्यकी प्रधानतासे पिताश्रेष्ठहै और पिताके अभाव में माता श्रेष्ठहै और माता भी न हो बड़ाभाई श्रेष्ठहै ७७ ज्येष्ठमें स्वतन्त्रता होती और ज्येष्ठतागुण और अवस्था से होतीहै और जो बड़ों की स्त्रियांहैं उनमें माता के तुल्य वर्त्तावकरै ७८ और अपने समभाग से वे सम्पूर्ण स्त्रियां भी पालन करैं और सब प्रजा अस्वतन्त्र और राजास्वतंत्रहोताहै ७९ शिष्यअस्वतन्त्र और आचार्य्य

स्वतंत्र होताहै पुत्र और पुत्र स्त्रियोंकी भिक्षामें स्वतंत्रता होती है ८० पिताके बेचने या देडालने में पुत्रका कुछ वशनहीं और परतन्त्रों में सुतस्वतन्त्रहोता है ८१ सिखलाजाया देडालनेमें और मणिमुक्ता मूंगा सम्पूर्ण का स्वामी पिताहै ८२ स्थावरगृहआदि सबकास्वामी न पिता न पितामह भार्य्या पुत्रदास ये तीन अधन कहलातेहैं यहीमालिक हैं ८३ जोकुछ इनको मिलता है जिसके वे होते हैंउसी का वहधन होता है और जिस किसीको दियाचाहैं बिनाधनीकीमर्जी नहींदेसक्ते ८४ चोरीके द्वारा अन्यकाधन और के हाथ में देखै इस कारण शास्त्रसे स्वाम्यहै अनुभवसेनहीं ८५ इसका धन इसने लिया यह और तरह कहने का योग्य नहीं है अलगअलग वर्णके लोगधनकी आमद को जानतेहैं ८६ शास्त्रके लिखेहुयेधर्मको म्लेच्छादिकोंको सिखलावें जिसको कि पूर्व आचार्य्यों ने लोककी स्थितिके लिये कहाहै ८७ पुत्र और स्त्री को मालिक बराबर धनदे अपने भाग में आधा धन कन्या को दे और उसका आधा कन्यापुत्रको दे ८८ मालिक के मरनेके पीछे कहेहुये मार्ग के मुताबिक करै माताको चतुर्थांश और बहिनको माताका आधादे ८९ बहिनका आधा भानजेको दे और बाकी सम्पूर्ण धन पुत्रले जो पुत्र न हो तो स्त्री अथवा कन्या या उसका पुत्रले ९० माता पिता भाई पूर्वके न मिलने से उनके पुत्र सब लें अपने हिस्सेकाधन पानेसे स्त्रीकी स्वतंत्रता होतीहै ९१

कन्याके बिवाह होजाने पै पति अथवा पिताके घर से जो मिलता है उसके बेचडालने और देडालने का अखितयार है ९२ माता पिताका दिया हुआ जो धन का भाग मिलता है वह पिता आदि के धनसे अलग होताहै ९३ उसको इच्छापूर्वक भोगकरसक्ताहै किसी के बांटनेका धन नहीं है जल चोर राजा अग्निसे ९४ जो अपनी शक्तिसे धनकी रक्षाकरै उसका दशवांभाग धन है और सोनार आदि जितना बनावै उसकी मेहनत उसी के सदृश पावै संस्कार करै और उसकी कला को जानै वह शिल्पी कहाता है ९५ गृह देवस्थान बाग के बनाने में और कारीगरोंसे दूनी मजदूरी शिल्पी पावै ९६ अच्छे लोगों ने नाचने वालों का यही धर्म्म कहा है कि तालज्ञ चौथाई और गानेवाले सम भाग पाते हैं ९७ पराये के राज्य से चोर जो धन लावैं उसमेंसे छठा अंश राजा का निकालके बराबर बांट लें ९८ उन में से कोई चोर कहीं पकड़ा जाय तो अपने२ हिस्सेमेंसे बराबर धन देके छुडावैं ९९ सोना आदि रस से जो प्रयोग करते हैं समन्यून अंशके सदृश जैसा करता है उसी तरह लाभ होता है ८०० समन्यून अधिक जितना अंश लगावै और खर्चा देकर्म्म करै उसी तरह लाभ होता है १ वनियां और खेती करनेवालों की यही विधि है कि पूराधनतो आप लेते हैं और कुछ हिस्सा दासको देतेहैं २ शत्रु गड़ाहुआ धन अंश के होने पर भी किसी को न दे नवीन वस्तु विपत्ति

सभी पण्डित किसी को नहीं देते३ जो अदेय को लेता है और फिर देय को देडालता है उनको चोर की तरह शासना करें और उत्तम साहस का दण्ड ले४ बिना मालिक अथवा चोर से जो कोई गुप्त धन लेता है और कोई चीज़ मोल लेता है उसको राजा चोर कीभांति दण्ड दे ५ ऋत्विक् और याजक अपराध करें तो ऋत्विक् और याजक दोनोंको राजा दण्ड दे ६ बत्तीस या सोलहवां अंश बाज़ारू वस्तुओं पर महसूल लगावै अन्यथा उसका खर्च देख के देशाचारके हिसाबसे महसूल लगावै ७ नफ़ा छोड़के आधे धनसे रोजगार करै मूलसे दूना ब्याज लेना अधम ऋण देनेवाले धनी का काम है ८ इस कारण उत्तम ऋण देने वाले से मूल लेके अधिक ब्याज न दे धनी लोग चक्र वृद्ध्यादि क्रम से प्रजाका धन ले लेते हैं ९ इस तरह की विपत्तियों से राजा प्रजा की रक्षा करै समर्थ होतो आप धनी का धन देडाले १० राजा साम या दण्ड कर्षण से धन दिलवावै जिससे कि धनी का धन खराब न हो ऐसा उपाय राजा करै ११ गवाहों से भली भांति यांच के राजा धनी का धन दिलावै और जो बिना दिये लेताहै और दिये हुयेको फिर चाहता है १२ वह दोनों धर्मज्ञ राजा करके दण्ड देनेके योग्यहैं और खोटी वस्तुका बेचने वाला चोर की तरह दण्ड देने के योग्य है १३ शिल्पियों का कार्य्यदेखके उनके गुण के सदृश मजदूरी मुकर्रर करै रुपया का पञ्चमांश

चतुर्थांश अथवा तृतीयांश दे १४ या राजा रुपया का आधा अर्थात् आठ आनादे प्रति दिन अधिक न दे जो गलानेसे चारतोले सोने से कम न हो १५ चार सौ भाग चांदीसौभाग तांबेसे हीन होताहै शीशा और जस्त सोलहभागहीन होताहै १६ और अष्टमांश लोहा कमहोता है अन्यथा हो तो राजा शिल्पीको दण्ड दे और सुवर्णदोशत और एकशतचांदी १७ मोड़नेवाली वस्तु में घट जाती और जोड़ने वाली वस्तु में सोलहवां हिस्सा बढ़ जातीहै और तरह हो तो सोनारको दण्ड दे १८ जोड़ और मोड़ को देख के कमी बेशी की कल्पना करै सुवर्ण के उत्तम कामों में तीसवां भाग मजदूरी दे १९ और साठवां हिस्सा मध्य कार्य्य में और हीन कार्यमें उसकी आधी उसकी आधी कड़ा आदिमें और शुद्ध गलाने में उसकी आधी मजदूरी दे २० उत्तम चांदीमें अर्द्धमजदूरी और मध्यममें उसकी आधी और हीनचांदीमेंउसकीआधी यानी आठवांभाग और कड़ा आदि में सोलहवांभाग मजदूरीदे २१ तांबेमें चौथाई मजदूरी उसीतरह बङ्गमें लोहमें आधी या समद्विगुण या त्रिगुण मजदूरीदे २२ धातुका कपट कर्त्ता द्विगुण दण्ड केयोग्यहै यह व्यवहार लोकके प्रचारके सदृश मुनियोंनेकहाहै २३ व्यवहार अनंतपथहै वह कहनेके योग्यनहीं और संक्षेप में पञ्चमराष्ट्र प्रकरण कहा २४ और इसमें जो गुणहै वे लोक और शास्त्रसे कहे अब छठां दुर्ग प्रकरण संक्षेपसे कहतेहैं २५ खात कराटक

पायाणासे दुष्ट मार्ग्ग दुर्गम चारोंओर भारी खन्दक हो वह पारिख दुर्ग कहाता है २६ ईंट पत्थर मृत्तिका की भीत का खावां हो वह पारिघ कहाता है औरस-हा कण्टक के वृक्षके समूह से व्याप्त वनदुर्गम कहाता है २७ और चारों ओर जलाभाव हो वह धन्व दुर्ग कहाता है और जिसमें चारों ओर महा जल हो वह जल दुर्ग कहाता है २८ सुन्दर जल से युक्त पीछे ऊंचा पहाड़ से दुर्गम किसी के भेदन करने के योग्य नहीं कवायदी वीरों से युक्त यह सैन्यदुर्गम कहाता है २९ शूर वीर बन्धु युत सहाय दुर्ग कहाता है और खावां और ऊसरसे वर पारिघ बन कहाता है ३० तदनन्तर पहिले जलका अभाव पुनः जल उससे पीछे गिरिदुर्ग सहाय सैन्य और दुर्ग सर्व्व दुर्ग साधक हैं ३१ इन दोनोंके बिना राजाके और दुर्ग निष्फल होते हैं और अन्य सर्व्व दुर्गोंसे सेना दुर्ग श्रेष्ठ है ३२ औरसर्व्व सेना दुर्ग के साधक हैं उसकी राजा सदा रक्षा करै जिस राजा के सेना दुर्ग होता है उसके यह पृथ्वी वश रहती है ३३ सैन्य दुर्ग बिना अन्य दुर्ग बन्धन हैं और आपत्काल में अन्य दुर्गों का आश्रय उत्तम है ३४ किलेके भीतर एक मनुष्य शत्रुको धारणाकर सैकरों के साथ लड़सक्ता है और किलेमें सौ मनुष्य होतो दश हजार के साथ युद्ध करसक्ते हैं इससे किलेका आश्रय करै ३५ शूर और सैन्य दुर्गको सनस्थान दुर्ग है और युद्धकी सामग्री से भरा राजा किला रक्खै ३६ राजा

वीरअस्त्रखजाना सहायसे पुष्ट किलासबसे श्रेष्ठतरहै ३७
सहाय से पुष्ट किलेसे निश्चय करके बिजयहोता है
और जो जो सहायपुष्ट हैं वह सब सफल होते हैं ३८
किलों का आपस में परस्पर मेल बिजय प्रदहै यह
दुर्ग प्रकरण संक्षेपसे कहा अब सातवां सैन्यप्रकरण
कहतेहैं ३९ शस्त्र अस्त्रसे संयुक्त मनुष्यों का गण सेना
कहाताहै और वह स्वगमा अन्यगमा भेदसे दोप्रकार
की है और अलग तीनतरह की है ४० देवीएकआसु-
री दो मानुषी ये तीनों एकसे पहिली सेना बलाधिक
है स्वगमा वह सेना है जो आप चले और जो बाहन
पैचले वह अन्यगमा कहाती है ४१ पैदर स्वगम और
रथ घोड़े हाथी पै चढ़के चलने से तीन तरह के हैंसै-
न्यबिना राज्य धनपराक्रम नहीं होता ४२ सैन्यसेदुर्ब-
ल राजा के सम्पूर्ण बली शत्रु बशरहते हैं थोड़ी सेना
वाले राजा का किया कुछ नहीं होता ४३ शरीरका
बल शूरताते बल सैन्य बल चौथा शस्त्र बल पांचवां
बुद्धिबलकहा है४४छठां आयुर्बल इनबलों से युक्तवि-
ष्णुके तुल्य हैं बिना सेना के छोटे शत्रु को भी नहीं
जीत सक्ता ४५ देवता असुर मनुष्य ये अन्य उपाय से
बशमें होते और शत्रु केवल बलही से बश होताहै ४६
इससे राजाको चाहियेकि बहुत सेनारक्खै और सेना
बल ये दो प्रकार की है और स्वीय मैत्रकेभी दो भेद
हैं ४७ मौलसाद्यके भेदसे सार असार दोप्रकारकीसेना
है और एक अशिक्षित और शिक्षित और गुल्मी-

भृत अगुल्मक ४८ एकफौज जिसको अस्त्र दिया जाय
एक वह जो अपना अस्त्र अपने साथ ले आवै और
जिसको घोड़ा दिया जाय वह दत्तवाहन जो घोड़ा
आप ले आवै स्ववाहि सुजनता से साधक सेन और
मासिक दे के पालित स्थीय ४९ मोल वहवानु बन्धी
अर्थात् समय मोल देकर रक्खी जाय वह साधस्क
कहातीहै जो सेना युद्धकी इच्छा करै वह सार इससे
बिपरीत असार कहलाती है ५० कवायदी फौज
शिक्षित कहाती इससे और अशिक्षित किसी आज्ञा
से काम करे वह साधिकारी और सेनाही का कोई
स्वामी हो वह अगुल्मक सेना कहातीहै ५१ स्वामी ने
जिसको दिया हो वह दत्तास्त्र और दूसरी जो अपने
पाससे अस्त्रलेआवे वह स्वशस्त्रास्त्रसेनाहै वह कृत गुल्म
और स्वयंगुल्म उसीतरह दत्तवाहन भी कहाती है ५३
और जंगलीकिसानादि जो अपने तेजसे स्वाधीनरहते
हैं और जिस सेना को शत्रु ने छुड़ा दिया हो उनको
नौकर करना ५२ फोड़िलीहुई शत्रुकी सेना शत्रुबल
कहाती हैं ये दोनों पूर्व्वोक्त दुर्व्वल हैं केवल साधक
नहीहैं ५४ समान नियुद्ध में चतुर कसरत और नम्रता
से बाहुयुद्धकेलिये भोजयसे शरीरके बलको बढ़ावै ५५
शेरके शिकारसे शस्त्र अस्त्रका अभ्यास करके शरके
संयोग से शूरताके बल को राजा बढ़ावै ५६ सेना को
मासिकदेने और तपसे अस्त्र बलको और शास्त्र चतुर
के संयोग से बुद्धि बलको सदा बढ़ावै ५७ ऐसा उत्तम

कार्यकरै जिससे राज्य बहुत दिनतक रहै अपने कुल में उसी तरह करै वह आयुर्ब्बल कहाता है ५८ जब तक गोत्र में राज्य रहताहै तब तक राज्यका स्थापन करनेवाला सदा जीता रहताहै और घोड़ोंसे चौगुना पैदर रक्खै ५९ और पांचवां हिस्सा बैल और आठवां हिस्सा ऊंट और ऊंट की चौथाई गज और गज के आधे रथ रक्खै ६० और राजा रथ से दूना तोप खानारावै और पैदरबहुतमध्यभागघोड़ेथोड़ेहाथी ६१ उसीतरह सामान्य बैल और ऊंट और बहुत हाथी न रक्खै समान अवस्था सारवेष ऊंचे शस्त्र अस्त्र को सौ मनुष्य अलग रक्खै ६२ राजा बन्दूक वाले तीनसौ सिपाही रक्खै अस्सी घोड़े एक रथ दो तोप रक्खै ६३ दश ऊंट दो हाथी दो गाड़ी सोलह बैल कार्कुन छः तीन मन्त्री ६४ वर्ष दिन से राजा लाख रुपयेका व्यय करै सामान दान भोगार्त्थ डेढ़ हजार रुपया खर्च करै ६५ लिखनेवालों के मासिक में सौ रुपया और मंत्रीकेलिये तीन शत और स्त्री पुत्रकेलिये तीन शत और पण्डितोंके लिये दोसौ खर्च करै ६६ और सारथी घोड़ा पैदरके खर्चमें राजा चार हजार रुपया खर्चकरै गज ऊंट बैल तोपके खर्चमेंचार सुद्रालगावै ६७ बाकी जो बचै उसको खजाने में जमा करै बे फायदे खर्च न करै लोह सारमय गोल राजासन बनवावै ६८ कमानीदार मध्यमें सारथीके आसन स्थान शस्त्रअस्त्र की पेटी से युक्त ऐसा छायादार सुन्दर रथ बनावै ६९

ऐसे सुन्दर घोड़ों से युक्त रथकी सदा रक्षा करै नील तालु नील जीभ टेढ़े दांत अदन्त ७० दीर्घ द्वेषी क्रूर मद पीठ कंपावै दश या आठ से कम नख युक्त भूमि तक जिसकी पूंछ हो ७१ ऐसा हाथी अशुभ है इससे और तरह होतो सुखका देने वालाहै भद्र मंद्र मृग मिश्र ये चार प्रकार के गजहैं ७२ शहद के रंग के दांत हों सबल सम अंग वाला गोल सूरत सुमुख सर्वांग श्रेष्ठ भद्र गज कहाता है ७३ स्थूल कुक्षि सिंह दृष्टि बड़ी लम्बी सूंड़ मध्यभाग बड़ी देह ऐसा मन्द्रगज कहाताहै ७४ पतला कंठ दन्त कर्ण मुंड बड़े नेत्र मोटी छाती और मोटालिंग बामन ऐसा मृग गज कहाताहै ७५ और इनसब लक्षणोंसे मिलित मिश्रगज कहाताहै पृथक् २ तीनतरहके गजोंका प्रमाण कहा७६ गजके मानमें आठ यव के पेटसे एक अंगुल होताहै ऐसे चौबीसअंगुल का एक हाथ होताहै ७७ भद्रगज सात हाथ ऊंचा होताहै और लम्बा आठ हाथ होता और पेटकी मुटाई दश हाथ होतीहै ७८ मंद्र और मृग हस्ती का प्रमाण एक हाथ कमइस क्रमसेहै मुनि लोगोंने भद्र मन्द्रकी लम्बाई समता कहीहै ७९ मोटे भौंह कपोल मस्तक ऊंचाशिर कर के चलना ऐसा शुभ लक्षण संयुक्त गज सबसे श्रेष्ठ है ८० पांच यवके अंगुलके प्रमाणसे घोड़ोंका प्रमाणअलगहै चवालीस अंगुलका जिस घोड़ेका मुंहहो वह उत्तमहै ८१ और छत्तीस अंगुल जिस घोड़े का मुख हो वह उत्तम और

बत्तीस अंगुलका मुखवाला मध्यम कहाहै ८२ और अट्ठाईस अंगुल मुखवाला अश्व नीचकहाहै घोड़ोंकी मुखमात्र से सब अंगों की कल्पना होतीहै ८३ मुखके प्रमाणसे तिगुनी ऊंचाई कहीहै वह शिरोमणिसे ले पुच्छ के मूल तकहै ८४ लम्बाई मुखमानसे तृतीयांश अधिक चतुर्गुणहो और मुटाई तीन अंगुल अधिक मुखमानसे त्रिगुणहो ८५ मुख केशसे हीन मुख कान्त धृष्ट कनौटीदार लम्बा उच्चग्रीव मुख छोटे कोख खुर कानवाला ८६ शीघ्र गामी प्रचण्ड वेग हंस मेघ स्वन न बहुत कठोर न बहुत मृदु देवसत्व मनोरम ८७ सुन्दरकांति गन्ध वर्ण वाला सद्गुण भँवरी युत दहिने बांये द्विधावर्त्त घूमनेवाला ८८ पूर्ण अपूर्ण दो भेदों से युक्त मोटा लंबा घोड़ीके वाम घोड़ेके दक्षिण क्रमसे कहे हुये फल के देने वाले ८९ इससे विपरीत शुभा-शुभ फलप्रद नहींहोते नीच ऊर्द्ध टेढे मुख भेदमें घोड़ा घोड़ीका फल भेद होताहै ९० शंखचक्रगदा पद्म वेदी स्वस्तिक सदृश प्रासाद तोरण धनुष पूर्ण कलश के सदृश ९१ स्वस्तिकमाला मीनखड्ग श्रीवत्सके सदृश शुभ फिरनेवाला नासिकाकेअग्र और ललाटमें शंखो करठ और मस्तक में जिसके ९२ भौंरी हो वह धन्य तुरंगोत्तमहै हृदय कन्ध गल कमर में भौंरी हो वह भी तुरंगोत्तम है ९३ नाभि कोख बगलमें भौंरीहो तो मध्यम अश्वहै और ललाटमें जिसके दो भौंरीहों ९४ और मस्तकमें भौंरी होतो पूर्ण सुखदायक घोड़ाहै

और जिसकी पीठपर एक भौंरी हो ९५ वह घोड़ा बहुतसे घोड़ोंको इकट्ठा करै और स्वामी को सूर्य्यसदृश करै और जिस घोड़े के ललाट में आड़ी और वास तीन भौंरीहों ९६ वह त्रिकूट नामक अश्व बाजिवृद्ध करहै इसी प्रकार तीन भौंरी ग्रीवा परहोंतो ९७ वह घोड़ा राजा के गृहमें सब घोड़ोंका स्वामीहो और जिस घोड़े के कपोलमें दो भौंरी हों ९८ तो वहभौंरी यशो वृद्धिकार और राज्य वृद्धिकरहै जिस घोड़ेके कपोलमें एक भौंरी होतो ९९ वह सर्व्वनाम घोड़ा स्वामीकानाशकरै और जिस घोड़ेकेकपोलमें दहिनावर्त्त भौंरीहो १०० वह शिव संज्ञक घोड़ा स्वामी को बड़ा सौख्य दे उसी तरह बायें कपोलमें भौंरी करहै स्वामीके धनका नाश करतीहै १ कानेकी जड़ और स्तन के मध्यमें भौंरीहो तो इन्द्रके सदृश राज्यकी वृद्धिकोदेतीहै २ कन्धे और पार्श्व में जो घोड़ेके भौंरी हो वह विजयाख्य भौंरी युद्धकाल में यश प्रदहै और वहअश्व पञ्चलदगाहै ३ नासिकाके मध्य में जिस घोड़के एक अथवा तीनभौंरीहों वह अनेक प्रकारकी लक्ष्मी और स्वामीको निरंतर सुखदे ४ जिस घोड़ेके गलेमें एक श्रेष्ठ महा भौंरीहो वहघोड़ा भूपाल संज्ञक चक्रवर्त्ती घोड़ा कहाताहै ५ भाल और गलेमें जिस के शुक्ताख्य भौंरी होवहदृद्धिऔर कीर्त्ति कीदेनेवाली है उसको चिन्तामणि कहतेहैं चिन्तित अर्थसुखकी देनेवालीहै ६ जिस घोड़ेकी कोखके अन्तमेंदो टेढ़ी भौंरी

हों वह घोड़ा मरजाय या स्वामीको मारै ७ जिस घोड़े की जांघमें आवर्त्त हो वह परदेश या क्लेशको करै बाजि के लिंगमें भौंरी विजय लक्ष्मीका नाशकरै ८ और इन तीनों स्थानों में भौंरी हो तो अर्थ धर्म्म काम तीनों का नाश करै पूंछ के मूलमें भौंरी हो वह धूम केतु अनर्थ करने वाली है ९ गुह्य और पूंछ में तीन भौंरी हों तो वह घोड़ा यम रूप भयका देने वाला हो और मध्य दण्डसे पार्श्व की तरफ केश भौंरीकी जाय तो शतपदी कहातीहै १० अंगूठे प्रमाण वह भौंरीहो तो अत्यन्त दुष्टहै और अंगूठे से बड़ी हो तो कुछ२ अच्छी है आंसू गिरनेकी जगह दाढ़ी कपोल हृदयगलप्रोथ बस्ति ११ कटि शङ्ख जङ्घा अण्डकोश डिल नाभी गुदा दाहिनी कोख दाहिना पैर इन स्थानों में भौंरी सदा अशुभ है १२ गला पीठ ऊपर का ओष्ठ कान नेत्रका बीच बाईं कोख दोनों बगल १३ जङ्घाआगेके दोनों पैर इन स्थानों में भौंरी शुभ है और मस्तक में अन्तर सहित भौंरी हो तो सूर्य्य चन्द्रनामक शुभ-प्रद है १४ और वेई दोनों भौंरियां मिली हों तो मध्य फल है और एकमें मिलीहों तो दुष्ट फलकी देनेवाली हैं और तीनो भौंरी ऊपरको फर्कसे भालमें हों तो शुभ है १५ और उसी स्थान पर दो भौंरी मिली हों तो अशुभहै और मस्तक में त्रिकोण तीन भौंरी हों दुःखद हैं १६ और घोड़के गलेकेबीचमें एकभौंरीहो तो सब अशुभका निवारण है पैरमें अधोमुख और मस्तकमें

ऊर्ध्वमुख भैंरी शुभ होतीहै १७ पृष्ठमुखी रोम अत्यंत
अशुभ नहीं है उसका शतपदी नाम है और लिङ्ग के
पीछे भैंरी हो स्तनी बाज़ी कहातीहै सो अशुभहै १८
और घोड़ेके कर्णकेसमीप भैंरीहो तो वह शृङ्गीनाम
निन्दितहै और गलेके ऊपर बगलमें भैंरी एक तरफ
हो वह एकराशिनहै १९ और जिस घोड़ेकेपैरमें ऊर्ध्व
मुखभैंरीहो वह कीलोत्पाटी नाम अशुभहै और जिस
घोड़ेकेशुभ और अशुभ दोनों भैंरियां हों वह मध्यम
अश्वहै २० मुख और चारोंपैरोंमें जिसघोड़ेके सपेदहो
वह कल्याणदहै वही हृदयस्कन्ध पुच्छमें सपेदहो तो
अष्ट मङ्गल कहाता है २१ और जिस घोड़े का कर्ण
कालाहो और सब देह एक वर्ण हो वह श्याम कर्ण
घोड़ाहै और तिसमें भी सब अङ्गश्वेतहों तो वह घोड़ा
सब्ब्दा पूज्य है २२ जिस घोड़ेकी आंख लहस-
नियांमणिके सदृशहो वह जयमङ्गल घोड़ा कहाता है
मिलाहुआ वर्ण या एकवर्ण घोड़ा सुन्दरहो तो पूज्य
है २३ जिस घोड़ेके पैर कालेहों या एक पैर सपेद हो
वह घोड़ा निन्दितहै धूसर और गधेके रङ्ग का अश्व
हो तो वह भी निन्दित है २४ जिस घोड़े की तालू
और जीभ काली हो और ओष्ठ भी काले हों वहअश्व
निन्दित है और जो कुल काला हो और पूछ में
सुफेद हो वहभी निन्दितहै २५ जो घोड़ा मोटी चालसे
चले और हाथी व्याघ्र मोर हंस तीतर पारावत २६
और जिस घोड़े की मृग ऊंट बानर की सी गति हो

वह पूज्य अश्व है और जो घोड़ा पानी पीने अत्यन्त दाना खाने पर सवार को दुःख न दे २७ वहगति श्रेष्ठ है और वह अश्व भी श्रेष्ठ है जिस घोड़े का मस्तक श्वेत हो और दूसरा रङ्ग भी उसमें मिला हो २८ वह अश्वदत्त भंजीहै जिसको वह घोड़ा रहै वह अतिनिन्दितहो और तब वह वर्ण दोषको दूर करता है जो कोमल वर्ण हो २९ बलीसुगति अतीव सर्वाङ्ग सुन्दर बहुत क्रूर न हो तो अशुभ भौंरी से युक्तहो तोभीपूज्य है ३० घोड़ोंकेसवारी न करनेसे बहुत सुदोष होते हैं और पोषण न करै तो घोड़ा क्षीण होता और बहुत खिलानेसेरोगी होजाता है ३१ सिखलाने वालेकेगुण दोषसेअश्व सुगति और दुष्टगति होता है कभी तेज चलताहै कभी कोमलहो के ठहरजाता है ३२ शिक्षक घोड़े के निकालने के समय लगामको बराबर रक्खे कदाचित घोड़ा धीरा होजाय तो चाबुकसे मारै ३३ सुन्दर शिक्षा करनेवाला अच्छे घोड़े मध्यम मार से ताड़नाकरै हिनहिना तो कोखमेंमारै गिरपडै तो पखनेकी जगहमारै३४ और घोड़ा डरजाय तो कानों के बीचमें मारै और राह छोड़दे तो गलेमेंमारै और कोपै तो बाहुमें भ्रांतचित्तहो तो पेटमें मारै ३५ और घोड़ेके और स्थानमें कभीताड़ना न करै और शब्दकरै तोकंधेमें और सिखलानेमें गिरपडै तो दोनोंजांघमेंमारै३६ और बारबार कुसमयमें कुजगह न मारै अकालस्थान ताड़नसे घोड़ा दोषों को उत्पन्न करताहै ३७ जबतक

वह घोड़ा जीता है तबतक वह दोष नहीं जाता घोड़ा दुष्ट हो तो अति दण्डदे और चढ़ने पर दण्ड न दे ३८ जो घोड़ा सोलह मात्राके उच्चारण कालके समयमें सौ धन्वा तक जाय तो उत्तम अश्वहै जैसे जैसे घोड़ा न्यून गति हो तैसे तैसे घोड़ा हीन होताहै ३९ हजार धन्वा तक मण्डलाकार गति सिखलावै तो उत्तम पांच सौ धन्वातकजाय तो मध्यम और ढाईसौ धन्वातक जाय तो नीच है ४० सौ धन्वा जाय तो वह अल्प है और पचास धन्वा उससे भी अल्प और एक दिन में घोड़ा जिससे सौयोजन अर्थात चारसै कोसका चलने वालाहो ४१ मंडलके जोरसे ऐसी गतिको बढ़ावै हेमंत शिशिर बसंत ऋतुमें संध्या प्रातःकाल सिखलावै ४२ और ग्रीष्मऋतुमें संध्यामें और शरदऋतु में प्रातःकाल मण्डलगति घोड़ेको सिखलावै वर्षा ऋतु और ऊंची नीची जमीनमें कभी न सिखलावै ४३ और घोड़े की सुन्दर गति से अग्नि बल दृढ़ता आरोग्यता घोड़े की बढ़तीहै और बोझे और मार्ग से परिश्रान्त घोड़े को धीरे२ टहलावै ४४ पीछे से घोड़े को शक्कर और सत्तू मिलाकेस्नेहदे और भोजनकेलिये चना उड़द भटवास दे ४५ सूखा या गीला मांस पकवाके घोड़ेको दे और जो घोड़ेका कोई अंग जखमीहो तो थोड़ा मांसदे ४६ मार्गसे आयेहुये घोड़ेका चारजामा न उतारके अश्वकी रक्षाके लिये थोड़ा गुड़दे ४७ और जब घोड़ेकी थका-हट दूरहोजाय और घोड़ा सावधानहो सुन्दर रूपको

धारण करै तो पीठ का बन्धन चारजामा उतारै ४८ और घोड़ेकी देहमलके धूरीमेंलोटावै और स्नानपान तैराने से भलीभांति पोषण करै ४९ घोड़ेकी सब दोष की हरनेवालीमदिरा और जंगलीरसहैं अपनी शक्ति के माफिक दूध घी या जल से मिला सत्तू घोड़े को दे५० और दाना खाके और जल पीके उसी समय जोते हुये घोड़े के कासश्वासादि रोग होते हैं ५१ यव चना घोड़े के लिये उत्तम अन्न हैं और यव मोठ मध्यमहैं मूंग मसूर अश्व के भोजन में नीचअन्न हैं ५२ और घोड़ा चारों पैर से उछल के मृग की भांति चले वह प्लुता गति है और चलते हुये घोड़े का पैर न मिले साफ चलै वह तुरगति है ५३ पैर को बटोरके मोर की भांति दुलकी चाल चलै वह चाल धौरीतक कहाती है५४ जो घोड़ा आधी देह हिलाता चलै वह वल्गित गति है घोड़े की चाल छः प्रकारकीहै १ धारा२ आस्कन्दित ३ रेचित४ प्लुत ५५ । ५ धौरीतक ६ वल्गित तिनके लक्षण अलगर हैं धारागति वह है जो अति वेगयुतहो ५६ पैर और चाबुक के मारने से भ्रान्तहो के जो घोड़ा चलै आगे के पैर सिकोड़ के उछल उछल के जो गति ५७ वह आस्कन्दित कहाती है और घोड़ा उछल के बराबर चले यह रेचित गति है ५८ बैल के मुख से चौगुना चौड़ा पेट होता डिल्लसहित तिगुना ऊंचा होता और साढ़ेतीन गुना लम्बा होता है ५९ सात ताल संख्या का बैल इनगुणोंसे युक्त पूज्यहै न स्थायी न मन्दहो सुंदर

बोझले चलनेवाला अति सुन्दर हो ६० सीधा सुन्दर पीठ वाला बैल श्रेष्ठ है तीसयोजन का चलने वाला सु मुख घोड़ा प्रशस्त है ६१ नव ताल संख्या ऊंचा सुमुख ऊंट प्रशस्त है शत वर्ष मनुष्य की परम आयु और उतनीही हाथी की परमायु होती है ६२ मनुष्य और हाथी की बाल अवस्था बीस वर्ष और मनुष्य की साठ वर्षकी मध्यआयु होती है ६३ अस्सीवर्षहाथी की मध्यम अवस्था होतीहैऔर चौतीस वर्ष अश्व की परम आयु होती है ६४ बैल और ऊंट की परम आयु पचीस वर्ष है और घोड़ा बैल ऊंट की पांच बर्ष तक बाल्य अवस्था है ६५ और बैल और ऊंटकी मध्य आयु सोलहवर्ष है तत्पश्चात वृद्धावस्था हैं ६६ दांतोंकेनिकलनेपै बैल और ऊंटकी आयु जानीजातीहै ६७ पहिले वर्ष में अश्वके सुपेद छःदांतहोते हैं दूसरे वर्ष में काले ताम्रवर्ण नीचेकोगत दो दांत होते हैं ६८ और तीसरे वर्ष में दोदांत तुल्य होतेहैं क्रमसे छःवर्ष में कालेहोते हैं और नवेंवर्ष क्रमसे पीतहोते और बारहवर्ष में श्वेत होजाते हैं ६९ और वेही दांत पन्द्रह वर्ष में कांच के सदृश होजाते हैं और अठारहवें वर्ष वेहीदांत क्रम से मधु के सदृश होजाते हैं ७० और वेही दांत इक्कीसवें वर्ष शङ्ख के तुल्य श्वेतहोजाते हैं छिद्र हिलना पात तीनतीन दांत करके होता है ७१ घोड़ेकी नाकके अग्र भाग में तीनरेखा पड़ें तो उस घोड़ेकी पराआयु होती और जैसे जैसे वह रेखा हीन हो उसीतरह आयुहीन

होतीहै ७२ जङ्घापर ओष्ठ रखकेबैठै पीठहिलावै जल मेंबैठै चलनेमें बैठजाय पृष्ठपाली ऊपरको फेरकरै ७३ सर्पकीभांति जीभहो बानरकीसी सूरतहो डरपोकहो ऐसाघोड़ा निन्दित है माथेका तिलक छिद्र सहितहो और आश्रयके सहारेसेचलै ऐसाभीअश्व निन्दितहै ७४ बैल के चौथे बर्ष आठों दांत श्वेतकहे हैं और पांचवें बर्ष उनमें से दोहिस्से गिरपड़ते हैं और नये पैदाहोते हैं ७५ और छठेंवर्ष बैलके दांत नजदीक होजाते हैं और सातवेंवर्ष वेहीदांत निकट होजाते हैं और आठवेंवर्ष मध्यम दो दांत गिरपड़ते हैं और उत्पन्न होते हैं ७६ और वे दांत काले पीले श्वेत रक्त शंखकेसदृश दोदोबर्षमें होतेहैं और क्रमसे बर्षदिनपै वे दांत हिलनें लगते हैं और गिरपड़ते हैं ७७ और ऊंट के कहेहुये प्रकारके सदृश अवस्था का ज्ञानहोता है और हाथी के दबानेकेलिये चलानेवाला और खींचनेवाला अंकुश होताहै ७८ उसी अंकुश से हथिवान अच्छीचाल सिखलाता है और लगाम के दोखण्ड ऊपरको और बगल के दो खण्ड बारह अंगुल के होते हैं ७९ उस लगाम के मुखमें दो दृढ़ छिद्र होते हैं और लगाम के दोनों बगल में रस्सी लगानेकेलिये दोकड़े लगतेहैं ८० इस प्रकार के लगाम से घोड़े को बश में करै और नाकको खींचने की रस्सी से बैल और ऊंटको बश में करै ८१ इनके देहके मलशोधन अर्थात् देह साफ़ करने के लिये तेज लोहे का खरहरा होताहै अच्छी

शिक्षासे मनुष्य और पशु नम्र होजातेहैं ८२ और सेना के लोग विशेष करके अनम्र होतेहैं इसकारण उनको धन दण्ड अर्थात जुर्माना करके सिखलावे जलके निकट बैल घोड़ेको शिक्षा करै और जंगल में हाथी और ऊंटको शिक्षाकरै ८३ और पैदर सिपाहियोंको शिक्षा सेना स्थान के निकटवर्ती समधरातल में करै और चार चार सै कोश पै राजा सेना को राखै ८४ पहिले हाथी ऊंट घोड़ा भारलेजानेमें श्रेष्ठहैं और वर्षा कालको छोड़के गाड़ी सबसे उत्तमहै ८५ राजा छोटे भी शत्रुकेजीतनेकेलिये थोड़ीसामग्रीसे न जाय राजा मोटी तैयारी सेनासे चढ़ाईकरै ८६ अ शिक्षित असार तुरन्त केनौकरको बलवान् भी हो तो बुद्धिमान् राजा युद्धको छोड़ अन्यकार्यमें लगावै ८७ छोटे जीवकेमारनेमें बार-म्बारविकारकरनेको यत्नकरताहै और बिकारकरने वाला बलवान् वह क्यों न यत्नकरेगा ८८ राजा यद्यपि बहुतसीसेनारखताहो और आपकादरहो तो वह रण में ठहरने के योग्य नहीं होता और थोड़ी सेनावाला शूर राजा अरि के साथ युद्ध करने में ठहरता है ८९ सिखलायेहुये थोड़े सेशूर अपने शत्रुकेजीतनेमें समर्थ होतेहैं और बड़ी शिक्षित सेनासे युत शूरहो तो क्यों न शत्रुको जीते ९० शूर शिक्षितसार सेना से रणमें राजा शत्रुके पासजाय क्योंकि प्राणानाशमें भी शूरसेनास्वामी को नहीं छोड़ती ९१ कटु वाक्य मजदूरी के हास भय नित्य प्रवास परिश्रम इतने से अवश्य भेद होताहै ९२

जिसकी सेना फूटजाती है उसकी जय नहींहोती शत्रु की थोड़ी भी सेना हो तो राजा उसका भी भेदकरै ९३ शत्रु सेना का जिससे अवश्य भेद हो उसी तरह कुटिलता और दान से राजा करै ९४ और अत्यन्त प्रबल शत्रु को सेवा नम्रता से वश्य करै प्रबल शत्रु को मान दान से और हीन बलको युद्ध से वशमें करै ९५ मैत्री से सम बलको और भेद से सब को वश्य करै शत्रु के उपाय सेना भेद के सिवाय और नहीं हैं ९६ राजा तभी तक नीतिमान् कहाता है जबतक स्वयं सुबलवान् हो तभी तक और भी मित्र होते हैं जैसे पुष्ट अग्निके पवन मित्र होते थोड़ी अग्नि के नहीं ९७ शत्रु करके त्यक्त सेनाको लेले जहां अपनी सेनाहो वहां न रक्खे उससेनाको अन्यत्र स्थापितकरै या पहिले युद्धकेलिये भेजै ९८ मित्र सेना को राजा निकट या पृष्ठ भाग में अथवा बगल में रक्खै और मंत्र यंत्र अग्नि करके जिसको फेंके और मारै वह ९९ अस्त्र कहाताहै उससे अन्य शस्त्र जैसे तलवार कुन्त अस्त्र दो तरहकाहै एक नालिक दूसरा मांत्रिक १००० जब मांत्रिक अस्त्र न हो तो नालिक अस्त्र धारण करै शस्त्र सहित राजा सदा विजयको जाय १ लघु धार और दीर्घ धारके भेद से शस्त्र अस्त्रके नाम होतेहैं और अस्त्रके जाननेवाले नवीन अस्त्रको व्यवहारके लिये अलग प्रसिद्ध करते हैं २ नालिक शस्त्र दो प्रकार का है एक बड़ा दूसरा छोटा बाजू और ऊपर पांच बीता तक एक नालिक है ३

इसनालके मूल और अग्र भागमें लक्ष्य भेदी तिल बिंदु होताहै और जिसचापसे अग्निपड़े और बारूदउड़े वह कर्णके सदृश होताहै ४ सुकाष्ठके अङ्गके निकट छिद्र मध्यमें अंगुल भर का बिल उसके भीतर बारूद की धारसा करानेवाली शलाका अर्थात गज संयुत दृढ ५ इस लघु नालिक अर्थात बन्दूकको पैदर और सवार रखतेहैं जैसे जैसे मजबूत उसकी नालहोती और जैसा मोटा छिद्रहो ६ और जितनालम्बा और गोल बन्दूक हो उतनाही दूरभेदीहोताहै मूलछिद्र और सूत्रसे लक्ष्य सम होय ७ समसन्धान भाग अर्थात निशाना के जो समहोय ७ वह काष्ठ और छिद्र से विवर्जित बृहन्नालिक यानी तोप कहातीहै वहगाड़ी आदिपर चलतीहै और यो-जन भरसे जयदेतीहै ८ सोंचर नोन पांचतोला गन्धक चार तोला और अन्तर्धूम से बिपक्व मदार और जला-या हुआ केलेका गाभ एक सेर ६ साफ लेके चूर्णके सिलावे शुद्ध मदारके रसका पुटदे और घाममें सुखा-वै १० शक्करकी तरह्पीसै तो यह अग्निचूर्ण अर्थात बारूद बनता है और सोंचर नोन का छः या चार भागले ११ इस नाल अस्त्र के चूर्णमें गन्धक और अंगार पूर्ववत ले गोला लोहमय अथवा कूल्फी-दारहो १२ शीशा की गोली बन्दूक के लिये अथवा अन्यधातु की या लोह सारमय गोली बनावै अथवा बन्दूक अन्य धातुमय बनावै १३ उसतोपकोगोलन्दाज नित्यही साफ करै अंगार गन्धक सोंचर नोन १४ मैं-

नशिल हरताल शीशा मल हींग कान्तीसार कपूर १५ लाख धूप देवदारु का गोंद इनके सम न्यून अंश से अनेक तरह की बारूद होती है १६ ऐसी विद्या की कल्पना करै कि जल धपमें कामदे अग्निके संयोगसे लक्ष्य में गोला को मारै १७ प्रथम तोप को साफ करै तो उसमें बारूद दे और दण्डसे उसको तोपमें मजबूती से धरै १८ उसके पीछे गोलादे तदनंतर रंजक दे उसी रंजकमें अग्निकोदेके गोलेको लक्ष्यमें मारै १९ जिससे धन्वा पै चढ़ाया हुआ बाण लक्ष्य का भेदन करै उसी तरह दोनों हाथ से खींच कै बाण मारै २० अठपहल मोटे तिलवाली हृदय के बराबर प्रांशा के सदृश हाथ भर पर तिलयुक्तदो धारावाला २१ थोड़ा टेढ़ा एकधार चार अंगुलचौड़ा नाभि के बराबर दृढ़ मुष्टि चन्द्रमाके सदृश क्षुरप्र कहलाताहै२२ प्रासखड्ग चार हाथका होता दण्डमें तिल क्षुरकासामुख होताहै और दशहाथ लम्बा फालमुख बिन्दीदार कुन्तहोताहै २३ छः हाथकेघेरसे युक्त तेज सुनाभियुक्त चक्रहोताहै और तीन हाथके दण्डसे युक्त त्रिशाख लोहकी रस्सी वाला पासकहाताहै २४ और गेहूंके सदृश मोटलोहेके पत्रका दृढ़ कवचहोता वह शिरसहित ऊपरके देहकी रक्षा और शोभित करताहै २५ जो राजा सम्पूर्ण युद्ध की सामग्री से युक्तहो और षट्गुण मंत्रको जानताहो बहुत अस्त्रसे युक्तहो वही राजा युद्ध करनेकी इच्छा करै २६ अन्यथा युद्ध करनेसे राजा दुःख पाता और

राज्य से च्युत होजाताहै और जो उद्युक्त होके लड़ावते हैं वे शत्रुहैं २७ अपने अर्थकी सिद्धिके लिये अस्त्र आदिसे व्यापारयुद्ध कहाताहै और मंत्रास्त्रसे देवयुद्ध और नालास्त्रसे असुर युद्ध होताहै २८ और शत्रुबाहु से उत्पन्न मानव युद्ध कहाताहै एक का बहुतके साथ और बहुत का बहुतके साथ युद्ध होताहै २९ एकका एकके साथ दो का दोके साथ युद्ध होताहै काल देश शत्रु बल और अपने बलको देख३० उपाय और षट् गुण मंत्रके सदृश युद्धकी इच्छा करै और शरद हेमंत शिशिर काल युद्धमें उत्तम है ३१ और बसन्त ऋतु और गर्मीकी ऋतु युद्धमें अधमहै वर्षामें युद्ध अच्छा नहीं वह सामका समय है ३२ जब राजा युद्धकीसा-मग्रीसे सम्पन्न अधिकबलहो मनमें उत्साह और शुभ शकुन हो वही युद्धका शुभ समयहै ३३ आवश्यक कार्य्य हो और शुभ समय न हो हृदयमें विश्वेश का ध्यान करके अपना चिह्न घरमें छोड़के राजा युद्ध को जाय ३४ इसमें गो स्त्री विप्रके विनाश का कालनियम नहींहै जिस देशमें जैसा समयहो उसीतरह कवायदी सेना को जगह दे ३५ शत्रु के विपरीत देश उत्तम देश है अपनी और शत्रुकी कवायदी जगह तुल्य हो ३६ शास्त्रके जानने वाले जिस देशको मध्यम कहाहै और शत्रु सेनाकी छावनी हो ३७ और अपने विपरीतहो वह देश अधमहै और अपनी सेनासे शत्रुकी सेना तृ-तीयांश जो हीन हो३८ और चाहे कि पूरा करलें तो

बिना सिखलाई असार तुरन्त की रक्खी हुई सेना विजयप्रद नहींहोती जो पुत्रकी तरह पालित दानमान से बढ़ाई ३९ युद्धकी सामग्रीसे परिपूर्ण अपना सैन्य विजयप्रदहोताहै और सन्धि बिग्रह यान आसन समाश्रय द्वैधीभाव ये षट्गुण मन्त्र हैं और जिस क्रियासे बलवान् शत्रु बश्य हो ४० उस क्रिया को सन्धि कहते हैं इसको यत्न पूर्व्वक विचारै विकर्षित हो अर्थात् बलसे शत्रु स्वाधीनहो ४१ जिससेहो उसको विग्रहकहतेहैं राजा मन्त्रियों के साथ उसका विचार करै और शत्रुके नाशार्थ अपने अभीष्ट के सिद्धिके लिये गमन यान कहाता है ४२ जिस स्थान से अपनी रक्षा और शत्रु का नाश हो उसको आसन कहते हैं और जिससे रक्षित हो दुर्ब्बल भी बलवान् हो वह आश्रय कहाता है ४३ अपनी सेनाका थोक बांधके दो जगह रखना द्वैधीभाव है बलवान् शत्रु करके दबे हुये राजा को इससे अन्यउपाय नहींहै ४४ बिपत्तिमें पड़ा हुआ राजा सन्धि करके काल पालन करै सक यही सन्धि रूप उपहार मत है ४५ और अन्य उपहारके भेद सम्पूर्ण मैत्री बिवर्जित हैं बली शत्रु जब चढ़ाई करता है बिना कुछ पाये नहीं फिरता ४६ इससे सन्धि को छोड़ अन्य नज़र नहीं है और शत्रुके बल के अनुसार उपहार दे ४७ शत्रु की सेवा अङ्गीकार करै अथवा कन्या पृथ्वी या धन दे और सलाह पूर्व्वक अन्यके जय के लिये अपने सामन्तों को इकट्ठा करै ४८ दुष्ट

राजा के साथ सन्धि करै वह कालपाके उलट जाता है जैसे एक में मिला हुआ बहुत कराटकों से युत ४९ काटने के योग्य नहीं होता उसी तरह सेना युत राजा किसीके जीतने योग्य नहीं होता सामान्य भय हो तो बलीते सन्धि करै ५० और बहुत शत्रुहों तो बुद्धिमान् राजा अपनी रक्षा करै बली शत्रु के साथ युद्ध करना यह शास्त्र की आज्ञा नहीं है ५१ प्रतिवात होज मेघ कभी नहीं चलता उसी तरह बली शत्रु से नम्रता करै और समय पाके विक्रम करै ५२ सम्पति कभी नहीं जाती जैसे ऊंचे स्थान को नदी नहीं जाती और बुद्धिमान् राजा सन्धि करने से भी विश्वास न करै ५३ पूर्व्वहीं मित्रता करके इन्द्रने वृत्रासुर का वध किया है विपत्ति करके ग्रस्त शत्रु से पीड़ित राजा अपनी अभ्युदयकी इच्छा करै ५४ देश काल बल से संयुक्त राजा विग्रह का प्रारम्भ करै और प्रहीन बल मित्र दुर्गस्थ और जो दो शत्रु के बीच में हो ५५ अत्यन्त विषयासक्त प्रजा द्रव्यका हरने वाला भिन्नमन्त्री और सेना युत राजा को घेरिकै पीड़ित करै ५६ यह विग्रह कहाताहै अन्य कलह बलवान् शूरके अल्पबल का युद्ध विग्रहहै ५७ बहुधा विग्रह में पुरुषों का सर्व्व नाश होताहै और दो का एक अभिलाष होता तो कलह होता है ५८ जब दूसरा उपाय न हो तो कलह करै विगृह्य सन्धाय सम्भूय प्रसंग ५९ उपेक्षा निपुण इन भेदों से यात्त पांच तरहका है जो सब शत्रुगणको ग्रहण करके

चलाजाय ६० उसको यान के जानने वाले आचार्य्य विगृह्ययान कहतेहैं सम्पूर्ण शत्रु मित्र अपने मित्रों से चारों तरफ बल करके ६१ शत्रु को उसके साथ पकड़ गमनकरै वह विगृह्य गमन कहाताहै और अन्यत्र यात्रा का सन्धानकरके बगलके शत्रु से उठावनी करै ६२ वह सन्धाय गमन कहाताहै और फलार्थीहो उसके जीतनेकी इच्छा करै साम्परायिक सेनापतियों के साथ एक भूप हो ६३ और शौर्य्य शक्ति सामन्तोंसहित गमन सम्भूय गमन कहाताहै और अन्यत्र प्रस्थान करै और संगसे और जगह जाय ६४ यान के जानने वाले मन्त्री लोग उसको प्रसंगयान कहते हैं और बली राजा शत्रु के ऊपर जाने से विकृत फल पाके ६५ उसको छोड़ के जो यान है वह उपेक्षायान कहाता है दुर्वृत्त और अकुलीन शत्रु पर चढ़ाई करै ६६ राजा अपने बलको हर्षितऔर दानसे तुष्टकर सेनाका स्वामी वीर पुरुषों सहित आगे चले ६७ सेना के मध्यमें स्त्री और धनको रक्खे और स्वामी थोड़ा धन और सेना की सदा उद्युक्त हो रक्षा करै ६८ और नदी पर्वत वन किला इन स्थानों में जहां २ भय हो वहां २ सेनाका किला बनाके गमनकरै ६९ आगेसे भय होतो मकर व्यूहसे गमनकरै अथवा सूचीव्यूहसे गमनकरै ७० और पीछेसे भयहो तो शकटव्यूह और बगलमेंभयहो तो वज्रव्यूह और सर्वत्र भय होतो सर्वतो भद्र अथवा व्याल व्यूहसे गमन करै ७१ और शत्रु सेना का भेद करनेवाला यथा

देश बाजा या बोली पर व्यूह रचना करे ७२ जिसको अपनी सेनाके सिवाय दूसरा कोई न जाने उसी तरह बुद्धिमान सेनापति नाना प्रकारकी व्यूह रचना करे७३ घोड़े हाथी पैदरका अलग २ सैनिक लोगोंका व्यूह के सङ्केत बड़े शब्द से राजा सुनावे ७४ बायें या दाहिने या मध्यमें या आगे स्थित हो सेना के लोग उस शब्द को सुन जैसा कहा है सुनके उसी तरह सिखलाया हुआ कामकरें ७५ सम्मीलन अर्थात् मिलजाना अलग २ होजाना घूसना बटुर जाना चलना फिर जाना ७६ पर्याय से सम्मुख होना उठना और लोट जाना टह-रना अष्टदलकी तरह और चक्रकी तरह गोल होजाना ७७ सूचीव्यूह शकटव्यूह अर्द्धचन्द्रव्यूह के तुल्य होजाना थोड़े २ अलग होजाना और पर्यायसे पंक्ति में आ जाना ७८ शस्त्र और अस्त्रका धारण करना चढ़ाना निशाने का मारना अस्त्रका त्याग और शस्त्र का परिघातन ७९ और चढ़ाना फिर गिराना ग्रहण करना पुनः त्याग देना और शस्त्र अस्त्रके घट विक्रम से अपनी रक्षा और दूसरेका मारना ८० दो तीन या चारकी पंक्ति बांधके चलना और पूर्व गृहको छोड़ के जाना या उसके निकट रहना ८१ अस्त्र सिद्धके लिये अपशरण करे निकट जाके अस्त्रका विनाशन करे पूर्व मुख हो अस्त्रको व्यूहस्थ सेना वाला सदा उतारै ८२ बैठ के अस्त्रका त्याग करे फिर पूर्वको चले और पूर्व आसीन अस्त्रको निकट जा अपने अस्त्रको

उतारै ८३ एक २ या दो २ अथवा बहुतसे या सब सा-
थ जैसा सिखलाया गया हो जैसे आकाश में क्रौंच की
गति होतीहै उसी तरह पंक्ति से होता है ८४ जैसा
स्थान और सेना हो वैसा व्यूह का मुख बनावै पतला
गला मध्य पुच्छ और पंक्तिसे मोटे पखने हों ८५ बड़े
बड़े पक्ष मध्य गल और पुच्छ मुखसे श्येन के तुल्य
हो और चारपैर का मकर लम्बा बड़े मुखवाला दो
ओठों से युक्त ८६ सूची व्यूह सूक्ष्म मुख लम्बी मूल
में छिद्र बीच में सम होता है और चक्रव्यूह एक मार्ग
और आठ तरह घिरा हुआ होता है ८७ चारों तरफ
आठ घेरे से युत सर्वतो भद्र व्यूह होता है मार्गतक आठ व
कङ्कण के सदृश होते गोल सर्वतो मुख होता है ८८
शकट व्यूह शकट के तुल्य और व्याल व्यूह व्याल की
तरह होता है सेना थोड़ी हो या बहुत रणका स्थान
और मार्ग देखके ८९ बहुत से व्यूह या एक व्यूह अथवा
दो व्यूह या मिलेहुये व्यूह बनावै और ऐसा यन्त्रास्त्र
करै जिससे शत्रु सेना में भेद पड़जाय ९० राजा सैन्य
सहित स्थल में रहे वही उसका आसन है तथा अन्न
जल अन्य जो शत्रु पोषकहैं ९१ अच्छी तरह इनको
रोकके यत्न से चारों तरफ डेरा करै युद्ध की सामग्री
से हीन प्रक्षीण घास और इन्धन हो ९२ ऐसा राजा
क्षीण प्रजा हो समय पाके वश होता है शत्रु और
जीतने वाले के विग्रह में दोनों क्षीणहैं जिस स्थानमें
युद्धको गया था उसी स्थानपर आसन करै और वहां

शत्रु करके पीड्यमान निरुपायहोतो ९३ कुलीन सत्य वादी श्रेष्ठ बली राजाका आश्रय ले और जीतनेवाले सुहृत सम्बन्धि बान्धव ये सह्य अर्त्थ हैं ९४ अन्यराजा को युद्ध का खर्चा दे या हिस्सा करदे यही आश्रय कहाताहै अब महात्मा लोग दुर्ग कहते हैं ९५ अनिश्चित उपाय हो तो अपने समय को देखै काक के नेत्र की तरह अलक्षित होरहै ९६ अन्य काम औरों को दिखावे और कामकरै सतउपाय सन्मन्त्र और उद्यमसे कार्य्य सिद्ध होते हैं ९७ उद्यम से छोटे मनुष्य की भी जय होती है राजा को क्योंन हो उद्यमसेकार्य सिद्धहोते केवल मनोरथ करनेसे कार्य सिद्ध नहीं होते ९८ सोते हुये सिंह के मुख में आपही आके हाथी नहीं गिरता और लोहा पुष्ट वस्तु है पर उपाय से मुलायम होता है ९९ यह लोक में प्रसिद्ध है कि जल अग्निको बुझादेताहै और उपाय करनेसे अग्नि जल को सोख लेता है १०० उपाय से मदान्ध हाथी के मस्तक पर पैर रखते हैं षट्गुणान्त समाश्रय उपाय से भेद उत्तम है १ जीतने वाला राजा सदा भेद और उपायकरै इन दोनों विना राजा कभी युद्ध न करै २ ऐसा उपाय करै कि रिपुके सेनापति और मन्त्रियों और प्रजा और राजाकी स्त्रियोंमें भेदहो ३ शत्रु और अपने षट्गुण उपायोंकोदेखके प्राणके सन्देह और सर्वस्व के हरणमें युद्धकरै ४ स्त्री ब्राह्मण गऊ के विनाश में और ब्राह्मणोंके युद्धमें कभी पराङ्मुख न हो ५ युद्धको

छोड़के जो भागता है उसको देवता मारते हैं समउत्तम अधम को रोकताहुआ राजा प्रजा पालन करै६ क्षत्री का धर्म्म बिचार के युद्धसे निवृत्त न हो बिना युद्धकरने वाले राजा और त्याग रहित ब्राह्मणको ७ पृथ्वी लील लेती है जैसे बिलमें सोतेहुये कोसर्प लीललेता है और विपत्ति में ब्राह्मण क्षत्रीका धर्म्म करै तो उत्तम है ८ और उस ब्राह्मण का जन्म लोक में प्रशस्त है क्योंकि क्षत्री ब्राह्मणसे हुयेहैं और शय्यापर मरनायह क्षत्रीका अधर्म्महै ९ कफ और पित्तको त्याग करता और दीनबचन कहता हुआ बिना घाव के जो क्षत्री मरताहै १० ऐसे क्षत्री के कर्म्मको पुराने बुद्धिमान लोग प्रशंसा नहीं करते बिनारणके गृह में क्षत्री का मरना प्रशस्त नहीं है ११ कुशलका अकुशलत्त्व होना यह अधर्म्मको कहाता है जाति करके परिवारित रण में लड़के क्षत्री मरै १२ शस्त्र अस्त्रसे कटा क्षत्री मरने के योग्य है रणमें परस्पर राजोंको मारै १३ जो युद्ध करता है और फिरता नहीं और अपनेस्वामी के लिये सेना के संगजो भयसे लौट न आवै उसको अनन्त स्वर्ग होता है औरसंग्राम में मारे हुयेशूरकी कभी चिन्ता न करै १४ सब पापों से छूट के पवित्र हो मोक्ष को पाताहै और हजारों श्रेष्ठ अप्सरासंग्राम में मरे हुये को देख १५ बहुत शीघ्र दौड़तीहैं कियह हमारा स्वामी हो और मुनि लोग बड़ी तपस्या से जो बड़ा स्थान पातेहैं १६ उसको युद्धाभिमुख पुरुषशीघ्र

पाता है यह तप पुराय और सनातन धर्म है १७ जो
युद्ध से नहीं भागता उसके चारों आश्रम होतेहैं शूरता
से पर और कुछ तीनोंलोक में नहीं है १८ शूरसबका
पालन करताहै और शूरमें सब बातें रहती हैं औरच-
रका अचर आहारहै और दांत वालेके बिना दांतवाले
आहार हैं १९ बिना हाथवाले हाथवालेके आहार हैं
और कादर शूरकेआहारहैं ये दोपुरुष सूर्य्यमराडलके
भेदन करने वाले हैं २० परिव्राट योग युक्त औ रणमें
अभिमुखस्थित और समर्थ आततायीके बधसे अपने
को बचावे २१ वेद का जानने वाला सुन्दर विद्यावान्
ब्राह्मण गुरुसे द्रोह करे वह आततायीहै और शूद्रके
तुल्य है २२ आततायी के बध में मारने वालेको कुछ
दोष नहीं होता और आते हुये बालक भी आततायी
शस्त्र उठाके २३ मारने से भ्रूणहा नहीं होता न मारै
तो भ्रूणहा होता है और जो जीने की आशा करके
युद्धसे भागता है वह नराधम कहाता है २४ वह जब
तकजीता है तबतक देश भर का पाप भोगता है मित्र
या स्वामी को छोड़ के जो रणसे भागता है २५ वह
मरने परनरकको जाता और जबतक जीता रहता है
सब निन्दा करते हैं और मित्रको विपत्ति में देख जो
सहायनहीं करता २६ इसलोकमें अयशको पाता और
मरने पर नरक को जाताहै और विश्वास करके जो
शरणकोप्राप्त होता है जो दुष्ट बुद्धि उसका त्याग क-
रता है २७ वह जब तक चौदह इन्द्र रहते हैं तब तक

नरक में रहता है और दुष्ट स्त्री का जो व्राह्मण नाश करते हैं २८ शस्त्रास्त्र से युद्ध करके वह पापभागीन-हीं होते और युद्ध के अनुकूल भूमिका जिसतरह लाभ हो उसीतरह २९ दोनों सेना के आधे भागसे प्रथम सेना के अर्द्ध भागसे युद्ध करें और मन्त्री से रक्षित अमात्य के साथ युद्धकरें ३० जब प्राणका सन्देह हो तो राजा करके रक्षित सेनासे युद्ध दूर के चलने से क्षुधा और पिपासासे आतुर ३१ व्याधि काल मरण से पीड़ित शत्रु से भाग कीचड़ धूली जलमें चलतेथकेवासातुर ३२ प्रसुप्त भोजनमें व्यग्र दुष्ट भूमिमें स्थित घोराग्नि भय संत्रस्त वृष्टि वात समाहत ३३ इत्यादिक दुःखों करके व्याकुल अपनी सेना की भली भांति रक्षा करै और शत्रु सेनाका नाशकरै ३४ और षट्गुण उपाय अपना और शत्रु का मंत्र विचारै धर्म्म युद्ध अथवा छल युद्ध से शत्रुको सदामारै ३५ सवारी में चौथाई भृत्य और अपने सेवकों को राजा सदा बढ़ावै और युद्ध में ढाल और कवच से राजा सदा अपनी रक्षा करै ३६ सेना वालोंको भलीभांति सैन्य शौर्य्यवर्द्धन मदिरा पिलाके नालास्त्र और खड्ग आदियुक्त सैनिकोंसे शत्रुओं को मारै ३७ भालासे सवार को रथ पै चढ़ बाण से रथी को मारै गजवाला गजवाले से लड़ै और घोड़ेवाला घोड़ेवालेसे युद्ध करै ३८ रथ से रथ जुटै पैदर से पैदर एक अस्त्र से एक शस्त्र को अथवा अस्त्र को अस्त्र से काटै ३९ जमीन में खड़े हुये और नपुंसक और हाथ

जोड़ेहुये बालखोले और बैठे हुये और हम तुम्हारेही हैं यह कहतेहुयेको न मारै ४० सुसन्न कवचहीन नग्न और निरस्त्र और जो युद्ध करनेवालोंको देखता हो और जो शत्रु के साथ युद्ध करता हो ऐसे मनुष्यों को न मारै ४१ जो जल पीताहो भोजन करता हो या अन्य कार्य्यांकुलहो डराहो अथवा भगाहो इनको सज्जनों के धर्म्म स्मरण करके न मारै ४२ वृद्ध बाल स्त्री केवल राजा इनको न मारै यथायोग्य मारते हुये का धर्म्म हीन नहीं होता ४३ धर्म्मयुद्ध और छल युद्धमें ये नियम नहीं रहते छल युद्धसे और युद्ध नहीं क्योंकि अन्यथा बलवान् शत्रु का नाश नहीं होता ४४ राम कृष्ण इन्द्र आदि देवताओं ने पूर्व्वही कूट युद्धका आदर कियाहै कूटयुद्धसे वालि कालयवन नमुचि मारे गये ४५ प्रसन्न मुख हो कोमल बाणोंसे क्रूरों को धार सदृश मन से रिपु का छिद्र देखे ४६ मञ्च पर बैठा हुआ शतानीक सेनाके कार्य्य को विचारता हुआ सदा व्यूह के संकेत बाद्य शब्दान्तवर्ती ४७ राजा के देश के हितचाहने-वाले सेना के लोग घूमते हैं और शत्रु करके अपनी सेना को मारीजाती देखके यत्न करैं ४८ आगे काम करनेवाले योधाओंको राजा इनाम अथवा अधिकार क्रम से यथायोग्य सदा दे ४९ जल अन्न तृणके रोकनेसे शत्रुको यत्न से पीड़ित कर पहिले विषमहो पीछे वेग से मारै ५० नकली सेना देके शत्रुकी सेनाको फोड़ले वह सेना या तो नित्य विश्वास में सोती हो अथवा

जागनेपर कृतघ्नमहो ५१ इसतरह लालच दिखलानेपर भी होशियारी से शत्रु सेना का नाश करै उस सेना के सहाय का बल कभी सङ्कट में भी न ले ५२ और अपने समीप अन्यको राज्य न दे सगाभरमें युद्धकेलिये तैयारीकरै और सगा भरमें भागके फिर घरमें आवै ५३ और चोरकी तरह सदा दूरसे शत्रु पर घेरके गिरै और मोहर रुपया पैसा जो जितनापावै वह उसीका है ५४ और राजा कार्य्य के सदृश योधाओंको प्रसन्न करता हुआ वह धन दे इसतरह शत्रुकी जीतके उससेकरमें ५५ राज्य का अंश अथवा राज्यले और प्रजा को प्रसन्न रक्खै और नगारे के मङ्गल शब्दसे राजा अपने पुरको जाय ५६ और राजा शत्रुकी प्रजा को पुत्र की तरह पालन करै जिससे वे अपने वश में रहैं और सलाह के लिये दूसरा मन्त्री नियत करै ५७ देशकाल पात्रमें आदि मध्य अन्त में यह मन्त्र फल ऐसा है यह उपाय से विचारै ५८ प्रधान अपना कार्य्य युवराज से कहै फिर युवराज प्रधानोंके साथ राजासे कहै ५९ राजा प्रथम युवराज से कहै और युवराज राजा के समीपही अधिकारी मन्त्रियों से कहै ६० और पुरोहित राजाको सत असत कर्म का उपदेश करै और राजा ग्राम के बाहर समीपही सेना सदा रक्खै ६१ गांव के लोग और सिपाहियोंका लेन देन न हो फौजके लिये बाजार फौजही में रक्खै ६२ वर्ष भर सेना को इकट्ठा न रक्खै और हजार सिपाही सदा तैयार रहैं

क्षण भर उनको सिखलावै ६३ सेना वालोंको आठवें दिन उनका नियम सिखलावै तेजी और किसी को मारना राजकार्य्य में अविलम्ब ६४ राजा का अनिष्ट देखना स्वधर्म का छोड़ना इनको सेना के लोग छोड़ दें और किसी से बात न करें ६५ और सिपाही राजा की आज्ञा बिना ग्राम में न जायँ और ओहदेदार के दोष को भी राजा से कहैं ६६ और सेनाके लोग स्वामी के कार्य्यको मित्रता पूर्व्वक करैं सुन्दर साफ शस्त्र अस्त्र वस्त्र की रक्षा करैं ६७ अन्न जल पसेरी भर और पात्र बहुत अन्न का साधक हो इस आज्ञा से अन्यथा होनेसे चारको यमपुरी को भेज देवे ६८ भेद करानेवाला और शत्रुधन लेके इसको दिखावै और सेना वालों को व्यूह का अनुकरण राजा अभ्यास करावे ६९ उसीतरह अयन अयन पर निशाने को अस्त्र मार के गिरावे सन्ध्या और प्रातःकाल सेनावालों की गिन्ती करै ७० जाति सूरत वय देश ग्राम बास को बिचारके जब नौकर हो उसको अवधि दे और जो कुछ दे उसकी रसीद लिखाले ७१ सेवक को मजदूरीमें कितना पारितोषिक दिया उसके पानेका पत्र लेके मजदूरीका पत्रदे ७२ सेनावालों में जो सिखलाने वाले हों उनको पूर्ण मासिक दे और जो व्यूहाभ्यासमें नियुक्तहों उनको आधा मासिकदे ७३ असत्कर्नाश्रित सैन्य शत्रुयोगसे नाश करता है राजा के असद्गुण रत कौनहैं और कौन गुण द्वेषी हैं ७४ असद्गुण से उदासीन कौन

हैं विचार पूर्व्वक राजा उनको मारै और गुणाशक्त भृत्य गुणी भी हो उसको राजा त्याग करै ७५ सुजन और विश्वासी मनुष्य को राजा महल में नियत करै और उसी तरह के मनुष्य को राजा धन आदिके खर्च करने में रक्खै ७६ उसी तरह लोकके विश्वासियोंको बाहर के कामों में युक्त करै अन्यथा करने से केवल निन्दा होतीहै ७७ शत्रुके सम्बन्धी जो भिन्न मन्त्रीके गण गुणाधिक भी हैं तो राजा के दुर्गुण से हतमान होते हैं ७८ और जो भृत्य राजकार्य्य साधकहैं उनका पोषण करै और जो लोभसे असेवन करते और भिन्न रहते उनको आधा मासिक दे ७९ और शत्रुकरके त्यागे सुगुणी सुभृत्यको राजा पालनकरै और पराये राज्य के हरने में भिन्नावधि मजदूरी दे ८० आधा मासिक उसके पुत्र को और चौथाई स्त्री को दे और जिसका राज्य हरै उसके पुत्र आदि सद्गुण हों तो चतुर्थांश मासिक दे ८१ अथवा हरे हुये राज्य में से बत्तीसवां अंशदे और हृत राज्य का खजाना भोग के लियेले ८२ अथवा उस धनका पूर्वोक्त प्रमाण से आधा धनदे वह धन जबतक द्विगुण न हो तबतक दे ऊपर कभी न दे ८३ अपनी बड़ाई के लिये हृत राज्य की रक्षाकरै अच्छेलोगों को मान से प्रसन्न करै और दुष्टोंको पीड़ा दे ८४ आठ दश अथवा बारह दिन रात्रिके भाग करके पहरावालों को देख पहरा पर नियत करै ८५ प्रथम कल्पित अंशको यामिक लोग सेवा करैं आद्य

फिर अन्तिम और अपर लोग अपने से पूर्व कोमा- नैं ८६ फिर भी उसीतरह योजनाकरै कि प्रथम पहिले फिर उसीतरह अन्तिम स्वपूर्वार्द्ध दूसरेदिन और कम से द्वितीय आदि ८७ दिनमें चारसेअधिक यामिकोंको नियत करै और बड़ा कार्य्य देखके एक साथ बहुतों को पहरा पर नियत करै ८८ और चार से कम पहरा कभी न नियत करै जिसकी रक्षा करनी हो और सिखलानाहो पहरावालेसेकहदे ८९ उस यामिक की दृष्टि के सामने सम्पूर्ण वस्तु हो और यामिक भी उस ताले और कोठा आदिको अपने समय भर रक्षा करै ९० वह यामिक अपनी बदलीके समय दूसरे या- मिकको ठीकर दिखादे और क्षणा क्षणामें पहरावालों को दूरसे पुकारा करै ९१ राजा अपने किये हुये स- म्पूर्ण नियमों को सदा पालता रहे तभी राजा सबमें पूज्य होताहै ९२ जिस राजाके नियतकर्म होते और स्वीकार किये हुयेमें दृढ़हो और अयोग्यके त्यागमें नियतहो वह बहुत दिन तक राजा रहताहै ९३ और जिस राजा के कार्य्य और साधुत्व और बचनोंका नियम न हो वह सदा कुटिल राजा शीघ्र अपने पदसे च्युतहोजाताहै ९४ जिसतरह मनुष्य व्याघ्र गज सिंहके सिखलाने को समर्थ नहींहै उसी तरह स्वेच्छाचारी राजा के सिखलाने को मन्त्री लोग समर्थ नहीं होते ९५ अधिकारको प्राप्तमंत्रीलोग हितमें निस्सार हैं क्योंकिहजार मन रुईसे हाथी नहीं बांधाजाता ९६

कीचड़में फंसेहुये हाथी के निकालनेको बलीदिग्गज समर्थहै उसी तरह नीति भ्रष्ट राजाको दूसरा राजा निकाल सक्ताहै ९७ बलवान् राजाके छोटे सेवक में जैसे भीतेज होताहै उसतरह छोटे राजा और उसके मन्त्री में भी तेज नहीं होता ९८ बहुतों का एक मत होना राजाको बलवान् करताहै जैसे बहुत सूतोंसे की हुईरस्सी सिंहआदिके आकर्षणके योग्य होतीहै ९९ भ्रष्टराज्य शत्रुके आधीनरहै बहुत सेना न रक्खै और अपने पुत्र आदिकीअभिवृद्धिके लिये खजानेको सदा बढ़ाता रहै १२०० मेघके जलसेजो पुष्टि होतीहै वह क्यानदी आदिके जलसेहोतीहै जैसी प्रजा वृद्धि राजा के धनसे होतीहै वैसी धनीके धनसे नहीं होतीहै १ राजा बड़ाबली भी हो तो प्रथम पराये राज्यमें कोम-लता दिखावै और प्रजा के कार्य्यका साधकहो २ जड़को अच्छीतरह बांधे तो सम्पूर्ण राज्य लेसक्ता है अथवा उसके द्वेषी हिस्सेदार सेनापतिकाजो अंशहो देके ३ उस राज्यके सम्पूर्ण द्वेषी आदिको वश कर के बलसे मूलका उन्मूलन करै जिस तरह संक्षीण मूलके शाखा सूख जातेहैं उसीतरह वे सूख जातेहैं ४ शत्रुके सेनापति आदि स्वामी बिना कोई शीघ्र कोई कुछ काल में सूख जाते हैं और राज्य रूप वृक्ष का राजा मूल और मंत्री स्कन्ध होतेहैं ५ सेनापति शाखा सेनापल्लवफूल प्रजा फलभूभाग भूमिबीज कल्पितहै ६ अन्य राजाके विश्वस्तका विश्वास न करै एकान्त में

और उसके गृह में थोड़े मनुष्योंसे न जाय ७ अपनेरूप
और वेष के सदृश मनुष्यों को सदाअपने निकटराखे
कोई विशेष चिह्न से गुप्त समयपर अन्यादृश हो ८
वेश्या नट गायक करके शत्रुको मोहित करै सुवस्त्र
आभरण कुटुम्बसहित उसके निकट न जाय ९ विशेष
चिह्नसे युत भीत युद्धमें कभी न जाय और भृत्य स्त्री
शत्रु पुत्रसे सराभर सावधान न हो १० राजा को चा-
हिये कि अपने जीतेहुये पुत्रमें सम्पूर्ण स्वामिता न दे
क्योंकि स्वभावसद्गुण महानर्थ औरमदकी देनेवाली
है ११ और विष्णु आदिनेभी अपने पुत्रमें अपना अ-
धिकार नहीं दिया अपने आयुर्बल के थोड़े बाकी
रहनेसे अच्छे पुत्रमें अपना अधिकार दे १२ राजावि-
ना राज्यका पोषण करनेको क्षण मात्र भी युवराज
आदि नहीं कर सकते और स्वास्थ्य लोभ गौरव से
होताहै १३ राज पुत्र उत्तमपदको पाके सुनीतिसे प्रजा
पोषण करताहुआ पहिले मन्त्रियोंमें पिताके तुल्य
गौरव करै १४ और राजपुत्रकी युक्त आज्ञाको भी वे
लोग पूर्वसे अधिक मानें और अन्यथा कहैं तो काल
पाके निषेध करें १५ और राजाकी अनीतिसे धनको
आशा करके प्रजालोग नहीं वर्ताव करते और प्रजा
लोग अनीतिसे वर्ताव करतेहैं तो थोडेदिनमें पातकी
गतिको पाते हैं १६ राज कुलके माननेवालों केसाथ
द्वेषकरै और नये आदमियों को माने वह राजा शत्रु
के आधीन होता और धन प्राणका वियोग होता है

१७ और नवीन गुणी और सुनीति होतो पूर्वमंत्रियों की तरह उसका पालन करै और उसकी परीक्षाकर केपुराने नौकरोंके साथ युक्त करै १८ अति कोमलता स्तुति नति सेवा दान प्रिय बचनसे धूर्त्त मायिक लोग जब तक कार्य्यसिद्ध नहीं होता तबतक सेवा करतेहैं और साधु सदा सेवा करतेहैं १९ सत्य बचन बोलने वाले प्रत्यक्ष परोक्षमें राजाको एक तरह कहतेहैं धूर्त्त और सत्य बोलनेवालोंमें आकाश पृथ्वीका ऐसा फर्क है २० धूर्त्तजार चोर बहु श्रुत ये माया के पिताहैं और प्रतिष्ठित जैसा धूर्त्तहै वैसा बहु श्रुत नहीं २१ लोकमें पराये के धन लेनेमें जार चोरनिंदित ये दोनों अप्रत्यक्ष हरतेहैं और धूर्त्त प्रत्यक्ष परधन हर्त्ताहै २२ धूर्त्त लोग अन्त में हितको अहितवत और अहित कोसदा हितवत अज्ञकोदेखाके स्वकार्य्य साधन करतेहैं २३ धूर्त्त लोग भलीभांति बिश्वासकराके घातकरतेहैं जिसका सदा प्रियकरतेहैं उसकाअप्रिय चाहतेहैं २४ व्याध मृग बध करनेको सुस्वर गीतगाता है माया बिना बहुतद्रव्य कभी नहीं मिलता २५ बिना पराये का धन हरे कोई महाधनी नहीं होता और वह धन बिनामाया किये यथेप्सित नहीं मिलता २६ राजाकोपाप न हो तो चोरोंको भी पाप न हो सम्पूर्ण पाप धर्म्म मूलहै आश्रय भेदसे रहताहै २७ धर्म्मकी बहुत लोग अस्तुति करते हैं इससे अधर्म्म निन्दितहै धर्म्मका तत्व गहनहै कोई जान नहीं सक्ता २८ अति

क्लान्ति तप सत्ययोगसे दरिद्रता होतीहै जहां अर्त्थ धर्म्म नहीं होते वह काम निरर्त्थक है २९ अर्त्थका पुरुष दासहै अर्त्थ किसीकादास नहीं इस अर्त्थके लियेसदा यत्न करै ३० मनुष्य को अलसे अर्त्थ धर्म्म काममोक्ष होतेहैं शस्त्रास्त्र बिना शूरता और स्त्री बिनागार्हस्थ्य३१ एक मत बिनायुद्ध जानकार बिना चतुरता ये सम्पूर्ण दुःखके लिये और सुसहाय बिना बिपत्तिहोतीहै ३२ बिपत्तिमें मित्रके समान कोई सहाय नहींहै छोटेआ-दमीका अपमान भी बड़े बैरके लिये होताहै ३३ दान मान सत्यशौर्य्य मृदुता सुहृतकर इन सब छोटे बड़ोंको बिपत्तिमें एकांत बुलाके ३४ भाई बिरादरी सेवक ज्ञाति सभावालों को अलग २ यथा योग्य आदरकर अपना अभीष्ट राजा मांगै ३५ जिससे विपत्ति के पार को उतर जाय उसको तुम सब युक्ति पूर्व्वककहो आप लोग हमारे मित्रहैं आप हमारे भृत्य नहीं ३६ इससे तुम्हारे सदृश हमारे सहायनहींहै मासिकका तृतीयां-श अथवा भोजनार्त्थ आधा ३७ बाकी बिपत्तिसे छु-ड़ीपाकेदेगे और उपकार मानेंगे मजूरी बिनास्वामि-कार्य्यको आठ वर्ष भृत्यकरै ३८ और धनी सोलह वर्षतक कुछ न ले इतर मनुष्य धनको सदृश ले निर्द्धनअ-न्न वस्त्र राजासेले और अधिक न ले ३९ जिससे भली भांतिबहुत सुख कियाहो उसके दुःखसे दुखी नहीहोता उसकी निन्दाहोती और कृतघ्न होता स्वामीहो अथ-वा भृत्य ४० एक दफे भी जिसके यहां भोजन किया

हो उसके लिये प्राण देना चाहिये वही सेवक श्रेष्ठ और धन्यहै जो विपत्तिमें स्वामीको न छोड़ै ४१ और वह स्वामीहै जो भृत्यके अर्थ जीवितदे श्रीरामचन्द्र जीकेसदृश नीतिमान् राजाकोई पृथ्वीमें नहींहुआ४२ जिसने नीति पूर्वक बानरों के साथ सु भृत्यता स्वीकारकी चोरोंकी एक चित्तता राज्यके नाशके अर्थहै ४३ और राजा और भृत्यकी कूटनीति क्या शत्रुनाशके लिये न होगी क्याश्रीकृष्ण ऐसा राजा कूटनीति अर्थात् छली नहीं हुये किन्तु हुयेहैं ४४ छलसे श्रीकृष्णजीने सुभद्रानाम अपनी बहिन अर्जुन से ग्रहण कराई नीतिमानों की वह नीतिहैजो अपने कल्याण के लियेहो ४५ जो अपनी रक्षाके लिये युक्ति नहीं बिचारता वह पशुसे भी जड़है जारकी रक्षाके लिये स्त्रीलोग छल करती हैं ४६ बहुधा युक्ति छलसे होती है और अन्य जोड़ने से जिससे कि छलचारी है इससे छलका आश्रय करै ४७ अन्यथा करनेसे बड़ोंके भी शीलका नाशहोताहै और बुद्धिमानोंकी पंक्ति है एक बुद्धिमान् नहीं होता ४८ देशकाल पुरुषमें अनेकप्रकारकी युक्ति कल्पितहै प्राक्तन उनको बुद्धिरूढ़ देखके युक्ति करै ४९ मन्त्र औषधी पृथक् वेषकाल वाक् अर्थ संग्रयसे उस विद्यामें चतुर मनुष्य छलको पैदा करते हैं ५० और अधिकारी लोकके मनुष्य प्रत्यक्ष वस्त्र या कपड़ा बेचाहो या दियाहो अथवा खरीदाहो उसके लिये अपना चिह्न करै ५१ और चोरी और

कपटके दूर होनेके अर्थ, राजा से कहै और जड़अंध बालकके द्रव्य को राजा सदा बढ़ावै ५२ जिस तरह स्वीया सामान्या परकीया तीन प्रकारकी स्त्री होती हैं उसी तरह उत्तम मध्यम अधम तीनतरह के भृत्यहो तेहैं ५३ जो सेवक केवल स्वामिहीसे प्रीतिरक्खै, वह उत्तमहै और जो स्वामी अधिक धनदे उसकी सेवाक- रै वह मध्यम सेवकहै ५४ स्वामीके बहुधन देनेसे अन्य की सेवा करै वह अधम भृत्यहै जो अपकार करतेहु ये उपकार करै वहसेवक उत्तमहै उससे अन्यथानीच है ५५ मध्यमसेवक साम्यकी इच्छा करताहै अपरस्वा- र्थ तत्पर होताहै और जो विना कहे सबको भली भाँति जानले वहभृत्य उत्तमहै ५६ बालत्व वा तरुणता प्रारम्भ किये हुये कार्य्यको समाप्ति देने वालीहै बहु- धा बुद्धिमानकी वृद्धता कभी नहीं होती ५७ उसका आरम्भ करै जोसुख पूर्वक समाप्त होजाय बहुत का- र्योंका एक साथ आरम्भ सुखप्रद नहीं होता ५८ अ- न्य विना आरम्भ किये हुयेकी समाप्ति करै विना दूसरेके मिले प्रहिले कार्य्य सम्पर्ण नहींहोता ५९ बा- दशाह लोग ऐसा काम करतेहैं जो सुख पूर्वक समाप्त हो ईर्षा लोभ मद प्रीति क्रोध भीति साहस ६० ये सात आरम्भछिद्र के हेतुहैं यह बुध लोगोंने कहाहै छिद्र के सदृश कार्य्य होताहै उसी तरह आचरण करै देश कालके बीतने और आपत्तिमें जो बोलनेके योग्य न हो उससेभी मांगै दशगांव वाला और शता-

नौके सेवक सहित है२ ये दोनों घोड़े पर चढ़के इधर उधर फिरैं हजार और शतग्रामका पालन करनेवाला एक अश्वरथ घोड़ेपर चढ़के विचरै६३ और हजार ग्राम-पति नर दो अश्वके यानपर चढ़केघूमै और दशहजार ग्राम पति बीससेवक और हाथीपर चढ़के चलै ६४ दशहजार ग्रामपति सर्वयान और चार घोड़के रथपै चढ़के चलै और पचास हजार ग्रामपति बहुत सेवक सहित विचरै ६५ जैसे बड़ा अधिकारहो उसी तरह विस्तार करै और धनी और गुणोंमें अधिकता की कल्पना करैं६६ जिससे श्रेष्ठमान हीन न हो और न्यून मानाधिक न हो उसी तरह राजा अपने राज्य में करै ६७ हीन मध्यम उत्तमके लिये ग्राममें भूमिदे और गृहस्थोंके घर बनानेके लिये शहरमें भूमिदे ६८ बत्ती-स हाथ लम्बी और सोलहहाथ चौड़ी निकष्ट भूमि है उत्तमादि गुणा मध्या और यथायोग्य साक्षमा-ना ६९ परिवारके रहनेके योग्यहो और न अधिक-हो न कम और अधिकारीलोग ग्रामसेबाहर बसैं ७० राजा के कार्यबिना सेनावाला ग्राममें न जाय और कहीं ग्रामके रहनेवालों को दुःख न दें ७१ औरगांव के लोगफौजवालोंसे लेन देन न करैं और सेनावालों को शूरता और धर्मकी बढ़ानेवाली बातें सुनावैं ७२ सुन्दर बाजा नाच गीत ये शूरताकी वृद्धि कारकहैं तिसपर भी युद्धकर्म विना अन्यत्र न योजितकरै ७३ सत्याचार धनीको व्योहार रत होतो राजा उनकी

और अन्य खेती करने वालोंकी रक्षा करै ७४ और
जोसेनाके धनीहों उनको यथा योग्य मज़दूरीदे तीस-
वें अंश पर व्याज खर्चसे अधिक दे ७५ और उनके
धनको अपने खज़ानेकी तरह यत्नसे रक्षा करै और
मिथ्याचार धनीका सम्पूर्ण धन राजा हरले ७६ जो
धनी चौगुनी नफा लेचुकाहो तो अधमर्णसे राजा ध-
नीको धन न दिलावै ७७ ॥

इतिशुक्रनीतिस्समाप्ता शुभम् ॥

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊ में
छपी जौलाई सन् १८८८ ई०

इस यंत्रालय में जितने प्रकार की नीति, स्मृति और उपनिषद की
पुस्तकें छपी हैं उनकी सूची नीचे लिखी है ॥

नीति ॥

राजनीति, सफ़े १६२ जुज़ १० वर्क़ १ क़ीमत ।=)
लल्लूजी लाल कविरचित जिसमें हितोपदेश का पूरा उल्थाहै पैमा-
ना १०+६½ छपीहुई सन् १८८१ ई० ॥

चाणाक्यनीति दर्पण, सफ़े ७६ जुज़ ४ वर्क़ ६ क़ीमत=)
जिसमें मूल श्लोक सार्थलिखकर हरिशंकरजी की भाषा टीका भी
संयुक्त कीगई है पैमाना १०+६½ छपीहुई सन् १८८२ ई० ॥

भार्याहित, सफ़े ३३० जुज़ २० वर्क़ ५ क़ीमत ॥) बिला०
वजूहात पुख़्ता
अलीगढ़ निवासि बाबू तोतारामजी रचित जिसमें स्त्रियों और पुरु-
षोंके लिये डाक्टरोंके मिलेहुये उत्तम उपदेश हैं पैमाना ११+६ छपी
हुई सन् १८८३ ई० ॥

स्मृति ॥

मिताक्षरा सटीक तीनोंखण्ड क़ीमत १०)
आगराके पण्डित दुर्गाप्रसादजीने तर्जुमा कियाहै

मनुस्मृति, सफ़े ४६६ जुज़ ३१ क़ीमत १॥) पुख़्ता
सनाधि अर्थात् बीचमें संस्कृत मूल और नीचे उर्दू हरश्लोकका लाला
स्वामीदयाल का तर्जुमाहै पैमाना १०+६½ छपीहुई सन् १८८२ ई० ॥

याज्ञवल्क्यस्मृति, सफ़े १७४ जुज़ १० वर्क़ ७ क़ीमत ॥=
लाहौर कालिजके संस्कृत प्रोफ़ेसर पण्डित गुरुप्रसादजी का भाषा
उल्था सहित पैमाना १०+६½ छपाहुआ सन् १८८० ई० ॥

याज्ञवल्क्यस्मृति, सफ़े २०४ जुज़ १२ वर्क़ ६ क़ीमत ॥)
बिलावजूहात पुख़्ता

लालास्वामीदयाल साहबकी हर्दू तर्जुमे समेत कागज़ सफ़ेद चिकना पैमाना १०+८ छपीहुई सन् १८८० ई० ॥

उपनिषद् ॥

ईशावास्यबाजसनेयीसंहितोपनिषद्सफ़े ६४जुज़४की०।

पंचोली यमुनाशंकरकी भाषा टीका सहित जिसमें मंत्रोंके अर्थ समझानेको लिये पदोंके अन्वय कियेगये और फिर पदार्थकीरीति पर समझेकर भावार्थ स्पष्टकियागया पैमाना १०+८½ छपीहुई सन् १८८० ई० ॥

कठवल्ली उपनिषद् सफ़े १६४जुज़१२वर्क़१कीमत ॥)

पंचोली यमुनाशंकर की भाषा टीका सहित इसमें भी ऊपर लिखे हुये अनुसार भावार्थ स्पष्ट कियागया है और समझानेकेलिये सुगमताके लिये गुरु शिष्य सम्वाद पूर्वक पूर्णज्ञान लखाया है छपीहुई सन् १८८३ ई० पैमाना १०+८½ ॥

अथर्ववेदीयप्रश्नोपनिषद् सफ़े१८४जुज़११वर्क़४कीमत ॥)

पंचोली यमुनाशंकर की भाषा टीका सहित इसमें भी सब ऊपरके लिखेहुये अलंकारहैं शिष्यके पूछेहुये अच्छे प्रश्नोंका उत्तर गुरुने बताकर ब्रह्मरूप लखायाहै छपीहुई सन् १८८३ ई० पैमाना १०+८½ ॥

मुण्डकनाम अथर्ववेदीयमंत्रोपनिषद् सफ़े १४२ जुज़८ वर्क़ ७ कीमत ।=)

पंचोली यमुनाशंकरकी भाषा टीकासहित यह उपनिषद् मानो सब उपनिषदोंका राजाहै और सर्वालंकार संयुक्त है छपीहुई सन् १८८४ ई० पैमाना १०×८½ ॥

केनोपनिषद् सफ़े १०२ जुज़ ६ वर्क़ ३ कीमत ॥)

सामवेदीय तलवकार शाखीय भाषा टीका सरल अर्थकी हिन्दी भाषमें है जिसको पण्डित यमुनाशंकर ने रायजादाल्हो मिहरचन्द्र की सहायता से अनुवादकिया इसमें भी पदोंके अन्वय पूर्वक भावार्थ स्पष्ट किया है और ऐसा टीकाकिया है कि अल्पज्ञ मनुष्योंको भी समझ में आजावे छपीहुई सन् १८८४ ई० पैमाना १०+८½